हरदोई, लखनऊ, शाहजहांपुर, फर्रुखाबाद, रायबरेली, फतेहपुर, हमीरपुर, लखीमपुर, कानपुर, बस्तर (छत्तीसगढ़) से प्रसारित
www.dabangindianews.in

हरदोई जनपद से प्रकाशित हिंदी दैनिक

दबंग इंडिया

RNI No - UPHIN/2023/89254

अखबार नहीं...आपका भरोसा !

हरदोई, बुधवार
20 अगस्त 2025
वर्ष : 01 अंक : 306
मूल्य : 3/-
पृष्ठ : 08

मुख्य अपडेट
पेज 2 टप्पेबाजी की घटना में संलिप्त शातिर पति-पत्नी चढ़े पुलिस के हत्थे
पेज 4 राठ इलाके में फल-फूल रहे एक दर्जन से अधिक मानकविहीन
पेज 6 पीएमपीएसई के अन्तर्गत उच्च जोखिम समूह गणना हेतु प्रथम कैब बैठक

संक्षिप्त खबरें

ट्रेन से लापता युवती अर्चना 12 दिन बाद मिली

ग्वालियर। इंदौर से कटनी के बीच नर्मदा एक्सप्रेस ट्रेन के एसी कोच से लापता छात्रा अर्चना तिवारी (29) 12 दिन बाद यूपी में मिली है। भोपाल जीआरपी एसपी राहुल कुमार लोढ़ा ने बताया कि अर्चना तिवारी को नेपाल बॉर्डर के पास यूपी के लखीमपुर खीरी से बरामद कर लिया है। उसे लेकर टीम रवाना हो गई है। 12 दिन से उसे मिड घाट के जंगल समेत अन्य जगहों पर तलाश कर रहे थे। मंगलवार को उसे बरामद करने में सफलता मिली है। इससे पहले अर्चना ने परिजन से संपर्क किया था। पुलिस को पता लगा कि मंगलवार सुबह छात्रा ने अपनी मां को कॉल किया।

पानी नहीं देने पर इंजीनियर ने की पत्नी की हत्या

सिंगरौली। सिंगरौली में एलएंडटी कंपनी के इंजीनियर ने पत्नी की पीट-पीटकर हत्या कर दी। इसके बाद कंबल में शव लपेटकर कार से प्रयागराज ले गया। सबूत मिटाने में मां ने भी उसका साथ दिया। वहां दोनों ने उसका अंतिम संस्कार कर दिया। घटना 15 अगस्त की है। पुलिस ने आरोपी पति निखिल दुबे और उसकी मां दुरेदश्वरी देवी को प्रयागराज के शास्त्री नगर से गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ के दौरान निखिल ने बताया कि पानी मांगने पर पत्नी आभ्या से कहासुनी हुई थी। गुस्से में पत्नी के सिर को किचन के प्लेटफॉर्म पर पटक कर उसकी हत्या कर दी। आरोपी इंजीनियर की मां ने शव को ठिकाने लगाने और सबूत मिटाने में उसकी मदद की।

केरल हाईकोर्ट में बदबू की वजह से कार्यवाही स्थगित

तिरुवनंतपुरम। कोच्चि में मंगलवार सुबह केरल हाईकोर्ट में कार्यवाही बदबू की वजह से रोकनी पड़ी। ये बदबू अदालत की फॉल्स सीलिंग में घुसे सिवेट (जंगली जानवर) के पेशाब करने से आ रही थी। अदालत सूत्रों के मुताबिक, बदबू इतनी तेज थी कि मुख्य न्यायाधीश नितिन जमदार और जस्टिस बसंत बालाजी की डिवीजन बेंच ने सभी मामलों को स्थगित कर दिया। अदालत की कार्यवाही सिर्फ 20 मिनट चली और फिर कमरे को बंद कर दिया गया।

रिटायर्ड जस्टिस बी सुदर्शन रेड्डी विपक्ष के उपराष्ट्रपति कैंडिडेट

नई दिल्ली। इंडिया ने सुप्रीम कोर्ट से रिटायर्ड जस्टिस बी सुदर्शन रेड्डी को मंगलवार को उपराष्ट्रपति चुनाव के लिए अपना उम्मीदवार बनाया है। उनका मुकाबला एनडीए के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन से होगा। 79 साल के रेड्डी गुवाहाटी हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस और गोवा के पहले लोकायुक्त रह चुके हैं। वे आंध्र प्रदेश के रहने वाले हैं। 2007 में सुप्रीम कोर्ट का जज नियुक्त किया गया था।

दो माह तैयार हो जाएगा यूपी का पहला एसआईएचएम

योगी सरकार गोरखपुर में बनवा रही स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट

गोरखपुर। प्रदेश का पहला स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट (एसआईएचएम) दो माह में तैयार हो जाएगा। योगी सरकार द्वारा गोरखपुर में 48.39 करोड़ रुपये की लागत से बनवाए जा रहे एसआईएचएम के पहले फेज का 95 प्रतिशत निर्माण कार्य पूरा हो गया है। पर्यटन विभाग द्वारा अगले माह के अंत तक शत प्रतिशत कार्य पूर्ण कराया जाना लक्षित किया गया है।

बीते कुछ सालों में गोरखपुर का टूरिज्म और हॉस्पिटैलिटी सेक्टर तेजी से आगे बढ़ा है। यहां कई बड़े ब्रांड के होटल्स, रेस्टोरेंट खुल चुके हैं और कई खुलने की प्रक्रिया में हैं। हॉस्पिटैलिटी सेक्टर में कुशल पेशेवरों की मांग को देखते हुए मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ गोरखपुर में प्रदेश का पहला स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट (एसआईएचएम) बनवा रहे हैं।

गोरखपुर औद्योगिक विकास प्राधिकरण (गीडा) के कार्यालय के सामने बन रहे एसआईएचएम का निर्माण सितंबर माह तक पूरा हो जाएगा और अगले शैक्षिक सत्र से यहां होटल एंड टूरिज्म मैनजमेंट से जुड़े डिप्लोमा और डिग्री के पाठ्यक्रम संचालित होने लगेंगे। स्टेट इंस्टिट्यूट ऑफ होटल मैनेजमेंट, पर्यटन विभाग का प्रोजेक्ट है। इसका निर्माण कार्यदायी संस्था के रूप में सी एंड डीएस यूनिट-14 द्वारा कराया जा रहा है। इस परियोजना पर निर्माण कार्य 26 सितंबर 2023 को प्रारंभ हुआ था। वर्तमान समय में 38.42 करोड़ रुपये से अधिक की धनराशि खर्च कर 95 प्रतिशत कार्य पूरे कर लिए गए हैं और इसी साल 25 सितंबर तक कार्य पूर्ण किया जाना है। निर्माण के पहले चरण में दो ब्लॉकों में प्रशासनिक कक्ष, क्लास रूम, कॉमन हाल, किचन के अलावा अंडरग्राउंड पार्किंग, इलेक्ट्रिफिकेशन, फायर सेफ्टी, पाइपलाइन आदि के कार्य पूर्ण कराए जा रहे हैं।

2024 बैच के आईएफएस अधिकारी प्रशिक्षुओं ने प्रधानमंत्री से मुलाकात की

प्रधानमंत्री ने प्रौद्योगिकी संचालित विश्व में संचार की भूमिका पर जोर दिया

नई दिल्ली। भारतीय विदेश सेवा (आईएफएस) के 2024 बैच के प्रशिक्षु अधिकारियों ने आज प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी से उनके आवास, 7, लोक कल्याण मार्ग पर मुलाकात की। 2024 बैच में विभिन्न राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों से 33 प्रशिक्षु आईएफएस अधिकारी हैं।

प्रधानमंत्री ने वर्तमान बहुध्रुवीय विश्व और विश्वबंधु के रूप में भारत की अद्वितीय भूमिका पर चर्चा की, जो सभी के साथ मैत्री सुनिश्चित करता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए बताया कि कैसे भारत ज़रूरतमंद देशों के लिए सबसे पहले प्रतिक्रिया देने वाले देश के रूप में उभरा है। उन्होंने वैश्विक दक्षिण की मदद के लिए भारत द्वारा किए गए क्षमता निर्माण प्रयासों और अन्य प्रयासों को भी रेखांकित किया।

प्रधानमंत्री ने विदेश नीति के उभरते क्षेत्र और वैश्विक मंच पर इसके महत्व पर चर्चा की। उन्होंने वैश्विक मंच पर विश्वबंधु के रूप में देश के विकास में राजनयिकों द्वारा निभाई जा रही महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बात की। उन्होंने भविष्य के राजनयिकों के रूप में अधिकारी प्रशिक्षुओं की भूमिका के महत्व को रेखांकित किया, क्योंकि देश 2047 तक विकसित होने के लक्ष्य की ओर आगे बढ़ रहा है।

प्रधानमंत्री ने प्रशिक्षु अधिकारियों के साथ विस्तृत बातचीत की और उनसे सरकारी सेवा में आने के बाद अब तक के उनके अनुभवों के बारे में पूछा।

प्रशिक्षु अधिकारियों ने अपने प्रशिक्षण और शोध कार्यों से जुड़े अपने अनुभव साझा किए, जिनमें समुद्री कूटनीति, एआई और सेमीकंडक्टर, आयुर्वेद, सांस्कृतिक जुड़ाव, खाद्य और सॉफ्ट पावर जैसे विषय शामिल थे। प्रधानमंत्री ने कहा कि हमें अपने भारत को जानो प्रश्नोत्तरी और वाद-विवाद के माध्यम से विभिन्न देशों के युवाओं में भारत के बारे में जिज्ञासा पैदा करनी चाहिए।

मुंबई में भारी बारिश से तबाही, जगह-जगह पानी

ज्यादा भीड़ से मोनोरेल ट्रैक पर फंसी, विंडो तोड़कर 500 यात्री निकाले

नई दिल्ली/भोपाल/लखनऊ। मुंबई समेत महाराष्ट्र के कई जिलों में दो दिन से लगातार तेज बारिश हो रही है। मुंबई के कई इलाकों में मंगलवार को बाढ़ जैसे हालात रहे। जगह-जगह पानी भर गया। रेल, बस, हवाई सेवाएं बुरी तरह प्रभावित हुईं।

मोनोरेल सर्विस पर भी असर पड़ा। मैसूर कॉलोनी रेलवे स्टेशन के पास शाम 6 बजे एक मोनोरेल एलिवेटेड ट्रैक पर अटक गई। अंदर मौजूद करीब 500 यात्रियों को विंडो तोड़कर क्रेन की मदद से निकाला गया। एमएमआरडीए ने बताया कि भीड़ बढ़ने की वजह से ऐसा हुआ।

इसके अलावा सेंट्रल रेलवे ने 14 ट्रेनें (7 जोड़ी) कैंसिल कर दीं। 250 से ज्यादा फ्लाइट देरी से उड़ीं। लोकल

ट्रेन सर्विस भी प्रभावित है। महाराष्ट्र में बीते दो दिन में बारिश से जुड़ी दुर्घटनाओं में 14 लोगों की मौत हो गई।

इनमें 8 नांदेड़ से थे। अगले 48 घंटे मुंबई, ठाणे, रायगढ़, रत्नागिरी और सिंधुदुर्ग जिले में रेड अलर्ट है।

मुख्यमंत्री कार्यालय ने कहा- एनडीआरएफ और एसडीआरएफ समेत डिजास्टर मैनेजमेंट से जुड़ी सभी एजेंसियां हाई अलर्ट पर हैं। जान-माल और फसलों के नुकसान के लिए तत्काल मदद के आदेश हैं। नागरिकों को हर तीन घंटे में मौसम का अपडेट दिया जा रहा है।

अधिकारियों ने बताया 442 यात्रियों का रेस्क्यू किया गया। इनमें से एक को अस्पताल में भर्ती किया गया है। इसके अलावा लगभग 200 यात्रियों को वडाला स्टेशन वापस लाया गया है।

डिप्टी सीएम शिंदे बोले- तय करेंगे ऐसा दोबारा न हो

डिप्टी सीएम एकनाथ शिंदे ने कहा कि हार्बर लाइन बंद होने से लोग मोनोरेल में यात्रा करने लगे।

इससे ट्रेन में भीड़ हो गई और बिजली गुल हो गई। बिजली गुल होने के कारण इमरजेंसी ब्रेक लगाए गए।यात्री जल्द ही सुरक्षित अपने घर पहुँच जाएंगे। हम सुनिश्चित करेंगे कि यह घटना दोबारा न हो।

सट्टेबाजी वाले ऑनलाइन गेम्स पर प्रतिबंध की तैयारी; आज संसद में पेश होगा बिल

नई दिल्ली। ऑनलाइन गेमिंग की वजह से किसी बच्चे ने आत्महत्या कर ली तो कई लोग कर्ज में डूब गए और उनकी जिंदगी तबाह हो गई। ऐसी खबरें आए दिन पढ़ने को और सुनने को मिलती है। इसे देखते हुए ही सरकार अब बेटिंग या बाजी या जुआ लगाने वाले सभी ऑनलाइन गेमिंग पर रोक लगाने जा रही है। यहां तक कि जिस किसी ऑनलाइन गेम में पैसा जुड़ा है चाहे वह गेम स्किल का हो या फिर चांस का, उन सभी को प्रतिबंधित किया जा सकता है। इलेक्ट्रॉनिक्स व आईटी मंत्रालय की तरफ से ऑनलाइन गेमिंग बिल लाया जा रहा है जिसे बुधवार को लोक सभा में पेश किया जा सकता है। मंगलवार को कैबिनेट कमेटी ऑनलाइन गेमिंग

बिल को अपनी मंजूरी दे दी। ऑनलाइन गेमिंग में बेटिंग को अपराध की श्रेणी में रखा जाएगा और इसके तहत सात साल की कैद और 10 लाख तक के जुर्माने का प्रविधान किया जा रहा है।

1400 से अधिक एप प्रतिबंधित

बिल पर अमल हुआ तो सिर्फ वैसे ही ऑनलाइन गेमिंग एप बचेंगे, जिन्हें खेलने के लिए कोई शुल्क या पैसा नहीं देना पड़ता है।

सरकार कई सालों से बेटिंग एप पर रोक लगाने का प्रयास कर रही है और पिछले चार-पांच सालों में 1400 से अधिक एप को प्रतिबंधित किया गया है। लेकिन इस दिशा में कोई कानून नहीं होने से ऑनलाइन गेमिंग एप के खिलाफ ठोस कार्रवाई नहीं हो पा रही थी।

दिल्ली के इलेक्ट्रॉनिक्स शोरूम में आग, 4 कर्मियों की मौत

नई दिल्ली। दिल्ली के राजा गार्डन इलाके में सोमवार दोपहर चार मंजिला एक इलेक्ट्रॉनिक्स शोरूम की दूसरी मंजिल पर भीषण आग लग गई।

इस हादसे में शोरूम के 4 कर्मचारियों की मौत हो गई, जिसमें 3 युवतियां हैं। एक अन्य कर्मचारी गंभीर रूप से घायल हो गया, जिसकी हालत नाजुक बनी हुई है।

पुलिस के मुताबिक, दोपहर 3 बजे महाजन इलेक्ट्रॉनिक्स में आग लगने की सूचना मिली। मोती नगर थाना

> **इनमें 3 युवतियां, एक घायल; चार मंजिला बिल्डिंग के तीसरे फ्लोर पर लंच कर रहे थे**

प्रभारी, दमकल विभाग और अन्य कर्मी तुरंत मौके पर पहुंचे। दमकल की 5 गाड़ियां आग पर काबू पाने की कोशिश में जुट गईं।

आग और घने धुएं के कारण तीसरी मंजिल पर स्थित दफ्तर में मौजूद लोग बाहर नहीं निकल सके। एक कर्मचारी ने बताया कि घटना के समय ये पांचों कर्मचारी लंच के लिए तीसरी मंजिल पर गए थे। उस समय शोरूम में करीब 30 कर्मचारी और ग्राहक मौजूद थे।

दुकान के एक कर्मचारी सुमित ने न्यूज एजेंसी को बताया कि लंच का समय था। हम बातें कर रहे थे, हंस रहे थे। अचानक, हमें चटकने की आवाज सुनाई दी और फिर लाइट चली गई। शॉर्ट सर्किट हुआ था। कमरे में धुआं भरने लगा। आग सबसे पहले चार मंजिला इमारत की पहली मंजिल पर लगी।

'वोटर अधिकार यात्रा' : वोट गया तो समझो राशन-जमीन गई

विरोध करने वाले भाजपा नेताओं को राहुल गांधी ने दिया फ्लाइंग किस

गयाजी। राहुल गांधी की तीसरे दिन की वोटर अधिकार यात्रा शेखपुरा के बरबीघा में खत्म हुई। यहां श्री कृष्ण सिंह चौक पर राहुल गांधी ने लोगों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि बिहार के युवा वोट चोरी नहीं होने देंगे। वोट हम सब का अधिकार है। हिंदुस्तान में गरीबों के पास आज सिर्फ वोट बचा हुआ है।

अगर ये चला गया तो सब चला गया जाएगा। महाराष्ट्र, हरियाणा, मध्य प्रदेश के चुनाव में बीजेपी ने वोट चोरी की है। चुनाव आयोग वोट चोरी करवा रहा है।

तेजस्वी यादव ने भी लोगों को संबोधित करते हुए कहा कि 20 साल

हम लोगों ने बहुत सहा है। अब नहीं। शिक्षा-स्वास्थ्य सब चौपट है। अब इन लोगों को हटाने का वक्त का गया है। श्री कृष्ण सिंह चौक से राहुल गांधी दिल्ली और तेजस्वी यादव पटना के लिए रवाना हो गए।

नवादा में राहुल की गाड़ी के नीचे आया जवान

इससे पहले बिहार के नवादा में वोटर अधिकार यात्रा के दौरान राहुल गांधी की सुरक्षा में तैनात एक पुलिसकर्मी गाड़ी के नीचे आ गया। अन्य सुरक्षाकर्मियों ने खींचकर पुलिसकर्मी को बाहर निकाला। राहुल गांधी ने भी उनका हालचाल पूछा।

यहां लोगों को संबोधित करते हुए उन्होंने कहा, चुनाव आयोग और बीजेपी के बीच पार्टनरशिप है। ये मिलकर वोट चोरी कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी, अमित शाह और चुनाव आयुक्त मिलकर आपसे वोट छीन रहे हैं।

तेजस्वी ने कहा, आप लोग आने वाले लोकसभा चुनाव में महागठबंधन की सरकार बनाइए और राहुल गांधी को देश का अगला प्रधानमंत्री।

मनीषा के संस्कार से इनकार, आज से पक्का मोर्चा

सीबीआईजांच, एम्स से पोस्टमॉर्टम की मांग; 2 जिलों में नेट बंद, दंगा रोकू वाहन, आरएएफ तैनात

भिवानी। हरियाणा के भिवानी में ग्रामीणों ने मंगलवार (19 अगस्त) को लेडी टीचर मनीषा का अंतिम संस्कार नहीं होने दिया। ग्रामीणों को जैसे ही मनीषा के पिता संजय पर दबाव डालने का पता चला तो उन्होंने गांव में पंचायत की। जिसमें उन्होंने गांव में मनीषा का संस्कार न होने देने का ऐलान कर दिया। इसके बाद पूरे गांव के रास्ते ईंट-पत्थर और पेड़ गिराकर बंद कर दिए। माहौल देखते हुए सरकार ने मंगलवार सुबह 11 बजे से लेकर 21 अगस्त सुबह 11 बजे तक भिवानी और चरखीदादरी में इंटरनेट बंद कर दिया है।

वहीं ग्रामीणों ने पुलिस की सुसाइड की थ्योरी को झूठा करार देते हुए आगे के संघर्ष के लिए गांव कमेटी बना दी है। जिसने प्रशासन को मांग पत्र सौंपकर मनीषा का एम्स में तीसरी बार पोस्टमॉर्टम कराने और केस की जांच भी सीबीआई को देने की मांग की है। अगर इस पर सहमति बनी तो प्रशासन की कोशिश रहेगी कि धरना खत्म कर मनीषा का अंतिम संस्कार करा दिया जाए।

इससे पहले भिवानी सरकारी अस्पताल और रोहतक पीजीआई में मनीषा का पोस्टमॉर्टम हो चुका है। वहीं पुलिस कहीं गुपचुप तरीके से मनीषा की डेडबॉडी सरकारी अस्पताल से लाकर अंतिम संस्कार न कर दे, इसके लिए गांव के एंट्री गेट पर धरना लगा दिया गया है। गांव के अंदरूनी रास्तों से लेकर श्मशान तक पर नजर रखी जा रही है। रात में भी युवा ठीकरी पहरा देंगे। मेन सड़कों पर महिलाएं डंडा लेकर खड़ी हैं।

पिता के बयान के बाद भड़के ग्रामीण

मनीषा के पिता संजय और पहले की धरना कमेटी के साथ सोमवार देर रात तक प्रशासन ने मीटिंग की। उन्हें भरोसा दिलाया गया कि मनीषा ने सुसाइड किया है। फिर पिता का बयान आया कि हम जांच से संतुष्ट हैं, आज मनीषा का अंतिम संस्कार कर देंगे।

इसके बाद ग्रामीण उनके पास पहुंचे तो पिता ने कहा कि प्रशासन ने धरना कमेटी और कमेटी ने मुझ पर दबाव डालकर संस्कार के लिए राजी किया। जिसके बाद ग्रामीण भड़क गए और फिर धरना लगा दिया।

पिता का भी कहना है कि जो गांव कहेगा, मैं इसी हिसाब से चलूंगा। जबरन मनीषा का अंतिम संस्कार नहीं करूंगा।

विरोध प्रदर्शन

समाजवादी पार्टी की सांसद प्रिया सरोज, टीएमसी सांसद सायोनी घोष और भारतीय ब्लॉक पार्टियों के अन्य सांसद, संसद के मानसून सत्र के दौरान, नई दिल्ली में बिहार में मतदाता सूचियों के चुनाव आयोग के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करते हुए।

संक्षिप्त खबरें

हाइटेंशन की चपेट में आए 11 वीं के छात्रा की मौत

बेहटा गोकुल थाने के सुंदरपुर गांव में हुआ हादसा

मोहम्मद खालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। शौच के लिए निकला 11 वीं का छात्र रास्तें में हाइटेंशन लाइन के पोल की चपेट में आ गया, करंट लगने से वह गिर पड़ा, इसका पता होते ही वहां तमाम लोग पहुंचे, आनन-फानन में उसे सीएचसी पहुंचाया, लेकिन वहां पहुंचते ही उसकी मौत हो गई। बताया गया है कि बेहटा गोकुल थाने के सुंदरपुर निवासी ओम नमो-शुक्ला का 16 वर्षीय पत्र रचित शुक्ला 11 वीं का छात्र था।मंगलवार की सुबह रचित शौच के लिए निकला, वह खेत की तरफ जा रहा था, उसी बीच रास्तें में हाइटेंशन लाइन के पोल की चपेट में आने से उसे करंट लगा और वहीं पर गिर पड़ा। रचित के पड़े होने की खबर पर वहां भीड़ लग गई। आनन-फानन में उसे सीएचसी टोंडरपुर पहुंचाया गया, लेकिन वहां पहुंचते ही उसकी मौत हो गई। ओम नमो-शुक्ला के पांच बच्चो में चार बेटे और एक बेटी थी। हादसे का पता होते ही उसके घर-परिवार में कोहराम बरपा हो गया। पुलिस ने छात्रा के शव को अपने कब्जे़ में लेते हुए उसका पोस्टमार्टम कराया है।

पत्नी के साथ छोड़ने पर पति ने छोड़ दी दुनिया!

दिल्ली से वापस लौट कमरें में लगाई फांसी

मोहम्मद खालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। दिल्ली में नौकरी कर रहे पति को उसकी पत्नी छोड़ कर अपने मायके चली गई, उसने बार-बार कोशिश की लेकिन वह नहीं आई, उसके बाद पति भी दिल्ली में ही रहने लगा। अभी कुछ ही दिनों पहले वह घर आया और सोमवार को कमरें में फांसी लगा कर आत्महत्या कर ली।पुलिस ने शव को अपने कब्जे़ में लेते हुए उसका पोस्टमार्टम कराया है। बताया गया है कि सुरसा थाने के रामपुर निवासी 32 वर्षीय राहुल पुत्र वीरेंद्र ने सोमवार को अपने कमरें में फांसी लगा ली, इसका पता तब हुआ जब राहुल के मामा रमेश निवासी हरचंदपुर उससे मिलने घर पहुंचा, वहां उसने कमरें का दरवाज़ा बंद पाया, उसके बाद रमेश ने पड़ोसी के मकान से झांका, जहां कमरें में उसने अपने भांजे का शव फांसी पर लटका हुआ देखा। भाई बब्लू ने बताया कि राहुल की शादी सेमरा चौराहा से हुई थी, करीब तीन साल पहले वह पति का साथ छोड़ कर मायके चली गई। उसे विदा कराने के लिए राहुल कई बार ससुराल गया, लेकिन बार-बार की कोशिशों के बाद वह उसके साथ नहीं आई, पत्नी के इस कदम के बाद से राहुल गुमसुम रहने लगा था, कुछ ही दिनों पहले वह दिल्ली से घर आया हुआ था। पुलिस ने शव को कब्जे़ में लेते हुए उसका पोस्टमार्टम कराया है, मामले की जांच की जा रही है।

चारा काट रहे अधेड़ की नाले में गिर कर मौत

सिकंदरपुर नरकतरा के गौरिया नाले में हुआ हादसा

मोहम्मद ख़ालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। भैंस के लिए चारा काट रहा अधेड़ नाले में गिर पड़ा, जिससे उसके सिर में गहरी चोंट पहुंची, उसे नाले से बाहर निकाल कर उसके इलाज का बंदोबस्त होता, लेकिन उससे पहले ही उसकी मौत हो गई। बताया गया है कि शहाबाद कोतवाली के सिकंदरपुर नरकतरा निवासी 55 वर्षीय पहाड़ी मंगलवार को गौरिया नाले के किनारे भैस के लिए चारा काटने गया हुआ था, उसी बीच पैर फिसलने से नाले में गिर गया और सिर में गहरी चोंट पहुंची। इसका पता होने से वहां पहुंचे लोगो ने उसे बाहर निकाला और इलाज का बंदोबस्त करने लगे, उसी बीच उसकी मौत हो गई। बताया जाता है कि अधेड़ नशे में में था, उसी से हादसा हुआ। पहाड़ी खेती-बाड़ी करता था। उसकी पत्नी की करीब 10 साल पहले ही मौत हो चुकी थी।

पुलिस ने वांछित चल रहे 307 के आरोपी को दबोचा

अजय सिंह । रामविनय

हरदोई/ भरखनी (दबंग इंडिया)। थाना प्रभारी अब्दुल जब्बार खां ने बताया कि 3 जुलाई 20225 को सकरौली निवासी चंद्र प्रकाश पुत्र दिनेश ने गांव निवासी मीनू पुत्र नत्थूलाल एवं अन्य चार के खिलाफ बगैर किसी कारण के गाली-गलौज मारपीट कर जान से मारने का आरोप लगाया था। मुकदमा दर्ज करने के बाद अभियुक्त फरार चल रहा था।मंगलवार को मुखबिर की सूचना के आधार पर पुलिस ने आरोपी को उसके घर से गिरफ्तार कर लिया। थाना प्रभारी ने बताया कि आरोपी को गिरफ्तार करने के बाद न्यायालय में पेश किया गया जिसके बाद उसे जेल भेज दिया गया है।

लखनऊ में लाठी से वार कर मजदूर का सिर फोड़ा : इलाज के दौरान मौत

लखनऊ। लखनऊ में बाइक का पंचर बनवाने गए एक मजदूर की स्थानीय युवकों से किसी बात को लेकर विवाद हो गया। बात इतनी बढ़ गई की मारपीट की नौबत आ गई। स्थानीय युवकों ने मजदूर को लाठी-डंडों से पीटना शुरू कर दिया। लाठी से सिर पर कई वार किए। किसी तरह मजदूर अपनी जान बचाकर घर पहुंचा। देर रात उसकी तबीयत बिगड़ी। परिजन उसे अस्पताल ले गए, जहां डॉक्टरों ने उसको मृत घोषित कर दिया। घटना मंगलवार दोपहर करीब 2 बजे की है। मृतक की पहचान सराय शहजादी निवासी प्रदीप (25) के रूप में हुई है। प्रदीप अपनी बाइक का पंचर बनवाने कानपुर रोड स्थित कटी बगिया गया था। वहां कुछ युवकों से उसका विवाद हो गया। आरोप है कि युवकों ने लाठी-डंडे, लात-घूसों और लोहे के रॉड से प्रदीप की पिटाई कर दी।

सूचना

सर्व साधारण को सूचित किया जाता हैं कि प्रार्थनी द्वारा अपने दोनों पुत्रों रंजीत कश्यप व मंजेश कश्यप पुत्रगण नरेंद्र एवं पुत्रबधू मोनी पत्नी रंजीत कश्यप व गीता पत्नी मंजेश कश्यप को उनके अनैतिक, हिंसक व आपराधिक आचरण के चलते इन्हें अपनी चल-अचल संपत्ति से बेदखल कर दिया है। प्रार्थनी के उपरोक्त दोनों पुत्रों व दोनों पुत्रवधूओं के द्वारा किये गए कृत्य से प्रार्थनी का कोई सरोकार नहीं होगा। यह लोग स्वयं अपने सभी कृत्य के लिए जिम्मेदार होंगे। प्रार्थनी - रजनी देवी पत्नी नरेंद्र, निवासी मोहल्ला सरायसैफ, कस्बा पाली, तहसील सवायज़पुर, जिला हरदोई।

सास-ससुर से तंग महिला ने नदी में लगाई थी छलांग

लखनऊ। लखनऊ में ठाकुरगंज के घैला पुल पर सोमवार को एक महिला ने गोमती नदी में छलांग लगा दी थी। पुलिस ने गोताखोरों की मदद से शव बाहर निकाला और पोस्टमॉर्टम हाउस भेज दिया। मंगलवार को भाई ने शव की शिनाख्त शिवानी (32) के रूप में की है। बाराबंकी फतेहपुर निवासी भाई अमित ने बताया कि 13 साल पहले बहन की शादी बसंतखेड़ा काकोरी निवासी त्रिभुवन से हुई थी। शादी के बाद से उसे दहेज के लिए प्रताड़ित किया जा रहा था।

पत्रकार बने

दबंग इंडिया हिंदी दैनिक समाचार पत्र को हरदोई जनपद में शाहाबाद, बिलग्राम, सदर, संडीला तहसील के तहसील ब्यूरो व पिहानी, गोपामऊ, हरियावां, टड़ियावां, अहिरोरी, भरावन, कोथावां, बघौली, कछौना, सांडी, हरपालपुर, मल्लावां, माधौगंज में संवाददाताओं की आवश्यकता है, इच्छुक लोग संपर्क करें - मो0 - 9260949922

टप्पेबाजी की घटना में संलिप्त शातिर पति-पत्नी चढ़े पुलिस के हत्थे

- 2 कुंडल, 30 हजार की नगदी, 2 मोबाइल फोन व बाइक बरामद
- डेढ़ महीने पहले हुई घटना में अपना हाथ होना किया कबूल

अंकुश गुप्ता । दबंग इंडिया

पाली, हरदोई। करीब डेढ़ माह पहले पाली कस्बे से रूपापुर ई रिक्शा से जाते समय एक महिला की बैग से एक अन्य महिला द्वारा सोने की चेन व नगदी चोरी करने के मामले में पाली पुलिस ने शाहजहांपुर जिले के शातिर पति-पत्नी को गिरफ्तार किया, जिनसे पूछताछ के बाद दोनों को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें जेल भेज दिया गया।

आपको बता दे कि पाली के मोहल्ला पटियानीव के सुशील मिश्रा पुत्र स्व0 विजयशंकर अपनी पत्नी के साथ ई रिक्शा से 1 जुलाई को पाली कस्बे से रूपापुर जा रहे थे। सुशील की पत्नी के पास मौजूद बैग से ई रिक्शा पर बैठी एक अज्ञात महिला ने सोने की चेन व नगदी पार कर दी। रूपापुर से पहले ही अज्ञात महिला ई रिक्शा से उतरकर पीछे आ रही साथी की बाइक पर बैठकर फरार हो गई। सुशील मिश्रा ने घटना की तहरीर पाली थाने पर दी, जिसके बाद अज्ञात महिला के खिलाफ अभियोग दर्ज किया गया था।

पाली थानाध्यक्ष सोमपाल गंगवार ने बताया कि घटना की जांच के दौरान प्रकाश में आए शाहजहांपुर जिले के पुवायां थाना क्षेत्र अंतर्गत ह्युरिया गांव के गौतम पुत्र जागन व उसकी पत्नी लक्ष्मी को पाली थाने की पुलिस टीम ने गिरफ्तार कर लिया। पुलिस ने गिरफ्तार पति-पत्नी के पास से दो कुंडल, 30 हजार की नगदी व दो मोबाइल फोन और घटना में प्रयुक्त बाइक बरामद की। पूछताछ के दौरान दोनों ने कबूल किया कि वह ई रिक्शा पर सवार लोगों और भीड़ भाड़ बाली जगह पर लोगों की जेब और बाइक से कीमती सामान चोरी कर मोटरसाइकिल से भाग जाते थे। गिरफ्तार पति-पत्नी ने पाली कस्बे की महिला से टप्पेबाजी में भी अपना हाथ होना कबूल किया, साथ ही बताया कि महिला से चोरी की गई चेन राह चलते व्यक्तियों को कम कीमत पर बेच दी गई है। पाली थानाध्यक्ष श्री गंगवार ने बताया कि गिरफ्तार दोनों पति-पत्नी ने शाहजहांपुर जिले के बरेली मोड़ पर एक महिला के पास मौजूद बैग से दो कुंडल चोरी किए थे, इस मामले में भी अभियोग दर्ज किया गया है। फिलहाल पूछताछ के बाद दोनों शातिर पति-पत्नी को कोर्ट में पेश किया गया, जहां से उन्हें जिला कारागार भेज दिया गया।

तेज रफ्तार डीसीएम की चपेट में आए बाइक सवार की मौत

दोस्त ज़ख्मी मल्लावां-सण्डीला रोड पर गौसपुर पुल के पास हुआ हादसा

मोहम्मद खालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। मल्लावां-सण्डीला रोड पर गौसपुर पुल के पास एक तेज़ रफ्तार डीसीएम ने बाइक सवार को अपनी चपेट में लेते हुए उसे रौंद दिया, जिससे उसकी वहीं पर दर्दनाक मौत हो गई, जबकि उसका दोस्ती ज़ख्मी हो गया। इस बीच ड्राइवर डीसीएम छोड़ कर वहां से भाग निकला। डीसीएम को अपने कब्जे़ में लेते हुए पुलिस हादसे की जांच कर रही है। बताया गया है कि मल्लावां कोतवाली के फतेहगंज निवासी 25 वर्षीय शाकिर मंगलवार की सुबह अपने दोस्त ज़ैद के साथ बाइक से अपने घर से सण्डीला के लिए निकला। दोनों बाइक सवार मल्लावां-सण्डीला रोड पर गौसपुर पुल के पास पहुंचे, तभी तेज़ रफ्तार डीसीएम बाइक में टक्कर मारते हुए शाकिर को रौंदते हुए निकल गई। जिससे शाकिर की वहीं पर मौत हो गई, ज़ैद ज़ख्मी हो गया। हादसा होते ही ड्राइवर डीसीएम छोड़ कर भाग गया। हादसा होने की खबर सुन कर वहां अपनी टीम के साथ पहुंचे एसएचओ कासिमपुर अखिलेश कुमार ने डीसीएम और शव को कब्जे़ में लेते हुए आगे की कार्रवाई शुरु कर दी। ज़ैद का सीएचसी सण्डीला में इलाज हो रहा है। एसएचओ कासिमपुर श्री कुमार ने बताया कि तहरीर आने पर मामला दर्ज कर आगे की कार्रवाई अमल में लाई जाएगी।

अधेड़ की मौत, पुलिस के दबाव बनाने पर आगे आई भाभी

मोहम्मद खालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। एक अधेड़ खुद ही अपना इलाज कराने मेडिकल कालेज पहुंचा, जहां उसकी मौत हो गई। काफी इंतज़ार के बाद जब उसका कोई वहां नहीं पहुंचा, तो पुलिस ने दबाव बनाया, जिसके चलते देर शाम को उसकी भाभी सामने आई, उसके आने के बाद ही शव का पंचनामा किया जा सका। बताया गया है कि मंगलवार की सुबह 50 वर्षीय रामनरेश निवासी संथरी मल्लावां खुद पैदल चल कर मेडिकल कालेज पहुंचा, जहां उसे भर्ती कर लिया गया। रामनरेश के बताने पर उसका नाम-पता दर्ज हुआ।

उसके बाद उसकी वहीं मौत हो गई। शव मर्चरी में बंद कराने के बाद पंचनामे के लिए उसखे अपनों की राह देखी जाने लगी। लेकिन जब कोई नहीं आया, तो पुलिस ने दबाव बनाना शुरु कर दिया, तब कही देर शाम को उसकी भाभी कमला देवी मर्चरी पहुंची। तब पुलिस ने शव का पंचनामा किया।

लखनऊ फाल्कंस ने मेरठ मावेरिक्स को हराया

लखनऊ। लखनऊ के इकाना स्टेडियम में काशी रुद्रास ने यूपी टी-20 लीग में कानपुर सुपरस्टार्स को 24 रन से हरा दिया। अभिषेक गोस्वामी ने ताबड़तोड़ बल्लेबाजी करते हुए 52 गेंदों पर दस चौके और तीन छक्कों की मदद से 84 रन बनाए। इसके बाद राहुल शर्मा की गेंद पर आदर्श के हाथों कैच आउट हुए। जबकि दूसरे मैच में लखनऊ फाल्कंस ने मेरठ मावेरिक्स को हराया। काशी के 201 रन के जवाब में कानपुर की टीम 177 रन ही बना सकी। काशी के लिए अभिषेक और करन ने पहले विकेट के लिए 36 रन बनाए। करन 19 रन बनाकर विनीत कुमार की गेंद पर बोल्ड हुए।

छात्र गर्रा नदी और बुज़ुर्ग तालाब में डूबा

- हरपालपुर थाने के मिरकापुर का था छात्र
- शौच जा रहा था पूरा बहादुर खा 85 साल का बुज़ुर्ग

मोहम्मद खालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। घर से निकला प्राथमिक स्कूल का छात्र गांव के किनारे से निकली गर्रा नदी में गिर कर डूब गया, इसका पता होने पर उसे ढूंढा जाने लगा, तब कहीं देर शाम को उसका शव बरामद हो सका, वहीं शौच के लिए गया एक 85 साल का बुज़ुर्ग तालाब में डूब गया, जिससे उसकी पानी में डूब कर मौत हो गई।

बताया गया है कि हरपालपुर थाने के मिरकापुर निवासी शिवपाल का 12 वर्षीय पुत्र शिवा सोमवार की दोपहर स्कूल से घर पहुंचा, वह अपनी दादी देवकी की गोद में लेट गया, उसके बाद अचानक बाहर निकल कर खेलते हुए गर्रा नदी में नहाने लगा, उसी बीच वह गहरे पानी में डूब गया। शाम तक घर न पहुंचने पर शिवा को ढूंढा जाने लगा, काफी देर बाद उसके कपड़े और चप्पलें नदी के किनारे रखी देखी गई। देर शाम करीब दो से ढ़ाई सौ मीटर उसका शव बरामद हो सका। वहीं कोतवाली देहात के पूराबहादुर निवासी 85 वर्षीय इन्द्रपाल सिंह पत्र मुंशी सिंह सोमवार की शाम को गांव के बाहर शौच को गया, उसी बीच वह तालाब में गिर पड़ा। इसका पता होने पर उसे ढूंढा जाने लगा, सारी रात उसका कुछ पता नहीं चला, अगले दिन मंगलवार की सुबह इन्द्रपाल सिंह का आधा शव तालाब के बाहर और आधा पानी में पड़ा देखा गया। वहां पहुंचे लोगों ने उसका शव बाहर निकाल कर पुलिस को सूचना दी। इन्द्रपाल सिंह के परिवार में एक बेटा अवधेश सिंह और एक बेटी छुन्नी है। पुलिस ने दोनों शवों को कब्जे़ में लेते हुए उनका पोस्टमार्टम कराया है।

पानी का कहर : 15 सौ बीघा ज्वार, बाजरा और मूंगफली की फसल बर्बाद

बाढ़ प्रभावित फसलों का जायजा लेने पहुंची मण्डल अध्यक्ष की टीम

मोहम्मद खालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। सई नदी में सोमवार की सुबह से ही पानी बढ़ने का सिलसिला शुरु हो गया और देर शाम तक इलाके की करीब एक दर्जन से अधिक धान, मक्का, ज्वार, बाजरा व मूंगफली कि फसल पूरी तरीके से बाढ़ के पानी में डूब कर बर्बाद हो गई, ज़िला प्रशासन ने करीब 15 सौ बीघा फसल बर्बाद होने का आंकलन किया है।

मंगलवार को बेंहदर के भाजपा मण्डल अध्यक्ष गोपेंद्र मिश्रा ने अपनी टीम के साथ कंजौरा व सिरौली गांव पहुंचकर ग्रामीणों से मिलकर बाढ़ की चपेट में आई फसलों के बारे में विस्तृत चर्चा करी ग्रामीणों के मुताबिक कंजौरा गांव में घरों के समीप पानी आ गया है वहीं बत्ती खेड़ा व कंजौरा गांव को जाने वाला डामरी कृत सड़क पर पानी भर गया है जिससे वह क्षतिग्रस्त हो गई है। इसी के साथ ही धनरमपुर, बिरौली, बलनापुर, ठकुरी खेड़ा, सुखन खेड़ा समेत एक दर्जन से अधिक गांव की फसले बाढ़ के पानी की चपेट में आ गई है जो पूरी तरीके से बर्बाद हो गई। गांव की हकीकत जानकर गोपेंद्र मिश्रा ने विधायक रामपाल वर्मा व मिश्रिख सांसद अशोक रावत को बर्बाद हुई फसलों के हालातो से दूरभाष पर रूबरू कराया है। मण्डल अध्यक्ष ने बताया विधायक ने राजस्व विभाग को प्रकरण से अवगत कराते हुए खुद बाढ़ प्रभावित गांवों का दौरा कर वहां के किसानों के बीच पहुंचकर उनके साथ सीधा संवाद करेंगे। इस दौरान उपाध्यक्ष महेश सिंह चौहान, बीडीसी शिवम मिश्रा, संतोष कुमार तिवारी, रजनीश अग्निहोत्री समेत तमाम लोग मौजूद रहे।

मां छोड़ कर गई...पिता ने भी हमेशा-हमेशा के लिए छोड़ दिया साथ

बच्चों को पाल रहे पिता ने ज़हर खा कर की आत्महत्या

मोहम्मद ख़ालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। पत्नी के जाने के बाद पति अपने बच्चों को पाल रहा था, लेकिन उसी बीच मंगलवार को उसने ज़हर खा लिया, इसका पता होने पर उसे सीएचसी से मेडिकल कालेज पहुंचाया गया, जहां उसकी मौत हो गई। बताया गया है कि बिलग्राम कोतवाली के जरौली नेवादा निवासी 46 वर्षीय राकेश ने मंगलवार की सुबह ज़हर खा लिया, उसे उल्टी-पल्टी होने पर सीएचसी बिलग्राम पहुंचाया गया, जहां के डाक्टरों ने मेडिकल कालेज के लिए रिफर कर दिया, जहां पहुंचते ही राकेश की मौत हो गई। बताते है कि राकेश खेती-बाड़ी करता था, उसकी पत्नी मालती तीन साल पहले अपने दोनों बच्चों बेटी सुहानी और बेटे प्रिंस को छोड़ कर अपने मायके महोलिया शिवपार में रहने लगी थी, उसके जाने के बाद राकेश दोनों बच्चों को पाल रहा था। उसने आत्महत्या जैसा कदम क्यों उठाया ? इसके लिए लोग उसकी पत्नी को ही ज़िम्मेदार मान रहे है। पुलिस का कहना है कि अगर कोई तहरीर आती है, तो उसके मुताबिक आगे की कार्रवाई की जाएगी।

सूरज डेथ मिस्ट्री : गले की फांस बनी फांसी !

- पोस्टमार्टम रिपोर्ट ने पुलिस का सिरदर्द बढ़ाया
- रिपोर्ट में मौत फांसी से, लेकिन पहले कुछ खाया या खिलाया गया

मोहम्मद खालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। एक 15 साल के किशोर की फांसी से हुई मौत पुलिस के लिए गले की फांस बन गई। उसकी पोस्टमार्टम रिपोर्ट में साफ कहा गया है कि मौत फांसी से हुई, लेकिन आगे आया है कि खाने में पहले उसे कुछ दिया गया था, बिसरा प्रज़र्व किए जाने से ऐसा कहा जा रहा है। हालांकि पहले ही आरोप लगाया गया था कि पड़ोस गांव के कुछ युवको ने किशोर के साथ कुछ ऐसा किया जो उसकी मौत की वजह बना। माना जा रहा है कि ऐसी रिपोर्ट से पुलिस का सिरदर्द और बढ़ गया है।

बताते चलें कि हरपालपुर थाने के मलौथा गांव निवासी कृष्ण पाल का 15 वर्षीय बेटा सूरज सोमवार की सुबह घर से निकला, उसके बाद वापस नहीं लौटा, घर वाले उसे ढूंढ रहे थे, तभी पता चला कि सूरज का शव गांव के बाहर एक नीम के पेड़ से लटका हुआ है। इसका पता होते ही वहां कोहराम बरपा हो गया। सूरज की मां ऊषा का आरोप है कि उसके बेटे को मार कर लटकाया गया। इस बारे में बताया जा रहा है कि रविवार की शाम को सूरज गांव के बाहर रामगंगा नदी के किनारे गया हुआ था, वहीं पड़ोसी गांव के कुछ युवक भी पहुंच गए। किसी बात पर सूरज का उन युवको से झगड़ा हो गया, उसके बाद रात में वहीं युवक हाथों में चाकू-छुरी ले कर कृष्ण पाल के घर पहुंचे, लेकिन वहां पहले से कुछ लोग बैठा हुए थे, जिन्होने चाकू-छुरी छीन कर उन्हे खदेड़ दिया। ऐसा भी कहा जा रहा है कि उसी मामले में सूरज के एक दोस्त सुरजीत ने पुलिस को तहरीर दी थी। आरोप है कि पुलिस ने सुनवाई नहीं की, जिससे उन युवकों के हौसले इतने बढ़ गए कि उन्होने इतनी बड़ी वारदात कर डाली। सोमवार को पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया, उसकी रिपोर्ट में फांसी से मौत होने की बात कही गई है, लेकिन साथ ही उसका बिसरा प्रज़र्व किए जाने से साबित हुआ कि किशोर ने पहले कुछ खाया, या फिर जबरन उसे खिलाया गया।

चूंकि बिसरा तभी प्रज़र्व किया जाता है, जब इस बात का अंदेशा लगता है कि कुछ खाया गया। किशोर का बिसरा प्रज़र्व होने से पुलिस की जांच और तेज़ हो गई है, क्योंकि पहले ही पुलिस पर आरोप लगाया गया था कि उसने पड़ोसी गांव वालों से हुए झगड़े पर कोई सुनवाई नहीं की, जिससे ऐसा हुआ।

माइनर के किनारे पड़े युवक की मेडिकल कालेज में मौत

- मंगलवार की दोपहर घर से पैदल निकला था युवक
- पूरे शरीर में लिपटी थी बालू, पीठ और हाथों में थीं खरोंच

मोहम्मद खालिद । दबंग इंडिया

हरदोई। घर से पैदल निकला युवक पिहानी के बूढ़ागांव माइनर के पास पड़ा हुआ देखा गया, उसे सीएचसी से मेडिकल कालेज पहुंचाया गया, जहां उसकी मौत हो गई। युवक के शरीर में बालू लिपटी हुई थी, साथ ही पीठ और हाथ में आईं खरोंच किसी अनहोनी की तरफ इशारा कर रहीं थी। बताया गया है कि पिहानी कोतवाली नौगवां मजरा बद्दापुर निवासी 25 वर्षीय रविकांत पुत्र संजय बिजली मैकेनिक था। उसकी मां गुड्डी ने बताया कि रविकांत मंगलवार की सुबह घर से पैदल निकला था, उसके बाद वापस नहीं लौटा। उसी बीच उसके मौसा दोपहर मशाल सिंह निवासी कोईलहा पलिया कोतवाली देहात ने जानकारी कि रविकांत के मोबाइल से उसके पुत्र रणवीर सिंह के पास फोन आया, उधर से बोलने वाले ने अपने को राहगीर बताया और कहा कि रविकांत पिहानी-महोली रोड पर बूढ़ागांव के पास माइनर के किनारे पड़ा हुआ है।उन्ही राहगीरों ने एंबुलेंस-108 से रविकांत को सीएचसी पिहानी पहुंचाया, वहां उसे मेडिकल कालेज रिफर कर दिया गया, जहां पहुंचते ही उसकी मौत हो गई। मौसा मशाल सिंह का कहना है कि रविकांत के शरीर पर बालू लिपटी हुई थी, साथ ही पीठ और हाथों में खरोचे थीं।

ऐसे में उसके साथ कोई अनहोनी होनी मानी जा रही है। रविकांत के भाई और पिता की पहले ही मौत हो चुकी थी, उसकी शादी नहीं हुई थी। पुलिस का कहना है कि जांच की जा रही है, पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही आगे कुछ कहा जा सकता है।

लखनऊ में झूठी एफआईआर कराने पर वकील को उम्रकैद

लखनऊ। लखनऊ में एक वकील को आजीवन कारावास की सजा हुई। SC/ST एक्ट विशेष अदालत ने मंगलवार को झूठी एफआईआर दर्ज कराने के मामले में दोषी पाए जाने पर यह सजा दी। अदालत ने वकील परमानन्द गुप्ता पर 5 लाख रुपए जुर्माना भी लगाया है। वहीं सह-अभियुक्त पूजा रावत को बरी कर दिया। कोर्ट ने आदेश में झूठी एफआईआर दर्ज करने वालों पर सख्ती बरतने और राहत राशि वितरण की प्रक्रिया में बदलाव करने के भी आदेश दिए हैं। एसीपी विभूतिखंड राधारमण सिंह ने इस मामले की विवेचना की थी। जांच में सामने आया कि पूजा रावत की दर्ज कराई एफआईआर झूठी थी।

यूरिया न मिलने से नाराज किसानों ने शाहाबाद पिहानी मार्ग जाम किया

सरकार के खिलाफ नारेबाजी की

रामप्रकाश राठौर । दबंग इंडिया

शाहाबाद, हरदोई। शाहाबाद तहसील में यूरिया खाद को लेकर किसान काफी परेशान हैं। सुबह से ही किसान पीसीएफ खाद गोदाम पर लाइन बनाकर लग जाते हैं लेकिन पूरे पूरे दिन उनको खाद नहीं मिल पाती। जबकि दलालों और रसूखदारों को प्रचुर मात्रा में खाद उपलब्ध हो रही है। मंगलवार को किसानों के सब्र का प्याला छलक गया और खाद गोदाम गढ़ी में एकत्रित किसान सड़क पर आ गए। किसानों ने शाहाबाद पिहानी मार्ग जाम कर दिया। दोनों ओर से आवागमन ठप्प हो गया और वाहनों की लंबी-लंबी कतारें लग गई। लोग जाम में फंस गए। जैसे ही पुलिस प्रशासन को सूचना मिली तो पुलिस मौके पर पहुंची और किसानों को समझाने का प्रयास किया। लेकिन किस सरकार के विरोध में जमकर नारेबाजी कर रहे थे। अधिकांश किसानों ने बताया कि चार-चार पांच-पांच दिन से वह लगातार चक्कर लगा रहे हैं लेकिन गोदाम पर खाद नहीं मिल रही है। किसानों का यह भी आरोप था की जलवेदार और दबंग टाइप के लोग आकर यूरिया लेकर चले जाते हैं और एक-एक बोरी के लिए छोटे-छोटे किसान लाइन में लगे रहते हैं और शाम को बैरग वापस होना पड़ता है। फिलहाल पुलिस ने जैसे तैसे किसानों को समझा बूझाकर जाम खुलवाया। तब लोगों ने राहत की सांस ली।

शार्ट न्यूज

आपदा राहत में एक कदम मानवता की ओर

आरएस उत्सव । दबंग इंडिया

लखनऊ । देव ग्रुप ऑफ़ कॉलेजेज, डीपीएस एकेडमी इटौंजा लखनऊ के द्वारा इटौंजा के आप-पास के गांवों में बाढ़ आपदा से प्रभावित हजारों लोगों को लंच पैकेज उपलब्ध कराएं गए। देव ग्रुप ऑफ़ कॉलेजेज के चेयरमैन लाल महेंद्र प्रताप सिंह जी, विद्यालय की चेयरपर्सन शैल सिंह जी ,देव ग्रुप के डायरेक्टर डॉ आशीष सिंह जी, देव ग्रुप मैनेजमेंट के संवाहक श्री भावेश प्रताप सिंह, डीपीएस एकेडमी की प्रशासनिक अधिकारी गरिमा सिंह जी, साथ ही क्षेत्र के समाजसेवी बड़े संजय सिंह जी, समाजसेवी धीरज पाण्डेय मौजूद रहें। विद्यालय की ओर से यह पहल न केवल सहयोग की भावना को दर्शाती है बल्कि, समाज के प्रति हमारी नैतिक जिम्मेदारी को भी उजागर करती है। देव ग्रुप कॉलेजेज और देव परिवार इटौंजा लखनऊ क्षेत्र में शिक्षा के साथ9साथ समाजिक कार्यों में भी अपना गिलहरी सहयोग करता आया है। मानव सेवा ही सच्ची सेवा है।

राशन वितरण में विवाद...मारपीट पर मुकदमा दर्ज, जांच में जुटी पुलिस

गोपाल सक्सेना । दबंग इंडिया

फर्रुखाबाद/ अमृतपुर । तहसील मुख्यालय अमृतपुर के पास बाढ़ राहत सामग्री के वितरण के दौरान 16 अगस्त की शाम बड़ा विवाद हो गया। फकरपुर गांव निवासी शिवदत्त तिवारी पुत्र श्री छोटेलाल तिवारी (प्रधान पति) ने पुलिस को दी तहरीर में आरोप लगाया कि जब वह लेखपाल आदिल के साथ राहत सामग्री ग्रामीणों में बाँट रहे थे, तभी हमीरपुर गांव निवासी रामरहीस पुत्र श्रीराम, मनोज पुत्र रामरहीस, सुनील पुत्र मदनपाल तथा सुभानपुर निवासी सुनील पुत्र झब्बू वहाँ आ गए और बिना वजह गाली-गलौज करने लगे। तहरीर के अनुसार आरोपियों ने विरोध करने पर मारपीट की और जान से मारने की धमकी भी दी। साथ ही राहत सामग्री वितरण में बाधा पहुँचाई। थाना अमृतपुर पुलिस ने मामले में धारा 115(2), 352 और 351(2) के तहत मुकदमा दर्ज कर लिया है। मामले की जांच की जिम्मेदारी चौकी इंचार्ज उप निरीक्षक विमल कुमार को सौंपी गई है।

4 लाख में सिर्फ 40 हजार हेक्टेयर जमीन का अधिग्रहण

नोएडा। नोएडा-ग्रेटर नोएडा और यमुना एक्सप्रेसवे क्षेत्र में करीब 4 लाख हेक्टेयर जमीन अधिसूचित है। जिसमें से 1.50 लाख हेक्टेयर जमीन पर ही मास्टर प्लान तैयार किया। 40 हजार हेक्टेयर जमीन अधिग्रहीत की गई है। ये जानकारी इन्वेस्ट यूपी की ओर से किए गए एक प्रजेंटेशन में सामने आई। इस प्रजेंटेशन का उद्देश्य क्षेत्र में कारोबार को तेजी से विकसित करना है। प्रजेंटेशन में बताया गया कि औद्योगिक विकास प्राधिकरण द्वारा अधिग्रहीत भूमि के अलावा ऐसी जमीन जिसका अधिग्रहण नहीं किया गया है। नक्शे नास नहीं किए गए जा रहे है। ऐसी स्थिति में न तो विकास हो पा रहा है और न ही निवेश आ रहा है। यह भी बताया गया कि जिस रफ्तार से जमीन का अधिग्रहण किया जा रहा है, अधिसूचित जमीन अधिग्रहण करने में कई साल लग जाएंगे। यही वर्तमान व्यवस्था रही तो अधिकांश भूमि अविकसित रह जाएगी।

दनकौर में जन्माष्टमी मेले का आकर्षण कुश्ती

जेवर। ग्रेटर नोएडा के दनकौर कस्बे में श्री द्रोणाचार्य मंदिर परिसर में जन्माष्टमी के अवसर पर 10 दिवसीय मेला चल रहा है। मेले में तीन दिवसीय कुश्ती प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। मंगलवार को दंगल के दूसरे दिन पहलवानों के मुकाबले देखने के लिए सैकड़ों लोग पहुंचे। आयोजकों के अनुसार दिन भर में कुल 55 कुश्तियां हुईं। इनमें दो मुकाबलों का इनाम 31-31 हजार रुपये, दो का 10-10 हजार रुपये और चार मुकाबलों का पुरस्कार 5-5 हजार रुपये रखा गया। बुधवार को होने वाले फाइनल में दिल्ली, हरियाणा, पंजाब, उत्तर प्रदेश और राजस्थान के पहलवान हिस्सा लेंगे। मेले में बच्चों के लिए विभिन्न प्रकार के झूले लगे हैं। खान-पान के शौकीन लोग भी मेले का आनंद ले रहे हैं।

सेना से रिटायर्ड महिला डॉक्टर से मारपीट

जेवर। ग्रेटर नोएडा के रबूपुरा में एक सेना से रिटायर्ड महिला डॉक्टर के साथ दो युवकों ने मारपीट और अभद्रता की। पुलिस ने दोनों आरोपियों के खिलाफ मामला दर्ज कर लिया है। घटना 14 अगस्त की है। पीड़िता को मिर्जापुर गांव के नितिन भाटी ने यमुना एक्सप्रेसवे की सर्विस रोड पर एक ढाबे के पास रोका। उसके साथ गांव का ही मोहित भाटी भी था। बातचीत के दौरान मोहित ने पीड़िता के साथ अभद्रता शुरू कर दी। विरोध करने पर दोनों आरोपियों ने महिला डॉक्टर के साथ मारपीट की। इस दौरान उनके कान में गंभीर चोट आई। पीड़िता किसी तरह वहां से भागकर अपनी जान बचा पाईं। उनका ग्रेटर नोएडा के जिम्स अस्पताल में इलाज चल रहा है। कोतवाली प्रभारी मुनेंद्र सिंह ने बताया कि दोनों आरोपियों के खिलाफ केस दर्ज कर लिया गया है। जल्द ही उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा।

पति ने चाकू से पत्नी का गला काटा

लोनी। गाजियाबाद में घरेलू विवाद के चलते सोमवार रात एक पति ने अपनी पत्नी की गला रेतकर हत्या कर दी। आरोपी पति दो महीने पहले जेल छूटा है। लोनी के अंकुर बिहार थाना क्षेत्र में रहने वाले सुमित गुप्ता का विवाह करीब दो साल पहले राम पार्क एक्सटेंशन की रहने वाली कविता गुप्ता से हुआ था। विवाह के कुछ ही महीनों बाद सुमित को हरियाणा में गोली मारने के एक मामले में गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया था। करीब दो वर्ष तक जेल में रहने के बाद वह दो महीने पहले ही जमानत पर रिहा हुआ था। बाहर आने के बाद सुमित ऑटो चलाकर गुजर-बसर करने लगा। परिजनों और पड़ोसियों का कहना है कि जेल से आने के बाद से ही सुमित पत्नी पर अवैध संबंधों का शक जताकर आए दिन झगड़ा करता था।

गाजियाबाद में यमुना के किनारे बाढ़

गाजियाबाद। गाजियाबाद में यमुना नदी का जलस्तर खतरे के निशान पर पहुंच गया है। हालांकि नदी का जलस्तर नियंत्रित माना जा रहा है। प्रशासन पूरी तरह सतर्क है। गाजियाबाद-बागपत बॉर्डर के गांवों में बाढ़ आनी शुरू हो गई है। पिछले 24 घंटे में बाढ़ का पानी बढ़ा है। करीब 28 गांव यमुना के किनारे हैं। इनमें कुछ जगह पर चारे का संकट भी खड़ा होने लगा है। यमुना हथिनीकुंड बैराज से 1.78 लाख क्यूसेक पानी छोड़े जाने के बाद यमुना का जलस्तर लगातार बढ़ रहा है। अनुमान है कि अगले 24 घंटों में नदी का स्तर और ऊपर जा सकता है, जिससे बाढ़ का खतरा बढ़ सकता है। यहां जिला प्रशासन ने एहतियातन यमुना किनारे बसे गांवों में अलर्ट घोषित कर दिया है। पब्लिक अनाउंसमेंट सिस्टम के जरिए ग्रामीणों को नदी किनारे जाने से रोकने की अपील की जा रही है। प्रशासनिक अधिकारियों का कहना है कि पानी की स्थिति पर लगातार नजर रखी जा रही है।

अलग-अलग घटनाओं में आरोपियों पर रिपोर्ट दर्ज

रामप्रकाश राठौर । दबंग इंडिया

शाहाबाद, हरदोई। कोतवाली क्षेत्र में अलग अलग गावों में हुई मारपीट की घटनाओं में पीड़ितों की तहरीर पर पुलिस ने आरोपियों के विरुद्ध नामजद रिपोर्ट दर्ज कर जांच शुरू की है। कोतवाली क्षेत्र के ग्राम नीरपुर गन्नू निवासी पीड़िता रीतू गौतम पत्नी ओमी के अनुसार 16 अगस्त की शाम को गांव के श्रीपाल के पुत्र अंकित,मुकेश,प्रदीप ने अर्पित पुत्र वीरेंद्र के साथ मिलाकर उसके दरवाजे पर आकर गाली गलौज किया मना करने पर लाठी डंडों से मारपीट कर घायल कर दिया।

उधरनपुर निवासी आकाश पुत्र अमर सिंह के अनुसार 16 अगस्त को वह बेहटा कोला गांव में जन्माष्टमी का मेला देखने जा रहा था।रास्ते में गांव के सोनू पुत्र निलेश ने अपने साथी परविंदर पुत्र सुशील के साथ मिलकर उसे गाली गलौज करते हुए डंडों से मारपीट कर घायल कर दिया।शोर सुनकर ग्रामीणों ने उसे बचाया। मोहल्ला जोगीपुर नौसारा निवासी रूक्मनी उर्फ संगीता पुत्री रामाधीन के अनुसार 16 अगस्त की रात में दस बजे मोहल्ले के मुकेश,श्रीपाल,मंशाराम पुत्रगण जगदीश अपने साथी अजीत पुत्र सर्वेश के साथ मिलकर उसके दरवाजे पर गाली गलौज कर रहे थे।गाली देने से मना करने पर विपक्षियों ने उसे लाठी डंडों से मारपीट कर घायल कर दिया।शोर सुनकर उसका भाई प्रदीप बचाने आया तो आरोपियों ने उसे भी मारपीट कर घायल कर दिया। देहात कोतवाली क्षेत्र के ग्राम बहर के मजरा पेड़ा निवासी मदन पाल सिंह पुत्र रोहन सिंह के अनुसार उसने अपनी पुत्री स्नेहलता का विवाह पांच वर्ष पूर्व कोतवाली क्षेत्र के ग्राम खरगपुर निवासी अरविंद सिंह पुत्र कन्हैया के साथ किया था।उसकी पुत्री का पति, ससुर और परिजन उसे आए दिन मारपीट करते रहते थे।कुछ दिन पूर्व विपक्षियों ने उसकी पुत्री को मारपीट कर घर से भगा दिया था।तब से उसकी पुत्री उसके साथ अपने मायके में रह रही है। कोतवाली क्षेत्र में अलग अलग हुई मारपीट के मामलों में कोतवाली पुलिस ने पीड़ितों की लिखित तहरीर के आधार पर आरोपियों के विरुद्ध नामजद रिपोर्ट दर्ज कर घायलों को मेडिकल परीक्षण के लिए भिजवाया है।पुलिस ने सभी मामलों की तहकीकात शुरू कर दी है।

सीएम आवास के बाहर युवक ने सुसाइड की कोशिश की

लखनऊ। सीएम आवास के बाहर एक युवक ने सुसाइड करने की कोशिश की। युवक की पहचान औरैया के 32 वर्षीय शैलेंद्र यादव के रूप में हुई है। वह नोएडा में नौकरी करता है। वहां से मंगलवार सुबह लखनऊ पहुंचा। वह प्रॉपर्टी विवाद से परेशान बताया जा रहा है। उसने अपने साथ कंबल ले रखा था। सीएम आवास के पास पहुंचते ही उसने साथ में लाए कंबल से गला कसकर पेड़ पर लटकने की कोशिश की। यह देख तैनात पुलिसकर्मियों के हाथ-पांव फूल गए। पुलिसकर्मियों ने सतर्कता दिखाते हुए तुरंत उसे पकड़ लिया। हिरासत में लेते हुए पूछताछ शुरू की। प्रारंभिक पूछताछ में युवक ने बताया कि वह काफी समय से संपत्ति विवाद से मानसिक रूप से परेशान चल रहा है। न्याय न मिलने से हताश होकर उसने यह कदम उठाया। उसे कुछ लोगों ने भड़काया था कि लखनऊ जाओ। वहां मुख्यमंत्री ही सुनेंगे।

अवैध लकड़ी लदी ट्रैक्टर-ट्रॉली पकड़ी गई, लकड़कट्टा फरार

रामप्रकाश राठौर । दबंग इंडिया

शाहाबाद, हरदोई। क्षेत्रीय वन रेंज द्वारा मंगलवार की दोपहर अवैध रूप से काटी गई सरकारी लकड़ी से लदी ट्रैक्टर-ट्रॉली को जब्त किया गया है। यह कार्रवाई क्षेत्रीय वन रेंज अधिकारी आलोक शर्मा के नेतृत्व में की गई, जिन्हें गुप्त सूचना मिली थी कि पाली-रूपापुर मार्ग पर कुछ लकड़कट्टे चोरी-छिपे लकड़ी की तस्करी कर रहे हैं। सूचना मिलते ही वन विभाग की टीम ने तत्परता दिखाते हुए मौके पर छापा मारा। वन विभाग की टीम को देखकर लकड़ी तस्कर ट्रैक्टर-ट्रॉली मौके पर ही छोड़कर फरार हो गया। जब्त की गई ट्रैक्टर-ट्रॉली में बड़ी मात्रा में काटी गई मूल्यवान सरकारी लकड़ी लदी हुई थी, जिसे वन विभाग की टीम ने कब्जे में लेकर क्षेत्रीय वन रेंज कार्यालय पहुंचाया।रेंज अधिकारी आलोक शर्मा ने बताया कि फरार अभियुक्त की पहचान की जा रही है और उसके खिलाफ आवश्यक विधिक कार्यवाही प्रारंभ कर दी गई है। यह कार्रवाई न सिर्फ वन संपदा की सुरक्षा की दिशा में एक अहम कदम है, बल्कि वन अपराधियों के हौसले पस्त करने का भी प्रयास है। इस छापेमारी में वन दरोगा निष्काम मिश्रा, शशिकांत बाजपेई, अरुण पाठक तथा विजय द्विवेदी समेत वन विभाग की टीम मौजूद रही।

जर्जर सड़कों को बनाने की मांग जिला पंचायत सदस्य ने की, लिखा पत्र

आदेश शुक्ला । दबंग इंडिया

शाहजहांपुर । जर्जर हो चुकी सड़कों को पुन बनवाने की मांग को लेकर जिला पंचायत सदस्य नीरज मिश्रा ने पत्र लिखा है। जिला पंचायत सदस्य कुसुम मिश्रा ने बैठक में कहा कि कुर्रिया गांव की बड़ी पुलिया से मेन बाजार तक एवं भुड़ाया गांव से उमराह होते हुए भानपुर तक की सड़क काफी खस्ताहाल है। दोनों सड़कों को पूर्व में जिला पंचायत द्वारा निर्मित कराया गया था। वर्तमान में इन सड़कों को कार्य योजना में शामिल करके दोबारा मरम्मत करवाने की मांग उठाई। जिसे अधिकारियों द्वारा संज्ञान में लेकर आवश्यक कार्यवाही के लिये भेज दिया गया।

आखिरकार 108 घंटे बाद शुरू हो सकी बिजली सप्लाई

गोपाल सक्सेना। दबंग इंडिया

फर्रुखाबाद /अमृतपुर। गंगा में आई भीषण बाढ़ के चलते गंगा पार क्षेत्र की विद्युत व्यवस्था पूरी तरह से ठप हो गई थी। एक ओर बाढ़ का संकट और दूसरी ओर अंधेरे ने ग्रामीणों की परेशानी को दोगुना कर दिया। चारों तरफ जलभराव होने से न तो लोग अपने घरों से बाहर निकल पा रहे थे और न ही मोबाइल व अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरण चार्ज कर पा रहे थे। संचार व्यवस्था ठप पड़ने से ग्रामीणों की मुश्किलें और बढ़ गई थीं।

लगातार 108 घंटे तक अंधेरे में रहने के बाद आखिरकार बिजली कर्मचारियों की कड़ी मेहनत रंग लाई। जैसे ही गांवों में बल्ब जले, ग्रामीण खुशी से झूम उठे और राहत की सांस ली।

बिजली बहाल करने के लिए कर्मचारियों को गहरे बाढ़ के पानी में उतरना पड़ा। स्टीमर की मदद से बिजली लाइन की मरम्मत की गई। इस दौरान बिजली कर्मचारियों ने अपनी जान की परवाह न करते हुए दिन-रात जी-तोड़ मेहनत की।

मरम्मत कार्य के दौरान एक बिजली कर्मचारी शुभ को सांप ने डस लिया, जिसके बाद उसे जिला लोहिया अस्पताल में भर्ती कराया गया। चिकित्सकों की देखरेख में उसका उपचार जारी है । अमृतपुर में तैनात जेई शिवम् तिवारी और उनकी टीम ने कठिन परिस्थितियों से जूझते हुए कई चुनौतियों का सामना किया और अथक प्रयासों के बाद आखिरकार सफलता हासिल की। ग्रामीणों ने जेई शिवम् तिवारी और उनकी टीम के कार्य की सराहना करते हुए कहा कि इन बिजली कर्मियों की मेहनत और समर्पण से ही अंधेरे से रोशनी तक का सफर संभव हो सका है।

अमृतपुर हादसा : छज्जा गिरने से घायल दो बच्चों की हालत गंभीर, निजी अस्पताल में भर्ती

गोपाल सक्सेना । दबंग इंडिया

फर्रुखाबाद /अमृतपुर। कस्बे में रविवार की शाम हुए हादसे में छज्जा गिरने से घायल हुए चार बच्चों में से दो की हालत गंभीर बनी हुई है। घटना के बाद सभी घायलों को 108 एंबुलेंस की मदद से उपचार के लिए अस्पताल पहुंचाया गया था।

जानकारी के अनुसार रामवीर पुत्र प्रयाग के घर का छज्जा अचानक गिर पड़ा। हादसे के समय छज्जे पर बच्चे मौजूद थे, जिससे सभी नीचे आ गिरे और घायल हो गए। घायलों में अभय उर्फ रोहेल पुत्र संजीव और नेहा उर्फ शिवि पुत्री राजीव की हालत गंभीर होने पर परिजनों ने उन्हें शहर के सिटी हॉस्पिटल में भर्ती कराया। डॉक्टरों ने अभय उर्फ रोहेल को नाजुक हालत में आईसीयू में भर्ती किया है, वहीं नेहा उर्फ शिवि का इलाज जारी है।

वहीं प्रेमबाबू पुत्र रामवीर और छुटकी पुत्री शानू उर्फ राज कश्यप को प्राथमिक उपचार के बाद अस्पताल से छुट्टी दे दी गई और परिजन उन्हें घर ले आए।

हादसे की सूचना पाकर प्रशासन की ओर से कानूनगो परविंदर अस्पताल पहुंचे और बच्चों की स्थिति के बारे में जानकारी ली। गौरतलब है कि रविवार की शाम अचानक छज्जा गिरने से यह हादसा हुआ था, जिसमें चार मासूम घायल हो गए थे। फिलहाल गंभीर रूप से घायल दोनों बच्चों का इलाज जारी है और परिवारजन उनकी सलामती के लिए दुआ कर रहे हैं।

लखनऊ में वाहिद बिरयानी के मालिक पर फायरिंग

लखनऊ। लखनऊ के खाला बाजार इलाके में देर रात बदमाशों ने वाहिद बिरयानी के मालिक जावेद पर फायरिंग कर दी। स्कूटी से आए दो नकाबपोश बदमाशों ने तीन राउंड फायरिंग की। इससे इलाके में अफरा-तफरी मच गई। पीड़ित व्यापारी जावेद ने मामले की पुलिस को सूचना दी। खाला बाजार थाना प्रभारी ने बताया कि मामले की जांच शुरू कर दी गई है। जावेद की राजाजीपुरम निवासी अभिषेक निगम से रुपयों के विवाद में रंजिश की बात सामने आई है। सभी पहलुओं पर जांच की जा रही है। सीसीटीवी फुटेज जुटाई जा रही हैं।

लखनऊ में इंस्टा रील में दिखे चोरी के इयररिंग

लखनऊ। लखनऊ के बंथरा क्षेत्र में सोने के झालों की चोरी का एक अनोखा मामला सामने आया है। उमेद खेड़ा रोड के अनन्या सिटी की रहने वाली राधा ने अपनी पड़ोसी महिला पर चोरी का आरोप लगाया है। राधा के मुताबिक, 7 मार्च को उनके घर से सोने के झाले गायब हो गए थे।

काफी खोजबीन के बाद भी झाले नहीं मिले। 9 अगस्त को उन्होंने अपनी किराएदार पड़ोसी महिला की इंस्टाग्राम फोटो में वही झाले देखे। उस समय आरोपी महिला अपने गांव में थी।

14 अगस्त को जब आरोपी महिला उम्मेद खेड़ा वापस आई, तो राधा ने उससे झालों के बारे में पूछा। आरोपी ने उन्हें आर्टिफिशियल बताया। जब झाले दिखाने को कहा गया तो वह टालमटोल करने लगी। 17 अगस्त को आरोपी महिला ने झाले फेंक देने की बात कही।

पाली के रामलीला चौराहे पर ईओ ने हटवाया अस्थाई अतिक्रमण

अंकुश गुप्ता । दबंग इंडिया

पाली, हरदोई । कस्बा के आजाद नगर निवासी रघुवीर लाला ने तहसील दिवस पर राजस्व अभिलेख में चक मार्ग के रूप में दर्द गाटा संख्या तीस पर अतिक्रमण को लेकर शिकायत की थी।

मंगलवार दोपहर ईओ निकाय टीम व पुलिस के साथ रामलीला चौराहा पर अतिक्रमण हटाने पहुंचे। अस्थाई दुकानदारों ने बुलडोजर आता देखकर अपनी अपनी दुकानें हटा ली तो वहीं कुछ दुकानदारों को ईओ ने अतिक्रमण हटाने की चेतावनी दी। ईओ कृष्ण कुमार सोनकर ने बताया कि दोबारा अतिक्रमण मिलने कार्यवाही की जाएगी।

मंडलायुक्त ने किया बिलग्राम के बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों का दौरा

भरत द्विवेदी । दबंग इंडिया

हरदोई। बिलग्राम मंडलायुक्त रोशन जैकब ने बिलग्राम तहसील क्षेत्र के राजघाट के आसपास मक्कू पुरवा, घासीराम पुरवा, चिरंजू पुरवा, कटरी बिलुही व कटरी परसोला आदि बाढ़ प्रभावित ग्रामों में बाढ़ की स्थिति का निरीक्षण लिया। बाढ़ प्रभावित क्षेत्रों के भ्रमण के दौरान उन्होंने प्रभावित ग्रामीणों से संवाद भी किया तथा प्रशासन द्वारा उपलब्ध कराई जा रही सहायता के बारे में जानकारी ली। उन्होंने अधिकारियों को स्पष्ट निर्देश दिए कि बाढ़ शरणालयों को 24 घंटे सक्रिय रखा जाए।मेडिकल कैंप में दवाओं की पर्याप्त उपलब्धता सुनिश्चित रखी जाए। एंटी वेनम वैक्सीन पर्याप्त मात्रा में रखी जाये।स्वास्थ्य विभाग की टीमें लगातार प्रभावित क्षेत्र में तैनात रहें। प्रभावित क्षेत्र में एम्बुलेंस की व्यवस्था सुचारु रखी जाए। पानी उतरने के बाद प्रभावित क्षेत्रों में फॉगिंग कराई जाए तथा एंटीलार्वा का छिड़काव किया जाए। लोगों को शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराने के लिए क्लोरीन की गोलियां दी जाएं तथा प्रयोग की विधि के बारे में बताया जाए। बाढ़ से प्रभावितों को राहत किट वितरित की जाए। जिन घरों में खाना पकाना संभव न हो उन्हें पका हुआ भजन उपलब्ध कराया जाए। निजी पशुओं के लिए अलग से पशु शरणालय बनाए जाएं। पशुओं का टीकाकरण कराया जाए। पशुओं के भूसे चारे का भी पर्याप्त प्रबंध सुनिश्चित किया जाए।

जिलाधिकारी अनुनय झा ने संबंधित अधिकारियों को निर्देश दिया कि मंडलायुक्त महोदया द्वारा दिए गए निर्देशों का पूरी तरह से अनुपालन सुनिश्चित किया जाए। इस दौरान पर एडीएम प्रफुल्ल त्रिपाठी, एसडीम बिलग्राम प्रभारी तहसीलदार यशवंत सिंह, नायब तहसीलदार मुकेश कुमार चौधरी सहित अन्य विभागो के संबंधित अधिकारी मौजूद रहे।

दोबारा फर्रुखाबाद आयेंगे राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत : अजय कटियार

गोपाल सक्सेना । दबंग इंडिया

फर्रुखाबाद । लिंक एक्सप्रेसवे से प्रभावित किसानों की समस्याओं को लेकर आज संगठन की ओर से एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में बड़ी संख्या में पीड़ित किसान शामिल हुए। बैठक की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश उपाध्यक्ष अरविंद शाक्य ने कहा कि किसानों की जमीन उनकी मर्जी के बिना कोई नहीं ले सकता। वहीं कानपुर मंडल उपाध्यक्ष लक्ष्मी शंकर जोशी ने सवाल उठाया कि जब गंगा एक्सप्रेसवे जिले में नहीं बनाया गया तो लिंक एक्सप्रेसवे क्यों बनाया जा रहा है ? जनप्रतिनिधियों को इस पर गंभीरता से विचार करना चाहिए और किसानों से वार्ता करनी चाहिए। जिला अध्यक्ष अजय कटियार ने स्पष्ट कहा कि लिंक एक्सप्रेसवे को लेकर लड़ाई लंबी चलेगी। उन्होंने बताया कि संगठन के राष्ट्रीय प्रवक्ता राकेश टिकैत बहुत जल्द फर्रुखाबाद आएंगे और किसानों की जमीनों की रक्षा के लिए आंदोलन को मजबूती देंगे। कटियार ने कहा कि किसानों की जमीनों पर डाका डालने की इजाजत किसी को नहीं दी जाएगी।

बैठक में जिला संरक्षक छविनाथ शाक्य, पूर्व मंडल सचिव अफरोज मंसूरी, जिला उपाध्यक्ष कृष्ण गोपाल मिश्रा, जगन्नाथ शाक्य, अजय पाल यादव, जिला प्रवक्ता गोपी शाक्य, जिला कोषाध्यक्ष विमलेश शाक्य, जिला महासचिव अभय यादव, जिला मीडिया प्रभारी मुकेश शर्मा, जिला सचिव सुग्रीव पाल, पुजारी कटियार, संजय यादव बिजनेश, अरविंद गंगवार, अंकित राजपूत, रामबिलास राजपूत, अनीश सिंह, सोनू सोमवंशी, कमलेश शाक्य, शिवराम शाक्य, सतीश कठेरिया, अजीत कुमार उर्फ टिंकू यादव, रजत गंगवार सहित सैकड़ों किसान मौजूद रहे।

आक्रोशित नागरिकों ने पालिका ईओ को ज्ञापन सौंपा

नगर में बाढ़ के बाद अब बीमारियों का खतरा

ओम रस्तोगी । दबंग इंडिया

पिहानी, हरदोई । नगर में आयी बाढ़ का पानी निकल जाने के बाद सड़कों व गलियों में गंदगियों का अंबार लगा है, इर्द गिर्द भरे जलभराव को भी पालिका साफ नहीं करा पा रही है, बाढ़ के बाद क्षेत्र में अब बीमारियां फैलने का खतरा बढ़ गया है।

नगर के परजाउ तालाब के सौंर्दयीकरण के चलते जल का आवागमन बंद कर दिया गया जिससे मोहल्ला नागर के नागरिकों को बाढ़ जैसी त्रासदी को झेलना पड़ रहा है, समस्या से ग्रस्त लोगों ने पालिका के अधिशाषी अधिकारी को सम्बोधित विभिन्न मांगों का ज्ञापन सौंपकर निराकरण कराये जाने की मांग की। विदित हो,कि नगर में पूरे अगस्त माह में वारिश के पानी से बाढ़ जैसी स्थिति उत्पन्न रही थी, काफ़ी प्रयास के बाद भी नगर के कुछ वार्डो मे जलभराव की समस्या से अभी भी छुटकारा नहीं मिल पाया है, नगर निवासी रफीक अहमद, अफजाल अहमद, उवैस खां, सगीर, शान मोहम्मद, शकील खां, जुनैद खां, मोहम्मद वसीम, मोहम्मद आरिफ, नवी अहमद, सलमान, राजू, जमालूद्दीन, मोहम्मद हसीन आदि पीड़ित लोगों ने अधिशाषी अधिकारी को सम्बोधित ज्ञापन वरिष्ठ लिपिक गोपाल अवस्थी को सौंपा। ज्ञापन मे पालिका की अदूरदर्शिता और अपर्याप्त योजना के चलते जलभराव की स्थिति उत्पन्न हो गईं और नगरवासियों को अनावश्यक कष्ट झेलना पड़ रहा है, परजाउ तालाब से नबाब तालाब तक तीन मीटर चौड़ाई का नाला बनवाया जाये, जिससे समुचित जल निकासी हो सके, तालाब के पास से मीट की मार्केट को नगर के बाहर करवाया जाये, जिससे पर्यावरण शुद्ध हो, बस्ती के लोगों को दुर्गंध से छुटकारा मिल सके।

शार्ट न्यूज

कुरारा में आज होगा किसान दिवस का आयोजन

लक्ष्मीनारायण मिश्रा । दबंग इंडिया

हमीरपुर । किसानों की समस्याओं के निस्तारण तथा सरकार की जन कल्याणकारी योजनाओं की जानकारी देने के उद्देश्य से प्रत्येक माह के तृतीय बुधवार को किसान दिवस का आयोजन कल दिनांक 20 अगस्त को कृषि विज्ञान केन्द्र कुरारा में किया जा रहा है। जिसमें विभिन्न विभागों के जिला स्तरीय अधिकारी मौजूद रहेंगें। तत्क्रम में सभी किसान भाइयों को सूचित किया जाता है कि वे कृषि विज्ञान केन्द्र कुरारा में आयोजित होने वाले किसान दिवस में पूर्वान्ह 11:00 बजे से उपस्थित होकर अपनी समस्याओं का निराकरण एवं विभागीय योजनाओं की जानाकरी प्राप्त कर सकते है।

पुलिस द्वारा वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

लक्ष्मीनारायण मिश्रा । दबंग इंडिया

हमीरपुर । पुलिस अधीक्षक जनपद हमीरपुर के निर्देशन में अपराध नियंत्रण व वांछित/ वारण्टी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में आज दिनांक 19.08.2025 को थाना मुस्करा पुलिस द्वारा अ0सं0 1090/2009 धारा 25 आर्म्स एक्ट से सम्बन्धित अभियुक्त जगदीश यादव को ग्राम बिहुनी खुर्द थाना मुस्करा जनपद हमीरपुर से गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया।

पुलिस द्वारा वारण्टी अभियुक्त गिरफ्तार

लक्ष्मीनारायण मिश्रा । दबंग इंडिया

हमीरपुर । पुलिस अधीक्षक जनपद हमीरपुर के निर्देशन में अपराध नियंत्रण व वांछित/ वारण्टी अभियुक्तों की गिरफ्तारी हेतु चलाए जा रहे अभियान के क्रम में आज दिनांक 19.08.2025 को थाना सिसोलर पुलिस द्वारा अ0सं0- 47/93 धारा- 25 आर्म्स एक्ट से सम्बन्धित अभियुक्त रामविलाश को ग्राम भटुरी थाना सिसोलर जनपद हमीरपुर से गिरफ्तार कर न्यायालय भेजा गया।

चादर के जुलूस के दौरान हुआ विवाद

बरेली । बरेली में आला हजरत के 107वें उर्स में चादरपोशी जुलूस के दौरान दो समुदाय आमने-सामने आ गए। आरोप है कि नई परंपरा बताकर कुछ लोगों ने जुलूस का विरोध किया। इस पर पुलिस ने लाठीचार्ज कर दिया। जैसे ही इसकी जानकारी हिंदू संगठनों को हुई तो तमाम लोग मौके पर पहुंच गए। लोगों का कहना है कि क्षेत्र के खजूरिया जुल्फिकार गांव में आला हजरत के उर्स पर चादरों का जुलूस निकाला जा रहा था। हिंदुओं ने इसे नई परंपरा बताकर विरोध किया। कहा, जुलूस आगे नहीं निकलने देंगे। इस पर जुलूस में शामिल लोगों ने हमला कर दिया। हंगामा बढ़ने पर पुलिस ने भी लोगों को दौड़ा-दौड़ा कर पीटा। हिंदू संगठनों का दावा है कि मारपीट और पुलिस के लाठीचार्ज से करीब 12 लोगों के चोटें आई हैं।

पुलिस के सामने युवक को मारी गोली

कुशीनगर । कुशीनगर में लव ट्रायंगल में युवक को पुलिस के सामने गोली मार दी गई। इसका वीडियो भी सामने आया है। इसमें दिख रहा कि जैसे ही पहली गोली चलती है, वहां मौजूद दरोगा भाग जाता है। आरोपी तीन राउंड फायरिंग करता है। एक गोली युवक के पेट में लग जाती है। इसके बाद आनन-फानन में उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया। जिस युवक को गोली लगी है, वह एक लड़की से प्रेम करता है। वह लड़की आरोपी युवक के भाई की मेडिकल स्टोर पर काम करती है। उससे भी लड़की का अफेयर चल रहा था। सोमवार को आरोपी का भाई लड़की को घर छोड़कर लौट रहा था, तभी उसकी पीड़ित युवक से कहासुनी हो गई। पीड़ित युवक के सिर में चोट लग गई। इसके बाद वह अपने घरवालों के साथ आरोपी के घर पहुंचा।

लखनऊ में नाबालिग छात्रा से रेप

सरोजनी नगर । लखनऊ के बंथरा थाना क्षेत्र में 14 वर्षीय छात्रा के साथ रेप का मामला सामने आया है। पुलिस ने आरोपी को गिरफ्तार कर लिया है। घटना शनिवार सुबह की है। पीड़िता के माता-पिता एक रिश्तेदार के अंतिम संस्कार में गए थे। वह अपने छोटे भाई और दो बहनों के साथ घर पर अकेली थी। इसी दौरान खसरवारा गांव का 45 वर्षीय विनोद रावत उनके घर पहुंचा। आरोपी विनोद पीड़िता के परिवार का जानकार है। उसने छात्रा को जंगल में रुपयों से भरा संदूक होने का झांसा दिया। लालच में आई किशोरी को वह अपनी बाइक पर बैठाकर अंबरपुर स्थित जंगल ले गया। वहां उसने किशोरी के साथ रेप किया। पीड़िता के चिल्लाने पर आरोपी ने उसका मुंह दबा दिया और जान से मारने की धमकी दी। शाम को जब माता-पिता घर लौटे, तब किशोरी ने उन्हें पूरी घटना बताई। परिजनों ने बंथरा थाने में शिकायत दर्ज कराई।पुलिस ने पीड़िता का मेडिकल परीक्षण कराया।

लखनऊ में 24 घरों की सीलिंग-कुर्की

लखनऊ। लखनऊ नगर निगम ने टैक्स चोरी करने वाले बड़े बकायेदारों के खिलाफ एक्शन लिया है। इस दौरान 24 से अधिक भवनों पर सीलिंग और कुर्की की कार्रवाई की गई। मौके पर 5 लाख 88 हजार रुपए से अधिक की वसूली की गई। जोन-1, 3, 4 और 5 में एक साथ अभियान चलाया गया था। जोन-1 में 6 भवनों पर, जोन-3 में सबसे ज्यादा 10 भवनों पर एक्शन लिया गया। जोन 4 के पेपर मिल वॉर्ड में 2 भवनों पर कुर्की से 78000 वसूले गए और 4 भवनों को सील किया गया। इससे क्षेत्र के बकायेदारों पर दबाव बढ़ गया है। जोन-5 में 6 भवनों पर कार्रवाई हुई। इस दौरान टैक्स की वसूली नहीं देने वाले घरों पर सीलिंग की कार्रवाई हुई। नगर आयुक्त गौरव कुमार ने कहा- बड़े बकायेदारों को अब किसी भी प्रकार की ढील नहीं दी जाएगी। यदि अधिकारी कार्रवाई में ढिलाई बरतेंगे, तो उन्हें भी सजा भुगतनी पड़ेगी।

कारोबारी से 28.60 लाख की साइबर ठगी

लखनऊ । लखनऊ में साइबर जालसाजों ने मैट्रिमोनियल एप पर आईडी बनाकर युवक से करीब 28.60 लाख रुपए ठग लिए। जालसाज ने बातचीत कर वॉट्सऐप नंबर ले लिया। इसके बाद गेमिंग एप पर पैसा दुगना करने का लालच देकर कई बार में रुपए ऐंठ लिए। जालसाज ने उसे 20 दिन तक ट्रैप में रखा। पुलिस मुकदमा दर्ज करके मामले की जांच कर रही है। मड़ियांव गांव, जानकीपुरम निवासी नितेश सिंह रियल स्टेट कारोबारी हैं। उन्होंने बताया कि उसका संपर्क संगम मैट्रिमनी एप के जरिए ओजस्वी सिंह नाम के व्यक्ति से हुआ था। बातचीत के बाद उसने वॉट्सऐप नंबरों से संपर्क बनाए रखा और एक फर्जी वेबसाइट tkt-dreamwin.com पर गेमिंग का लालच देकर रकम ट्रांसफर कराई। पीड़ित ने बताया कि 19 जून से 10 जुलाई 2025 के बीच अलग-अलग खातों में रकम भेजी गई। कुल मिलाकर 28 लाख 60 हजार रुपए जालसाज ने ऐंठ लिए। पीड़ित ने साइबर ठगी की शिकायत दर्ज कराई है।

राठ इलाके में फल-फूल रहे एक दर्जन से अधिक मानकविहीन विद्यालय

शिकायतों के बाद भी कार्रवाई नदारद

लक्ष्मीनारायण मिश्रा । दबंग इंडिया

राठ (हमीरपुर) । शिक्षा विभाग के कड़े निर्देशों के बावजूद नगर क्षेत्र में दर्जनों मानकविहीन और अमान्य विद्यालय खुलेआम धड़ल्ले से संचालित हैं। स्थानीय लोगों का आरोप है कि सहायक खंड शिक्षा अधिकारी (एबीएसए) की सह के कारण इन विद्यालयों पर अब तक कोई कार्रवाई नहीं हो सकी। जबकि निदेशक शिक्षा ने पूरे प्रदेश में 15 अगस्त 2025 तक मानकविहीन विद्यालयों की सूची तैयार कर प्रशासन को उपलब्ध कराने का आदेश दिया था। लेकिन राठ क्षेत्र में न तो सूची सौंपी गई और न ही ऐसे विद्यालयों को बंद कराया गया। चरखारी रोड स्थित माउंट वैली आवासीय विद्यालय नियमों को दरकिनार कर छात्रावास भी चला रहा है।

जबकि एबीएसए शैलेश त्रिपाठी स्वयं कह चुके हैं कि नगर क्षेत्र में किसी भी विद्यालय को छात्रावास संचालन की अनुमति नहीं दी गई है। विद्यालय की लापरवाही से परा गांव निवासी रणजीत सिंह के पुत्र का एक वर्ष बर्बाद हो गया और पूरा शुल्क भी वसूल लिया गया था। अभिभावक की शिकायतें उपजिलाधिकारी सहित अन्य अधिकारियों तक पहुंचने के बाद भी अब तक कोई कदम नहीं उठाया गया। इसके अलावा अन्तर्राष्ट्रीय उपभोक्ता कल्याण समिति, कस्बे वासियों द्वारा कमिश्नर को लिखित और मुख्यमंत्री पोर्टल पर भी शिकायत करने के बाद भी सिर्फ विद्यालयों को नोटिस भेजकर खानापूर्ति करते नजर आए खंड शिक्षा अधिकारी शैलेश त्रिपाठी की मनमानी और उदासीनता के चलते शिकायतकर्ताओं और कस्बेवासियों ने शिक्षा विभाग की मिलीभगत सहित भ्रष्टाचार के गंभीर आरोप लगाए है। निश्चित रूप से शिक्षा माफियाओं के आगे हमीरपुर शिक्षा विभाग डरा और सहमा होने के कारण बिना मान्यता प्राप्त विद्यालयों पर कार्यवाही नहीं हो रही है। लगातार शिकायतों के बावजूद बेसिक शिक्षा अधिकारी भी अपनी जिम्मेदारी से भागते नजर आ रहे हैं। जिन्हें न नियम कानून का डर है और न ही कार्यवाही का सिर्फ जांच और कार्रवाई के नाम पर खानापूर्ति जरूर की जाती हैं। शिकायतकर्ता ने जिलाधिकारी से मांग की है कि एबीएसए की कार्यप्रणाली की जांच कर दोषियों के खिलाफ कड़ी कार्रवाई की जाए।

ताकि बच्चों का भविष्य और शिक्षा व्यवस्था सुरक्षित रह सके। मामले में बेसिक शिक्षा अधिकारी आलोक कुमार ने कहा कि राठ कस्बा सहित क्षेत्र में चल रहे बिना मान्यता प्राप्त विद्यालयों पर सख्त कार्रवाई की जायेगी।

आमतारा में 30 उपभोक्ताओं के काटे गए बिजली कनेक्शन

अजय सिंह । सरोज सिंह

हरदोई/पचदेवरा(दबंग इंडिया) । क्षेत्र के अनंगपुर विद्युत उपकेंद्र के विवियापुर फीडर से जुड़े आमतारा गांव में मंगलवार सुबह बिजली विभाग की टीम ने जांच की। जांच के दौरान एक घर में अवैध रूप से कटिया डालकर बिजली चोरी होते हुए पाई गई। अवर अभियंता भैया लाल पाल ने बीनू सिंह पत्नी दीपक सिंह के खिलाफ बिजली चोरी का मुकदमा दर्ज कराया है।वहीं बिल बकाया होने पर 30 उपभोक्ताओं के बिजली कनेक्शन काटे गए और 45517 रूपये की बसूली की।अवर अभियंता भैया लाल पाल के अनुसार विद्युत चोरी के ख़िलाफ़ इसी तरह अभियान चलाकर कार्यवाही की जाएगी उन्होंने अपील की कि जिन उपभोक्ताओं का बिल बकाया है तो जमा करने के बाद ही विद्युत उपयोग करें और जो उपभोक्ता कटिया डालकर विद्युत उपयोग कर रहे हैं वह आकर अपना कनेक्शन करा लें अन्यथा उनके विरुद्ध कठोर कार्यवाही की जाएगी ने कहा कि बिजली चोरी और बकाया वसूली के खिलाफ अभियान लगातार जारी रहेगा।

दो साल बाद नए रूप में खुलेगा इंदिरा गांधी नक्षत्रशाला

लखनऊ । राजधानी लखनऊ में स्थित इंदिरा गांधी नक्षत्रशाला अब दर्शकों को और भी रोमांचक अनुभव देने के लिए तैयार है। करीब दो साल तक बंद रहने के बाद यह नक्षत्रशाला अत्याधुनिक तकनीक, नए शो और थ्रीडी इफेक्ट्स के साथ मंगलवार से फिर से खोली जा रही है। अब यहां दर्शक खुद को अंतरिक्ष यात्री की तरह महसूस कर सकेंगे और ब्रह्मांड के रहस्यों को करीब से देख पाएंगे।

इसका लोकार्पण उत्तर प्रदेश सरकार के विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्री अनिल कुमार करेंगे।

कार्यक्रम में राज्यमंत्री अजीत सिंह पाल भी मौजूद रहेंगे। उद्घाटन के मौके पर मोहनलालगंज स्थित अटल आवासीय विद्यालय के 110 विद्यार्थी शो का आनंद लेंगे।

टाइम मशीन जैसा अनुभव

नया तारामंडल दर्शकों को समय यात्रा जैसा अनुभव कराएगा। वे लाखों साल पहले के जुरासिक युग की डायनासोरों की दुनिया देख सकेंगे और हजारों साल आगे जाकर ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति का नजारा कर पाएंगे। टूटते तारे, उल्कापिंडों की बारिश, सूर्य और चंद्र ग्रहण, ग्रहों की चाल सब कुछ बेहद वास्तविक लगेगा। विज्ञान अधिकारी डॉ. सुमित कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि नक्षत्रशाला अब केवल खगोल विज्ञान तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि इसमें भौतिकी, जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान और कला से जुड़े पहलुओं की भी जानकारी मिलेगी।

बीयर पीने के दौरान दोस्त ने मारी गोली, मौत

संतकबीर नगर । संतकबीर नगर में दोस्तों के साथ घूमने निकले युवक का दोस्तों से झगड़ा हो गया। इसके बाद चलती थार में एक दोस्त ने उसे गोली मार दी। बाद में उसे अस्पताल गए, जहां डॉक्टरों ने मृत घोषित कर दिया। अस्पताल प्रशासन ने घटना की जानकारी पुलिस को दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने तीनों दोस्तों को पूछताछ के लिए हिरासत में लिया। वहीं, बेटे की मौत की खबर सुनकर परिजन अस्पताल पहुंचे। वहां हंगामा करने लगे। वारदात के 24 घंटे के अंदर पुलिस ने मामले का खुलासा कर दिया। वारदात के पीछे पैसों के लेने का मामला सामने आया है। आरोपी और उसके साथियों ने अपना जुर्म कबूल कर लिया है।

हमीरपुर में जिलाधिकारी ने फरियादियों की शिकायतें सुन किया निस्तारण

लक्ष्मीनारायण मिश्रा । दबंग इंडिया

हमीरपुर । जिलाधिकारी श्री घनश्याम मीना ने कलेक्ट्रेट कार्यालय में जनसुनवाई कर जन सामान्य की शिकायतों को सुना एवं संबंधित अधिकारियों को प्राप्त शिकायतों का गुणवत्तापूर्ण व समयबद्ध तरीके से निस्तारण करने के निर्देश दिए।

जनसुनवाई में लगभग 91 शिकायते प्राप्त हुई जिनमें से अधिकांश का जिलाधिकारी ने त्वरित ढंग से मौके पर निस्तारण कर दिया। शेष शिकायतों के निस्तारण हेतु जिलाधिकारी ने समस्त एसडीएम , खंड विकास अधिकारी व अन्य संबंधित अधिकारियों के साथ वर्चुअल/ जूम एप के माध्यम से बैठक कर उनके तत्काल निस्तारण हेतु निर्देशित किया। उन्होंने कहा कि सभी एसडीएम ,बीडीओ व अन्य संबंधित अधिकारियों द्वारा नियमित रूप से अपने कार्यालय में जनसुनवाई कर जन समस्याओं का त्वरित ढंग से निस्तारण किया जाए इसमें किसी भी तरह किसी शिथिलता न बरती जाए। जिलाधिकारी ने कहा की जनसुनवाई, आईजीआरएस व अन्य माध्यमों से प्राप्त होने वाले प्रकरणों का सभी संबंधित अधिकारियों द्वारा मौके पर जाकर गुणवत्तापूर्ण ढंग से निस्तारण कर उसकी समय से आख्या दी जाए।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में संपन्न हुई मासिक समीक्षा बैठक

लक्ष्मीनारायण मिश्रा । दबंग इंडिया

हमीरपुर । अभियोजन कार्यों की मासिक समीक्षा बैठक जिलाधिकारी श्री घनश्याम मीना की अध्यक्षता में कलेक्ट्रेट स्थित डॉ एपीजे अब्दुल कलाम सभागार में सम्पन्न हुई।

इस मौके पर जिलाधिकारी ने कहा कि विभिन्न अभियोजन कार्योंध्केसों में शासकीय अधिवक्ताओं एवं अभियोजन अधिकारियों द्वारा सरकार का पक्ष मजबूती के साथ रखा जाए ,केसो में लचर रवैया ना अपनाया जाए ताकि कानून व्यवस्था के साथ खिलवाड़ करने वाले दोषी लोगों को जेल भेजा जा सके । कहा कि अभियोजन कार्यों में प्रभावी कार्यवाही किया जाए तथा जिसने अपराध किया है उसे दंड अवश्य मिलना चाहिए ताकि कानून व्यवस्था प्रभावी ढंग से सुनिश्चित कराई जा सके।

जिलाधिकारी ने अभियोजन अधिकारियों को निर्देशित करते हुए कहा कि विभिन्न अभियोजनो के दौरान तथ्यों की सही से जानकारी कर प्रभावी ढंग से विवेचना एवं पैरवी की जाए। उन्होंने कहा कि गवाहों की सुरक्षा पर विशेष ध्यान दिया जाए तथा अभियुक्तों पर सजा कराकर ऐसी नजीर पेश की जाए ताकि लोग अपराध करने से डरें। इस मौके पर उन्होंने गैंगस्टर एक्ट, पॉक्सो एक्ट सहित अन्य से संबंधित केसों की समीक्षा करते हुए उसके संबंध में जरूरी दिशा निर्देश दिए।

इस दौरान अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व, विजय शंकर तिवारी, अपर पुलिस अधीक्षक मनोज कुमार गुप्ता, संयुक्त निदेशक अभियोजन, सूचना अधिकारी, सतीश कुमार सहित अभियोजन विभाग के अधिकारी, शासकीय अधिवक्ता गण तथा अन्य संबंधित मौजूद रहे।

लखनऊ की पल्लवी सेकेंड रनर-अप

लखनऊ । लखनऊ की अर्जुनगंज निवासी पल्लवी जायसवाल ने दिल्ली में आयोजित विजनारा ग्लोबल ग्रुप के वीजी मिस एंड मिसेज़ इंडिया एम्प्रेस 2025, सीज़न-6 में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया। उत्तर प्रदेश का प्रतिनिधित्व करते हुए उन्होंने सेकंड रनर-अप का खिताब अपने नाम किया। पल्लवी ने बताया की एमबीए की पढ़ाई की हूँ।गायन, नृत्य, फिटनेस, फैशन और इंटीरियर डेकोरेशन में विशेष रुचि है। प्रतियोगिता में उन्होंने न केवल रनर-अप का खिताब जीता, बल्कि एम्प्रेस ग्लैम गॉडेस, एम्प्रेस पोजिंग क्वीन और एम्प्रेस स्टाइल आइकॉन जैसी तीन विशेष उपाधियां भी प्राप्त कीं। मंच पर पल्लवी की आत्मविश्वासपूर्ण प्रस्तुति ने निर्णायकों और दर्शकों को प्रभावित किया। उनका मानना है कि प्रत्येक महिला में असीमित क्षमताएं होती हैं। वे कहती हैं कि आत्मविश्वास और लगातार प्रयास से कोई भी महिला अपने लक्ष्यों को प्राप्त कर सकती है। पल्लवी की यह उपलब्धि लखनऊ और पूरे उत्तर प्रदेश के लिए गौरव की बात है। उनकी सफलता फैशन और व्यक्तित्व विकास के क्षेत्र में करियर बनाने की इच्छुक युवतियों के लिए प्रेरणादायक है। यह सफलता दर्शाती है कि समर्पण और दृढ़ संकल्प से कोई भी सपना साकार किया जा सकता है।

लखनऊ में वकील पर कुल्हाड़ी से हमला

लखनऊ । लखनऊ में वकील पर जानलेवा हमला हुआ। आधा दर्जन हमलावरों ने कुल्हाड़ी से उन पर हमला किया। हेलमेट पहने होने के बावजूद उनका सिर फट गया। वह गंभीर रूप से घायल हो गए। उन्हें उपचार के लिए अस्पताल में भर्ती कराया गया। सूचना पर बड़ी संख्या में वकील और परिचित लोग अस्पताल पहुंच गए। पुलिस ने घटना स्थल पर पहुंचकर छानबीन की। घटना मंगलवार सुबह मोहनलालगंज थाना क्षेत्र के बैरीसालपुर रेलवे क्रासिंग के पास हुई। पीड़ित वकील रमाकांत मिश्रा उर्फ विनोद ने मामले की थाने में लिखित तहरीर दी है। उन्होंने परिवार के ही रमाकांत मिश्रा उर्फ दीपू और उनके साथियों पर जानलेवा हमला करने का आरोप लगाया। पुलिस की प्रारंभिक जांच में जमीनी विवाद सामने आया है। पीड़ित रमाकांत मिश्रा उर्फ विनोद मूल रूप से मीरख नगर के मूल निवासी हैं। वह निगोहां में रेलवे रोड पर रहते हैं। मंगलवार सुबह करीब 10 बजे वह बाइक से अपने गांव मीरख नगर जा रहे थे। उनका आरोप है कि बैरीसालपुर रेलवे क्रासिंग के पास परिवार के ही रमाकांत मिश्रा उर्फ दीपू ने अपने 4-5 साथियों के साथ रोक लिया। जमीनी विवाद को लेकर उनके सिर पर कुल्हाड़ी से हमला कर दिया। वह लहूलुहान होकर बाइक से नीचे गिर गए। हमलावरों ने उन पर कई वार किए। उन्होंने पुलिस कंट्रोल रूम में फोन करने की कोशिश की तो उनका फोन छीन लिया। इस दौरान ग्रामीणों के लोग जुटने लगे, तो हमलावर धमकी देते हुए फरार हो गए।

प्रशासक एसडीएम, नगर पालिका ई ओ ने जल विहार पर्व के चलते सुम्मेरा तालाब का निरीक्षण किया

ललितपुर । जल विहार पर्व के चलते उप जिलाधिकारी सदर/प्रशासक मनीष कुमार, अधिशासी अधिकारी दिनेश कुमार विश्वकर्मा द्वारा सुम्मेरा तालाब का निरीक्षण किया गया, निरीक्षण के दौरान प्रशासक महोदय द्वारा तालाब के घाटों का निरीक्षण अवर अभियंता एवं मुख्य स्टोर लिपिक को जल विहार के पूर्व समस्त व्यवस्थाएं दुरूस्त किये जाने के निर्देश दिए गए। निरीक्षण के दौरान प्रशासक एसडीएम द्वारा सर्वप्रथम सुम्मेरा तालाब के घाटों का निरीक्षण किया गया व साफ-सफाई व्यवस्था का जायजा लिया गया, जिसमें उनके द्वारा अवर अभियंता एवं निर्माण लिपिक को निर्देश दिए कि जो भी घाट जीर्ण-शीर्ण अवस्था में है उनकी तत्काल प्रभाव से मरम्मत कराई जाए। इसके उपरांत प्रशासक महोदय द्वारा मंदिर परिसर एवं सुम्मेरा तालाब के घाटों पर लाइटिंग की व्यवस्था सुनिश्चित किये जाने हेतु मुख्य स्टोर लिपिक को निर्देशित किया गया। अधिशासी अधिकारी दिनेश कुमार विश्वकर्मा द्वारा संबंधित सफाई एवं खाद्य निरीक्ष को निर्देश दिए गए कि जल विहार पर्व के पूर्व तालाब, तालाब के समस्त घाटों व मंदिर परिसर के अंदर विशेष रूप से टीमें लगाकर साफ-सफाई व्यवस्था एवं घाटों की रंगाई-पुताई का कार्य जल विहार के पूर्व सम्पन्न करा लिया जाए।

इसके उपरांत उपजिलाधिकारी सदर/प्रशासक द्वारा नझाई बाजार स्थित आईसीसीसी (कमाण्ड सेन्टर) पर जल निगम, जल संस्थान, विद्युत विभाग एवं नगर पालिका के अधिकारी व कर्मचारियों के साथ जल विहार पर्व के चलते बैठक आयोजित की गई। बैठक के दौरान प्रशासक कमाण्ड सेन्टर में तैनात कम्प्यूटर ऑपरेटर एवं संचालक से नगर में लगे सीसीटीवी कैमरे आदि के जाने में जानकारी ली गई।

गाजियाबाद में पत्नी की गला रेतकर हत्या

3 साल पहले हुई थी शादी, बेड पर मिला गला कटा शव; आरोपी फरार

गाजियाबाद । गाजियाबाद में पति ने अपनी पत्नी की गला रेतकर हत्या कर दी। दोनों की तीन साल पहले शादी हुई थी। पति उससे आए दिन झगड़ता था। कल रात में भी दोनों में झगड़ा हुआ। इसके बाद देर रात पत्नी की गला रेतकर हत्या कर दी। घटना के बाद महिला का पति घर से फरार हो गया। सूचना पर मोदी नगर थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घटना की छानबीन की। घटना मोदीनगर थाना क्षेत्र के गदाना गांव की है। मोदीनगर थाना क्षेत्र के गदाना गांव निवासी जितेंद्र टायर पंचर की दुकान चलाता है। उसकी 3 साल पहले स्वाति (26) के साथ शादी हुई थी। दोनों का एक 14 महीने का बच्चा है। पति शराब पीकर आए दिन मारपीट करता था। पत्नी कई बार शराब पीने का विरोध करती थी तो भी उसे कमरे में बंद करके मारता था। जितेंद्र प्रजापति अपने परिवार में इकलौता बेटा है, जो टायर पंचर की दुकान चलाता है। जितेंद्र के पिता और मां आशा देवी रात में बरामदे में सोए हुए थे। पंखे में मां बाप को कुछ सुनाई नहीं दिया। रात करीब 12: 00 बजे के बाद जितेंद्र का अपनी पत्नी स्वाति से झगड़ा हुआ। परिवार के लोगों ने बताया कि जितेंद्र ने रात में कमरे में बंद करके पत्नी को बेरहमी से पीटा। जितेंद्र आए दिन पत्नी स्वाती के साथ मारपीट करता था, इसलिए मां और बाप बेटे के डर के मारे कुछ बोल नहीं पाते थे। महिला का सवा साल का बेटा रात में अपने दादी आशा देवी के पास सोया हुआ था, पास में ही दादा भीम की चारपाई थी।

धार्मिक स्थल पर पेशाब करते पकड़ा गया रोडवेज कर्मचारी

हिंदू संगठनों ने की कार्रवाई की मांग, पुलिस ने आरोपी को किया गिरफ्तार

पीलीभीत । मंगलवार सुबह रोडवेज बस अड्डा परिसर में उस समय हड़कंप मच गया, जब रोडवेज का कर्मचारी शाजिद वेग धार्मिक स्थल के पास पेशाब करते हुए रंगेहाथ पकड़ लिया गया। घटना की जानकारी मिलते ही कर्मचारियों और स्थानीय लोगों में भारी आक्रोश फैल गया। गुस्साई भीड़ ने आरोपी की जमकर पिटाई कर दी। घटना की भनक लगते ही भाजपा नगर अध्यक्ष इंद्रेश सिंह चौहान मौके पर पहुँच गए। इसके बाद हिंदू संगठनों के कार्यकर्ता भी बस अड्डे पर जुट गए और आरोपी के खिलाफ सख्त कार्रवाई की मांग करते हुए जमकर नारेबाजी की सूचना पर कोतवाली पुलिस मौके पर पहुंची और आरोपी शाजिद को भीड़ से छुड़ाकर हिरासत में ले लिया। रोडवेज कर्मचारियों ने बताया कि शाजिद पहले भी इस तरह की हरकत कर चुका है, लेकिन इस बार मामला धार्मिक स्थल से जुड़ने के कारण विवाद तूल पकड़ गया।रोडवेज कर्मचारी कपिल राज ने इस घटना को गंभीर अनुशासनहीनता बताया।

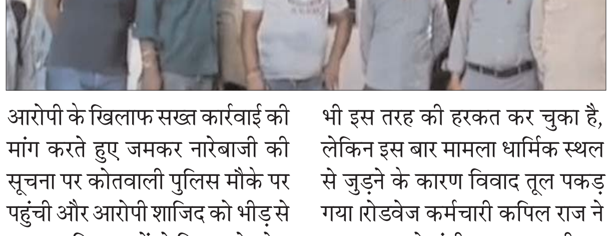

आत्मउन्नयन एवं जीवन-जागृति का पर्व है पर्युषण

ललित गर्ग

जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। इसमें जप, तप, साधना, आराधना, उपासना, अनुप्रेक्षा आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठान से जीवन को पवित्र किया जाता है। यह अंर्तआत्मा की आराधना का पर्व है- आत्मशोधन का पर्व है, निद्रा त्यागने का पर्व है। सचमुच में पर्युषण पर्व एक ऐसा सवेरा है जो निद्रा से उठाकर जागृत अवस्था में ले जाता है।

जैन धर्म में पर्युषण महापर्व का अपना विशेष महत्व है। यह केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं बल्कि आत्मा की गहराइयों तक जाने का, आत्मनिरीक्षण करने का और आत्मशुद्धि का अनूठा पर्व है। जैन संस्कृति ने सदियों से इस पर्व को आत्मकल्याण, साधना और तपस्या का महान माध्यम बनाया है। 'पर्युषण' का शाब्दिक अर्थ है- अपने भीतर ठहरना, आत्मा में रमना, आत्मा के समीप होना। इस वर्ष अन्तःकरण की शुद्धि का यह महापर्व 20 से 27 अगस्त, 2025 को मनाया जा रहा है, इन आठ दिनों में हर जैन अनुयायी अपने तन और मन को साधनामय बना लेता है, मन को इतना मांज लेता है कि अतीत की त्रुटियां को दूर करते हुए भविष्य में कोई भी गलत कदम न उठे। इस पर्व में एक ऐसा मौसम ही नहीं, माहौल भी निर्मित होता है, जो हमारे जीवन की शुद्धि कर देता है। इस दृष्टि से यह पर्व आध्यात्मिकता के साथ-साथ जीवन उत्थान का पर्व है, यह मात्र जैनों का पर्व नहीं है, यह एक सार्वभौम पर्व है। पूरे विश्व के लिए यह एक उत्तम और उत्कृष्ट पर्व है, क्योंकि इसमें आत्मा की उपासना करते हुए जीवन को शांत, स्वस्थ एवं अहिंसामय बनाया जाता है। संपूर्ण संसार में यही एक ऐसा उत्सव या पर्व है जिसमें आत्मरत होकर व्यक्ति आत्मार्थी बनता है व अलौकिक, आध्यात्मिक आनंद के शिखर पर आरोहण करता हुआ मोक्षगामी होने का सद्प्रयास करता है।

जैनधर्म की त्याग प्रधान संस्कृति में पर्युषण पर्व का अपना अपूर्व एवं विशिष्ट आध्यात्मिक महत्व है। इसमें जप, तप, साधना, आराधना, उपासना, अनुप्रेक्षा आदि अनेक प्रकार के अनुष्ठान से जीवन को पवित्र किया जाता है। यह अंर्तआत्मा की आराधना का पर्व है- आत्मशोधन का पर्व है, निद्रा त्यागने का पर्व है। सचमुच में पर्युषण पर्व एक ऐसा सवेरा है जो निद्रा से उठाकर जागृत अवस्था में ले जाता है। अज्ञानरूपी अंधकार से ज्ञानरूपी प्रकाश की ओर ले जाता है। तो जरूरी है प्रमादरूपी नींद को हटाकर इन आठ दिनों विशेष तप, जप, स्वाध्याय की आराधना करते हुए अपने आपको सुवासित करते हुए अंर्तआत्मा में लीन हो जाए जिससे हमारा जीवन सार्थक व सफल हो पाएगा।

पर्युषण का एक अर्थ है-कर्मों का नाश करना। कर्मरूपी शत्रुओं का नाश होगा तभी आत्मा अपने स्वरूप में अवस्थित होगी अतः यह पर्युषण-पर्व आत्मा का आत्मा में निवास करने की प्रेरणा देता है। यह आध्यात्मिक पर्व है, इसका जो केन्द्रीय तत्त्व है, वह है-आत्मा। आत्मा के

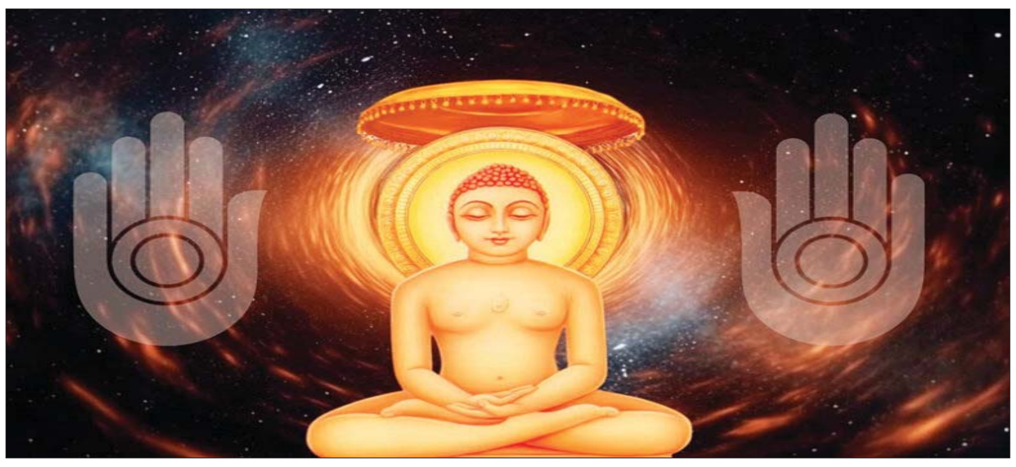

निरामय, ज्योतिर्मय स्वरूप को प्रकट करने में पर्युषण महापर्व अहं भूमिका निभाता रहता है। अध्यात्म यानि आत्मा की सन्निकटता। यह पर्व मानव-मानव को जोड़ने व मानव हृदय को संशोधित करने का पर्व है, यह मन की खिड़कियों, रोशनदानों व दरवाजों को खोलने का पर्व है। पर्युषण पर्व जैन एकता का प्रतीक पर्व है। दिगंबर परंपरा में इसकी 'दशलक्षण पर्व' के रूप में पहचान है। उनमें इसका प्रारंभिक दिन भाद्र व शुक्ला पंचमी और संपन्नता का दिन चतुर्दशी है। दूसरी तरफ श्वेतांबर जैन परंपरा में भाद्र व शुक्ला पंचमी का दिन समाधि का दिन होता है। जिसे संवत्सरी के रूप में पूर्ण त्याग-प्रत्याख्यान, उपवास, पौषध सामायिक, स्वाध्याय और संयम से मनाया जाता है। वर्ष भर में कभी समय नहीं निकाल पाने वाले लोग भी इस दिन जागृत हो जाते हैं। कभी उपवास नहीं करने वाले भी इस दिन धमार्नुष्ठान करते नजर आते हैं।

पर्युषण पर्व मनाने के लिए भिन्न-भिन्न मान्यताएं उपलब्ध होती हैं। आगम साहित्य में इसके लिए उल्लेख मिलता है कि संवत्सरी चातुर्मास के 49 या 50 दिन व्यतीत होने पर व 69 या 70 दिन अवशिष्ट रहने पर मनाई जानी चाहिए। दिगम्बर परंपरा में यह पर्व 10 लक्षणों के रूप में मनाया जाता है। यह 10 लक्षण पर्युषण पर्व के समाप्त होने के साथ ही शुरू होते हैं। यह पर्व जैन अनुयायियों के लिए संयम, साधना और आत्मसंयम का विशेष अवसर लेकर आता है। इन दिनों में जैन समाज उपवास, प्रतिक्रमण, पाठ, स्वाध्याय, सामायिक, ध्यान और पूजा के माध्यम से आत्मिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त करता है। घर-घर में धार्मिक वातावरण बनता है और हर व्यक्ति अपने जीवन की दिशा को सुधारने का प्रयत्न करता है। पर्युषण पर्व का मुख्य उद्देश्य है आत्मा को कर्मों की परतों से मुक्त करना। जीवन में चाहे जितनी भी व्यस्तता हो, इन दिनों में हर जैन श्रावक-श्राविका अपने जीवन की गति को धीमा कर आत्मचिंतन करता है। यह पर्व हमें यह सिखाता है कि बाहरी सुख-सुविधाएँ क्षणिक हैं, वास्तविक सुख भीतर है और आत्मा की शुद्धि में ही है। जब व्यक्ति अपने भीतर झाँकता है तो उसे अपने दोष, अपने अपराध और अपनी कमजोरियों का बोध होता है। इसी बोध से क्षमा और आत्मपरिवर्तन की भावना उत्पन्न होती है।

पर्युषण पर्व के अंतिम दिन 'क्षमावाणी' का आयोजन होता है, जिसे 'क्षमा दिवस' भी कहा जाता है। इस दिन हर व्यक्ति अपने परिचितों, रिश्तेदारों, मित्रों और यहां तक कि शत्रुओं से भी यह कहता है-'मिच्छामि दुक्कडम्' अर्थात् यदि मुझसे किसी को भी मन, वचन या शरीर से कोई पीड़ा पहुँची है तो मैं उसके लिए क्षमाप्रार्थी हूँ। इस प्रकार क्षमा माँगने और क्षमा करने की परंपरा से समाज में सद्भाव, प्रेम और मैत्री का वातावरण बनता है। पर्युषण पर्व आत्मसंयम और आत्मिक साधना का गहन अभ्यास है। यह पर्व हमें याद दिलाता है कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य केवल भोग-विलास और सांसारिक उपलब्धियाँ नहीं हैं, बल्कि आत्मा का उत्थान और मोक्ष की दिशा में अग्रसर होना है। यही कारण है कि इन दिनों में लोग केवल धार्मिक ग्रंथों का अध्ययन ही नहीं करते, बल्कि व्यवहारिक जीवन में भी सात्त्विकता, करुणा, अहिंसा और सहअस्तित्व को अपनाने का प्रयास करते हैं। यह पर्व हर जैन साधक के लिए एक आत्मयात्रा है। तप, संयम, स्वाध्याय और क्षमा की साधना से वह स्वयं को नया जन्म देता है।

पर्युषण पर्व एक दूसरे को अपने ही समान समझने का पर्व है। गीता में भी कहा है 'आत्मौपम्येन सर्वत्रः, समे पश्यति योर्जुन'-'श्रीकृष्ण ने अर्जुन से कहा-हे अर्जुन ! प्राणीमात्र को अपने तुल्य समझो। भगवान महावीर ने कहा-'मित्ती में सव्व भूएसु, वेरंमज्झण केणइ' सभी प्राणियों के साथ मेरी मैत्री है, किसी के साथ वैर नहीं है। मानवीय एकता, शांतिपूर्ण सह-अस्तित्व, मैत्री, शोषणविहीन सामाजिकता, अंतर्राष्ट्रीय नैतिक मूल्यों की स्थापना, अहिंसक जीवन आत्मा की उपासना शैली का समर्थन आदि तत्त्व पर्युषण महापर्व के मुख्य आधार हैं। ये तत्त्व जन-जन के जीवन का अंग बन सके, इस दृष्टि से इस महापर्व को जन-जन का पर्व बनाने के प्रयासों की अपेक्षा है। मनुष्य धार्मिक कहलाए या नहीं, आत्म-परमात्मा में विश्वास करे या नहीं, पूर्वजन्म और पुनर्जन्म को माने या नहीं, अपनी किसी भी समस्या के समाधान में जहाँ तक संभव हो, अहिंसा का सहारा ले- यही पयुर्षण की साधना का हार्द है। हिंसा से किसी भी समस्या का स्थायी समाधान नहीं हो सकता। हिंसा से समाधान चाहने वालों ने समस्या को अधिक उकसाया है। इस तथ्य को सामने रखकर जैन समाज ही नहीं आम-जन भी अहिंसा की शक्ति के प्रति आस्थावान बने और गहरी आस्था के साथ उसका प्रयोग भी करे। परलोक सुधारने की भूलभुलैया में प्रवेश करने से पहले इस जीवन की शुद्धि पर ध्यान केंद्रित होना चाहिए। धर्म की दिशा में प्रस्थान करने के लिए यही रास्ता निरापद है और यही इस पर्व की सार्थकता का आधार है, प्रतिक्रमण का प्रयोग है। पीछे मुड़कर स्वयं को देखने का ईमानदार प्रयत्न है। वर्तमान की आंख से अतीत और भविष्य को देखते हुए कल क्या थे और कल क्या होना है इसका विवेकी निर्णय लेकर एक नये सफर की शुरूआत की जाती है। यह पर्व अहिंसा और मैत्री का पर्व है। अहिंसा और मैत्री के द्वारा ही शांति मिल सकती है। आज जो हिंसा, आतंक, आपसी-द्वेष, नक्सलवाद, भ्रष्टाचार जैसी ज्वलंत समस्याएं न केवल देश के लिए बल्कि दुनिया के लिए चिंता का बड़ा कारण बनी हुई है और सभी कोई इन समस्याओं का समाधान चाहते हैं। उन लोगों के लिए पर्युषण पर्व एक प्रेरणा है, पाथेय है, मार्गदर्शन है और अहिंसक जीवन शैली का प्रयोग है।

संपादकीय

दलील पर दलील

बिहार में वोट अधिकार यात्रा कर राहुल गांधी जिस वक्त वोट चोरी का आरोप मढ़ रहे थे, ठीक उसी वक्त मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार दिल्ली में जवाबी कार्रवाई का ऐलान कर रहे थे। उन्होंने प्रेस कांफ्रेस के मार्फत से राहुल के सवालों का जवाब देते हुए आरोपों को बेबुनियादी ठहराया। बिना हलफनामा दाखिल किए, इनकी जांच नहीं होने की बात करते हुए ज्ञानेश ने कहा, यदि राहुल सात दिन के भीतर माफी नहीं मांगते तो इन आरोपों को बेबुनियादी समझा जाएगा। गांधी ने आयोग पर वोट चोरी के आरोप लगाते हुए पांच सवाल किए थे। जिनमें चुनाव आयोग द्वारा बड़े पैमाने में वोटर लिस्ट में फजीर्वाड़ा करने, भाजपा के एजेंट की तरह काम करने, मतदान के वीडियो सबूत नष्ट करनेडिजिटल फॉर्मेट में मतदाता सूची न मुहैया कराने व विपक्ष के सवालों के जवाब की बजाए उसे धमकाने के कारण पूछे थे। इसमें बिहार में चल रहे मतदाता सूची विशेष गहन पुनरीक्षण प्रक्रिया पर भी सवाल शामिल थे। आयोग का दावा है कि वह मजबूती से मतदाताओं के साथ खड़ा है। कुमार ने वोट चोरी जैसे शब्दों के प्रयोग को करोड़ों मतदाताओं व लाखों चुनाव कर्मचारियों की ईमानदारी पर हमला बताया। आयोग का दावा है कि देश के तीन लाख नागरिकों की एपिक संख्या मिलती-जुलती है। जिसके संज्ञान में आते ही बदलाव किया गया। कांग्रेस ने ज्ञानेश कुमार पर भाजपा प्रवक्ता की तरह बात करने का आरोप लगाते हुए संवैधानिक रूप से दायित्व निभाने की सलाह दी। बेशक अपनी पहली प्रेस कांफ्रेस में मुख्य संवैधानिक संस्था के मुखिया की बजाए राजनीतिक प्रतिद्वंद्वी की तरह बात करके ज्ञानेश विपक्ष के आरोपों के सटीक जवाब देने से बचते नजर आए। जल्दबाजी में उठाए गए उनके इस कदम से नाराज विपक्ष ज्ञानेश के खिलाफ महाभियोग प्रस्ताव लाने पर विचार कर रहा है। ध्यान देने वाली है कि मुख्य चुनाव आयुक्त या अन्य चुनाव आयुक्तों को अधिनियम 2023 के अनुसार उसी आधार पर हटाया जा सकता है, जिस आधार पर न्यायाधीश को हटाया जा सकता है। हालांकि विपक्ष के पास इसे पारित कराने भर की संख्या नहीं है, मगर अपनी दलील की पुष्टि के लिए वे सार्वजनिक मंच से विरोध करने में सफल होते नजर आना चाहेंगे। शीर्ष अदालत में मामला होन के चलते दोनों पक्षों को किसी तरह के आरापों-प्रत्यारोपों पर लगाम लगानी चाहिए।

चिंतन-मनन

प्राणवान प्रतिभाओं की खोज

प्रगति पथ पर अग्रसर होने के लिए तदनुरूप योग्यता एवं कर्मनिष्ठा उत्पन्न करनी पड़ती है। साधन जुटाने पड़ते हैं। कठिनाइयों से जूझने, अड़चनों को निरस्त करने और मार्ग रोककर बैठे हुए अवरोधों को हटाने के लिए साहस, शौर्य और सूझबूझ का परिचय देना पड़ता है। जो कठिनाइयों से जूझ सकता है और प्रगति की दिशा में बढ़ चलने के साधन जुटा सकता है, उसी को प्रतिभावान कहते हैं। सामुदायिक सार्वजनिक क्षेत्र में सुव्यवस्था बनाने के लिए और भी अधिक प्रखरता चाहिए। यह विशाल क्षेत्र, आवश्यकताओं और गुत्थियों की दृष्टि से तो और भी बढ़ा-चढ़ा होता है। हीन वर्ग अपने साधनों के लिए, मार्गदर्शन के लिए दूसरों पर निर्भर रहता है। यह परजीवी वर्ग ही मनुष्यों में बहुलता के साथ पाया जाता है। अनुकरण और आश्रय ही उसका स्वभाव होता है। ऐसे लोग निजी निर्धारण कदाचित ही कभी कर पाते हैं। दूसरा वर्ग-समझदार होते हुए भी संकीर्ण स्वार्थपरता से घिरा रहता है। योग्यता और तत्परता जैसी विशेषताएं होते हुए भी ऐसे लोग अपने को लोभ, अहंकार की पूर्ति के लिए ही नियोजित किए रहते हैं। वे कृपणता और कायरता के दबाव में वे पुण्य-परमार्थ की बात सोच ही नहीं पाते। अवसर मिलने पर अनुचित कर बैठते हैं और महत्व न मिलने पर अनर्थ कर बैठते हैं। वे जैसे-तैसे जी लेते हैं, पर श्रेय सम्मान जैसी किसी मानवोचित्त उपलब्धि के साथ उनका संबंध नहीं जुड़ता। उन्हें जनसंख्या का घटक भर माना जाता है। तीसरा वर्ग प्रतिभाशालियों का है। ये भौतिक क्षेत्र में कार्यरत रहते हुए अनेक व्यवस्थाएं बनाते हैं। ये अनुशासन और अनुबंधों से बंधे रहते हैं। अपनी नाव अपने बलबूते खेते हैं और उसमें बिठाकर अन्यों को भी पार करते हैं। कारखानों के व्यवस्थापक और शासनाध्यक्ष प्रायः इन्हीं विशेषताओं से सम्पन्न होते हैं। बोलचाल की भाषा में उन्हें ही प्रतिभावान कहते हैं।सबसे ऊंची श्रेणी देवमानवों की है, जिन्हें महापुरुष भी कहते हैं। प्रतिभा तो उनमें भरपूर होती हैं, पर वे उसका उपयोग आत्म परिष्कार से लेकर लोकमंगल तक उच्च स्तरीय प्रयोजनों में लगाते हैं। निजी आवश्यकताओं और महत्वाकांक्षाओं के बजाय अपने शक्ति भंडार को परमार्थ में लगाते हैं। किसी देश की सच्ची संपदा वे ही समझे जाते हैं। वे अपने कार्य क्षेत्र को नंदनवन जैसा सुवासित करते हैं। जहां भी बादलों की तरह बरसते हैं, वहीं मखमली हरीतिमा का फर्श बिछा देते हैं और वसंत की तरह अवतरित होते हैं।

अक्षय ऊर्जाः असीम शक्ति, स्वच्छ भविष्य

योगेश कुमार गोयल

देश के सतत विकास की धुरी है अक्षय ऊर्जा... पृथ्वी पर ऊर्जा के परम्परागत साधन बहुत सीमित मात्रा में उपलब्ध हैं, ऐसे में खतरा मंडरा रहा है कि यदि ऊर्जा के इन पारम्परिक स्त्रोतों का इसी प्रकार दोहन किया जाता रहा तो इन परम्परागत स्त्रोतों के समाप्त होने पर गंभीर समस्या उत्पन्न हो जाएगी। यही कारण है कि पूरी दुनिया में गैर परम्परागत ऊर्जा स्त्रोतों को बढ़ावा देने की जरूरत महसूस की जाने लगी और इसी कारण अक्षय ऊर्जा स्त्रोतों से ऊर्जा जरूरतों की पूर्ति करने के प्रयास शुरू हुए। अक्षय का अर्थ है, जिसका कभी क्षय न हो अर्थात् अक्षय ऊर्जा वास्तव में ऊर्जा का असीम और अनंत विकल्प है और आज के समय में यह किसी भी राष्ट्र के अक्षय विकास का प्रमुख स्तंभ भी है। पिछले कुछ वर्षों से पर्यावरणीय चिंताओं को देखते हुए ऐसी ऊर्जा तथा तकनीकें विकसित करने के प्रयास किए जा रहे हैं, जिनसे ग्लोबल वार्मिंग की विकराल होती समस्या से दुनिया को कुछ राहत मिल सके। किसी भी राष्ट्र को विकसित बनाने के लिए आज प्रदूषणरहित अक्षय ऊर्जा स्त्रोतों का समुचित उपयोग किए जाने की आवश्यकता भी है। देश में अक्षय ऊर्जा के विकास और उपयोग को लेकर जागरूकता पैदा करने के लिए ही वर्ष 2004 से हर साल 20 अगस्त को 'अक्षय ऊर्जा दिवस' भी मनाया जाता है।

आज न केवल भारत में बल्कि समूची दुनिया के समक्ष बिजली जैसी ऊर्जा की महत्वपूर्ण जरूरतों को पूरा करने के लिए सीमित प्राकृतिक संसाधन हैं, साथ ही पर्यावरण असंतुलन और विस्थापन जैसी गंभीर चुनौतियां भी हैं। चर्चित पुस्तक ह्यप्रदूषण मुक्त सांसेंह्व के अनुसार इन गंभीर समस्याओं और चुनौतियों से निपटने के लिए अक्षय ऊर्जा ही एक ऐसा बेहतरीन विकल्प है, जो पर्यावरणीय समस्याओं से निपटने के साथ-साथ ऊर्जा की जरूरतों को पूरा करने में भी कारगर साबित होगी लेकिन अक्षय ऊर्जा की राह में भी कई चुनौतियां मुंह बाये सामने खड़ी हैं। अक्षय ऊर्जा उत्पादन की देशभर में कई छोटी-छोटी इकाईयां हैं, जिन्हें एक ग्रिड में लाना बेहद चुनौतीपूर्ण कार्य है। इससे बिजली की गुणवत्ता प्रभावित होती है। भारत में अक्षय ऊर्जा के विविध स्त्रोतों का अपार भंडार मौजूद है लेकिन इनसे ऊर्जा उत्पादन करने वाले अधिकांश उपकरण विदेशों से आयात किए जाते हैं। नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्रालय (एमएनआरई) के अनुसार, कुछ साल पहले सौर ऊर्जा के लिए करीब 90 प्रतिशत उपकरण विदेशों से आयात किए गए थे, जिससे बिजली उत्पादन की लागत काफी बढ़ गई। 2023-24 के आंकड़ों के अनुसार, अब भी भारत की सौर सेल और मॉड्यूल की जरूरत का अधिकांश हिस्सा, कभी-कभी 90 प्रतिशत तक, आयात से ही पूरा होता रहा है। हालांकि हाल के वर्षों में एएलएमएम नियम और पीएलआई स्कीम के कारण यह निर्भरता घट रही है। 2023-24 में चीन से सौर सेल्स का 53 प्रतिशत और मॉड्यूल्स का 63 प्रतिशत भारत में आया।

देश में ऊर्जा की मांग और आपूर्ति के बीच अंतर भी तेजी से बढ़ रहा है। केन्द्रीय विद्युत प्राधिकरण (सीईए) के आंकड़ों के अनुसार देश में कुल स्थापित विद्युत उत्पादन क्षमता 450 गीगावॉट से अधिक हो चुकी है, जिसमें अब 230 गीगावॉट से अधिक अक्षय ऊर्जा से प्राप्त हो रहा है, जिसमें सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा, बायो-पावर और छोटे हाइड्रो प्रोजेक्ट्स शामिल हैं। इसके अतिरिक्त अधिक बड़ी जल विद्युत परियोजनाओं से तथा परमाणु ऊर्जा से भी अक्षय ऊर्जा का उत्पादन किया जा रहा है। कुल बिजली उत्पादन में अब अक्षय ऊर्जा का हिस्सा अब लगातार बढ़ रहा है, जो भारत को दुनिया के अग्रणी देशों में शामिल करता है।

भारत में ऊर्जा खपत भी तेजी से बढ़ रही है। अंतर्राष्ट्रीय ऊर्जा एजेंसी (आईईए) का अनुमान है कि वर्ष 2040 तक भारत में ऊर्जा की कुल मांग वर्तमान की तुलना में लगभग दोगुनी हो जाएगी। विशेषकर बिजली तथा ईंधन के रूप में उपभोग की जा रही ऊर्जा की मांग घरेलू एवं कृषि क्षेत्र के अलावा औद्योगिक क्षेत्रों में भी लगातार बढ़ रही है। औद्योगिक क्षेत्रों में ही बिजली तथा पैट्रोलियम जैसे ऊर्जा के महत्वपूर्ण स्त्रोतों का लगभग 55 प्रतिशत उपभोग किया जाता है। हम जिस बिजली से अपने घरों, दुकानों या दफ्तरों को रोशन करते हैं, जिस बिजली या पैट्रोलियम इत्यादि ऊर्जा के अन्य स्त्रोतों का इस्तेमाल कर खेती-बाड़ी या उद्योग-धंधों के जरिये देश को विकास के पथ पर अग्रसर किया जाता है, क्या हमने कभी सोचा है कि वह बिजली या ऊर्जा के अन्य स्त्रोत हमें कितनी बड़ी कीमत पर हासिल होते हैं? यह कीमत न केवल आर्थिक रूप से बल्कि पर्यावरणीय दृष्टि से भी धरती पर विद्यमान हर प्राणी पर बहुत भारी पड़ती है। भारत में थर्मल पावर स्टेशनों में बिजली पैदा करने के लिए प्रतिदिन लगभग 18 लाख टन कोयले की खपत होती है। आज भी देश की लगभग 55 प्रतिशत से अधिक बिजली कोयले से ही पैदा होती है, शेष बिजली अक्षय ऊर्जा स्त्रोतों, जल, गैस व परमाणु ऊर्जा स्त्रोतों से प्राप्त होती है।

दुनियाभर में ऊर्जा क्षेत्र में लगभग 75 प्रतिशत कार्बन उत्सर्जन बिजली उत्पादन से ही होता है। यही कारण है कि अब सौर ऊर्जा तथा पवन ऊर्जा जैसे अक्षय ऊर्जा स्त्रोतों को विशेष महत्व दिया जाने लगा है। अंतर्राष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी के अनुसार, यदि अक्षय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता पर विशेष ध्यान दिया जाए तो वर्ष 2050 तक वैश्विक ग्रीनहाउस गैस उत्सर्जन को 70 प्रतिशत तक घटाया जा सकता है। भारत ने भी 2030 तक 500 गीगावॉट गैर-जीवाश्म ईंधन आधारित ऊर्जा क्षमता हासिल करने और नेट जीरो उत्सर्जन का लक्ष्य वर्ष 2070 तक प्राप्त करने का संकल्प लिया है। अक्षय ऊर्जा स्त्रोतों के उपयोग को बढ़ावा देने से हमारी ऊर्जा की मांग और आपूर्ति के बीच का अंतर कम होता जाएगा और इससे प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूप से सामाजिक जीवन स्तर में भी सुधार होगा।

भारत में अब ग्रीन हाइड्रोजन मिशन, स्मार्ट ग्रिड, बैटरी स्टोरेज और इलैक्ट्रिक मोबिलिटी जैसे कदम भी तेजी से आगे बढ़ाए जा रहे हैं, जो अक्षय ऊर्जा को व्यावहारिक और टिकाऊ बनाएंगे। ग्रीन हाइड्रोजन मिशन के तहत वर्ष 2030 तक 5 मिलियन मीट्रिक टन उत्पादन का लक्ष्य रखा गया है, जिससे भारत न केवल अपनी ऊर्जा जरूरतों को पूरा करेगा बल्कि निर्यातक देश भी बन सकेगा। सही मायने में अक्षय ऊर्जा ही आज भारत में विभिन्न रूपों में ऊर्जा की जरूरतों का प्रमुख विकल्प है, जो पर्यावरण के अनुकूल होने के साथ-साथ टिकाऊ भी है। भारत धीरे-धीरे ही सही, अब इस दिशा में आगे बढ़ रहा है और आज समय है कि हम आर्थिक बदहाली और भारी पर्यावरणीय विनाश की कीमत पर ताप, जल एवं परमाणु ऊर्जा जैसे पारम्परिक ऊर्जा स्त्रोतों पर निर्भर रहने के बजाय अपेक्षाकृत बेहद सस्ते और कार्बन रहित पर्यावरण हितैषी ऊर्जा स्त्रोतों के व्यापक स्तर पर विकास के मार्ग पर तेजी से आगे बढ़ें। साथ ही हमें ऊर्जा की बचत की आदतें भी अपनानी होंगी क्योंकि ऊर्जा का विवेकपूर्ण उपयोग ही हमें सुरक्षित, समृद्ध और स्वच्छ भविष्य की ओर ले जाएगा।

(लेखक साढ़े तीन दशक से पत्रकारिता में सक्रिय वरिष्ठ पत्रकार, पर्यावरण मामलों के जानकार और 'प्रदूषण मुक्त सांसें' पुस्तक के लेखक हैं)

मुद्दा : कार्यस्थल पर मयार्दा ही असली परीक्षा

प्रियंका सौरभ

शिक्षण संस्थान केवल पढ़ाई-लिखाई की जगह नहीं होते, बल्कि समाज का आईना और भविष्य का निर्माण स्थल होते हैं। यहां का वातावरण सीधे तौर पर बच्चों की सोच, शिक्षकों की प्रेरणा और पूरे संस्थान की प्रतिष्ठा को प्रभावित करता है।

एक स्वस्थ और सम्मानजनक कार्यस्थल कोई विलासिता नहीं, बल्कि बुनियादी आवश्यकता है। विशेष रूप से महिला शिक्षिकाओं और महिला कर्मचारियों के लिए यह सुनिश्चित करना कि वे अपने कार्यस्थल पर सुरक्षित और सम्मानित महसूस करें, किसी भी संस्थान की सर्वोच्च प्राथमिकता होनी चाहिए।

हाल के वर्षो में कई घटनाएं सामने आई हैं, जहां महिला शिक्षिकाओं ने अपने ही सहयोगियों या वरिष्ठ अधिकारियों द्वारा किए गए अनुचित व्यवहार, अशोभनीय संदेश और निजी तौर पर अनुचित हरकतों की शिकायत की है। देशभर से समय-समय पर ऐसी खबरें आती रही हैं-कभी खाली पीरियड में एकांत में लंबी बातचीत, कभी व्यक्तिगत नंबर पर अनावश्यक और निजी संदेश, कभी नजर और शब्दों से अपमानजनक संकेत, तो कभी काम में मदद या पदोन्नित के बदले अनुचित मांग। ये सब केवल व्यक्तिगत आचरण की गड़बड़ी नहीं हैं, बल्कि कार्यस्थल की गरिमा और सुरक्षा को तोड़ने वाली गंभीर प्रवृत्तियां हैं। ऐसी घटनाएं केवल एक महिला के मानसिक स्वास्थ्य को चोट नहीं पहुंचातीं, बल्कि पूरे वातावरण को विषैला बना देती हैं। असुरक्षा का भाव महिला शिक्षिकाओं के आत्मविास को कमजोर करता है। महिलाओं की कार्यस्थल पर सुरक्षा सुनिश्चित करने के लिए भारत में यौन उत्पीड़न (कार्यस्थल पर) अधिनियम, 2013 यानी 'पॉश अधिनियम' लागू है। इसके तहत प्रत्येक संस्थान में आंतरिक शिकायत समिति का गठन अनिवार्य है, जिसकी अध्यक्ष महिला हो और आधे से अधिक सदस्य महिलाएं हों। शिकायत दर्ज होने पर सात कार्य दिवस में प्रारंभिक सुनवाई और नब्बे दिनों में जांच पूरी करनी होती है। दोषी पाए जाने पर प्रशासनिक और अनुशासनात्मक कार्रवाई की जा सकती है। शिकायतकर्ता के साथ किसी भी प्रकार के प्रतिशोध को रोकना भी संस्थान की जिम्मेदारी है। दुर्भाग्य से, अनेक स्थानों पर यह समिति केवल कागजों में ही सीमित रहती है।

समाधान केवल सजा देने में नहीं, बल्कि रोकथाम में है। इसके लिए कुछ बुनियादी कदम हर शैक्षणिक संस्थान में तुरंत लागू किए जाने चाहिए। महिला शिक्षिकाओं के लिए अलग और सुरक्षित स्टाफ रूम होना चाहिए, ताकि वे अपने कार्य से जुड़ी चचाएं और आवश्यक बातचीत आराम से कर सकें। महिला कर्मचारियों और छात्राओं के लिए अलग, स्वच्छ और सुरक्षित शौचालय की व्यवस्था हो। परिसर के प्रमुख स्थानों, गलियारों, प्रवेश-द्वारों, खेल के मैदान और कॉमन एरिया में उच्च गुणवत्ता वाले कैमरे लगाए जाएं और वे हमेशा सक्रिय रहें। फुटेज को कम से कम नब्बे दिनों तक सुरक्षित रखा जाए और केवल अधिकृत व्यक्तियों को ही उसकी पहुंच हो।

खाली पीरियड में महिला और पुरु ष शिक्षक अपने-अपने स्टाफ रूम में ही रहें। बिना किसी औपचारिक कार्य के, एकांत में लंबे समय तक बैठना या बातचीत करना प्रतिबंधित हो। शिक्षकों और सहकर्मियों के बीच निजी संदेश केवल कार्य संबंधी हों और वह भी कार्य समय में ही भेजे जाएं। संस्थान में ऐसा गोपनीय तंत्र हो जहां पीड़ित बिना डर और शर्म के शिकायत दर्ज करा सके। यह ऑनलाइन पोर्टल, सीलबंद शिकायत बॉक्स या हेल्पलाइन नंबर के रूप में हो सकता है। शिकायत आने पर तुरंत जांच हो, आरोपी और पीड़ित को अलग किया जाए और दोषी पाए जाने पर बिना देरी कड़ी कार्रवाई की जाए। शिकायतकर्ता की गोपनीयता की रक्षा संस्थान की सर्वोच्च जिम्मेदारी होनी चाहिए। महिला सुरक्षा केवल कानूनी या प्रशासनिक मामला नहीं है, यह सामाजिक सोच का भी मुद्दा है। हमें अपने बच्चों को यह सिखाना होगा कि कार्यस्थल पर सम्मान, मयार्दा और सीमाएं क्या होती हैं। स्कूलों में लैंगिक संवेदनशीलता और आत्मसम्मान पर आधारित विशेष कक्षाएं शुरू की जानी चाहिए।

समाज को यह समझना होगा कि महिला सुरक्षा किसी एक वर्ग का मुद्दा नहीं, बल्कि पूरे समाज और देश की गरिमा का प्रश्न है। सुरक्षित कैंपस और सम्मानजनक

कार्यस्थल कोई आदशवार्दी कल्पना नहीं, बल्कि शिक्षा की गुणवत्ता और संस्थान की विसनीयता का आधार है। यह केवल महिला का मुद्दा नहीं, बल्कि हर उस व्यक्ति का मुद्दा है जो अपने कार्यस्थल को गरिमा और मयार्दा से भरपूर देखना चाहता है।

अगर हम अब भी चुप रहे तो अगली घटना का इंतजार करना पड़ेगा और तब तक किसी का आत्मविश्वास, किसी का करियर और किसी की जिंदगी बर्बाद हो चुकी होगी। अब समय है चुप्पी तोड़ने का-नियम बनाने का, उन्हें कड़ाई से लागू करने का और हर शैक्षणिक संस्थान को सचमुच सुरक्षित और सम्मानजनक कार्यस्थल बनाने का। यह हर शिक्षक, हर कर्मचारी, हर छात्र और पूरे समाज की जिम्मेदारी है। तभी हम आने वाली पीढ़ी को न केवल किताबों का ज्ञान, बल्कि जीवन की सबसे बड़ी सीख- सम्मान और सुरक्षा-भी दे पाएंगे।

वोटर अधिकार यात्रा के दौरान राहुल गांधी की गाड़ी के नीचे आया पुलिसकर्मी

मेरठ (एजेंसी)। नवादा (ईएमएस)। बिहार के नवादा में वोटर अधिकार यात्रा के दौरान राहुल गांधी की गाड़ी के नीचे सुरक्षा में तैनात एक पुलिसकर्मी आया। वहां मौजूद अन्य सुरक्षाकर्मियों ने खींचकर पुलिसकर्मी को बाहर निकाला। राहुल गांधी ने भी उनका हालचाल पूछा।

वोटर लिस्ट रिवीजन (एसआईआर) के खिलाफ वोटर अधिकार यात्रा के तीसरे दिन राहुल गांधी गया से नवादा पहुंचे। उन्होंने कहा, चुनाव आयोग और बीजेपी के बीच समझौता है। ये मिलकर वोट चोरी कर रहे हैं। नरेंद्र मोदी, अमित शाह और चुनाव आयुक्त मिलकर आपसे वोट छीन रहे हैं। वहीं राजद नेता तेजस्वी ने कहा, आप लोग आने वाले आम चुनाव में महागठबंधन की सरकार बनाइए और राहुल गांधी को देश का अगला प्रधानमंत्री। फिलहाल, राहुल गांधी की यात्रा नवादा के आईटीआई कॉलेज कैंपस में रुकी है। यात्रा के दौरान भाजपा नेताओं ने हिसुआ पुलिस थाने से राहुल गांधी मुर्दाबाद के नारे लगाए। राहुल ने गाड़ी रुकवाकर उन्हें थम्स-अप किया, फिर फ्लाइंग किस देकर मुस्कुराते हुए आगे निकल गए। गया के रसलपुर में कुछ महिलाएं पूजा की थाली, लोटे में जल और नारियल लेकर राहुल गांधी का स्वागत करने पहुंचीं।

फ्लाइट में यात्री ने सुलगाई सिगरेट, अलार्म बजते ही मच गया हड़कंप

लखनऊ (एजेंसी)। लखनऊ-मुम्बई फ्लाइट का एक यात्री माचिस-सिगरेट समेत विमान में पहुंच गया और टॉयलेट में सिगरेट सुलगा ली। तुरंत फायर अलार्म बज उठे। इससे हड़कंप मच गया। घटना 16 अगस्त की है। बता दें कि स्वाधीनता दिवस के चलते सुरक्षा सख्त थी। फिर ज्वलनशील पदार्थ तो दूर की बात, सिक्योरिटी चेक में 100 मिली से ज्यादा पानी या तरल पदार्थ भी ढूंढ़कर निकलवा दिया जाता है। ऐसे में यह सवाल उठ रहा है कि हाई सिक्योरिटी अलर्ट में तो तीन स्तरों पर जांच हो रही है। विमान में प्रवेश से पहले सेकंड लैडर प्वाइंट जांच भी की जा रही है। फिर भी माचिस कैसे पकड़ में नहीं आई। एयरपोर्ट सूत्रों के अनुसार, एयर इंडिया की फ्लाइट एआई 2492 उड़ान भरने को तैयार थी। यह दिन में 2:05 बजे उड़ान भरने के बाद मुम्बई एयरपोर्ट पर शाम 4:37 बजे लैंड करती है। एक सहयात्री ने बताया कि एक यात्री कुलदीप सिंह अपनी पत्नी अंशु और पुत्र ध्रुव के साथ यात्रा कर रहा था। बोर्डिंग खत्म होते ही वह सीट से उठकर चला गया। थोड़ी ही देर में फायर अलार्म बजने लगा। केबन क्रू टॉयलेट की ओर दौड़ पड़े। यात्री घबरा गए कि कहीं आग तो नहीं लग गई। एयरपोर्ट सूत्रों के अनुसार कुलदीप किसी तरह माचिस का मसाला वाला हिस्सा और तिल्ली भीतर तक ले जाने में सफल रहा था। उसे सिगरेट की तलब लगी तो प्लेन के टॉयलेट में पहुंच कर सुलगा ली। उसे अंदाजा नहीं था कि जरा से धुएं पर फायर अलार्म बज जाएंगे। आनन-फानन में क्रू सदस्यों ने टॉयलेट का दरवाजा खटखटा कर यात्री को बाहर बुलाया। इसके बाद पायलट को इसकी सूचना दी। प्लेन के क्रू ने कैप्टन के निर्देश पर कुलदीप को विमान से उतार दिया। उसके साथ यात्रा कर रहा परिवार ऐसे में खुद ही कुलदीप के साथ उतर गया। यात्री के साथ चेकइन बैगेज भी था। उसे भी उतार दिया गया।

निशिकांत दुबे का गंभीर आरोप- कांग्रेस ने इसरो मिशन को कमजोर किया

नई दिल्ली (एजेंसी)। संसद के मानसून सत्र में मंगलवार को भी हंगामा जारी रहा। लोकसभा और राज्यसभा में वोटर वेरिफिकेशन और वोट चोरी के मुद्दे पर विपक्ष ने जोरदार नारेबाजी की। इसी बीच लोकसभा में भाजपा सांसद निशिकांत दुबे ने कांग्रेस पर गंभीर आरोप लगाए। उन्होंने कहा कि कांग्रेस सरकार ने सत्ता में रहते हुए अमेरिका, चीन और पाकिस्तान के दबाव में भारत के अंतरिक्ष मिशन (इसरो) को कमजोर किया। भाजपा सांसद दुबे ने कहा, कि कांग्रेस ने केरल के प्रसिद्ध इसरो वैज्ञानिक नंबी नारायणन को 1994 में सीबीआई के जरिए गलत तरीके से गिरफ्तार कराया। इस साजिश से भारत के अंतरिक्ष कार्यक्रम को भारी नुकसान हुआ। उन्होंने दावा किया कि कांग्रेस अब भी नहीं चाहती कि इस विषय पर सदन में चर्चा हो। इससे पहले स्पीकर ओम बिरला ने प्रश्नकाल चलाने की कोशिश की। कृषि मंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कुछ सवालों के जवाब भी दिए। लेकिन विपक्ष की नारेबाजी और हंगामे के चलते कार्यवाही बाधित रही। अंततः लोकसभा और राज्यसभा—दोनों सदनों की कार्यवाही 20 अगस्त सुबह 11 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई।

निमिषा प्रिया के नाम पर फ्रॉड...फर्जी बैंक खाते में पैसा डोनेट करने की मांग

नई दिल्ली (एजेंसी)। यमन में भारतीय निमिषा प्रिया को मौत की सजा से बचाने के लिए लगातार कोशिश जारी हैं। बीते दिनों केरल के उलेमा ने भी मामले में दखल दिया था और यमन में अपने संपर्कों का इस्तेमाल कर मध्यस्थता कराने का प्रयास किया था। इसके बाद भी मृतक तलाल आबदो मेहदी के परिजन निमिषा प्रिया की माफी के लिए राजी नहीं हैं।

तलाल के भाई ने लंबी पोस्ट लिखकर यमन सरकार से मांग की है कि निमिषा प्रिया को जल्दी ही मौत की सजा दी जाए। इस बीच सोशल मीडिया पर नए दावे के साथ निमिषा प्रिया के नाम पर फ्रॉड जारी है। यही नहीं दावा ईसाई धर्म के प्रचारक कहलाने वाले डॉ. एके पॉल नाम के ट्विटर अकाउंट से हो रहा है। इसमें सेव निमिषा प्रिया के नाम से पोस्टर डिजाइन कर दावा किया गया है कि विदेश मंत्रालय के खाते में आप रकम जमा करा सकते हैं ताकि निमिषा को बचाया जा सके। ट्वीट में कहा गया है, 'निमिषा प्रिया को बचाने के लिए सीधे भारत सरकार के बैंक खाते में डोनेट करें। हमें 8.3 करोड़ रुपये की जरूरत है।' इतना ही नहीं फर्जी दावे में अकाउंट नंबर भी दिया गया है, जो भारतीय स्टेट बैंक का है। इस बैंक खाते को भारतीय विदेश मंत्रालय का अकाउंट बताया गया है। अब इस मामले पर विदेश मंत्रालय ने सच्चाई बताकर जनता से अपील की है कि यह फर्जी है और इसतरह से किसी भी झांसे में न आएं।

प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, राहुल गांधी किसी हमले से नहीं डरते... सरकार को अपनी जिम्मेदारियां निभानी चाहिए

नई दिल्ली (एजेंसी)। बिहार में मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) और कथित वोट चोरी के मुद्दे को लेकर विपक्षी दल चुनाव आयोग पर हमलावार दिख रहे है। इसी बीच कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाड्रा ने चुनाव आयोग और भाजपा पर निशाना साधकर कहा कि राहुल गांधी किसी हमले से नहीं डरते। उन्होंने कहा कि सरकार को अपनी जिम्मेदारियां निभानी चाहिए और अतीत की बात करना बंद करना चाहिए। एसआईआर क्यों किया जा रहा है, इसका जवाब दें।

कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने कहा, इन 10-11 सालों में ऐसी बहुत सी चीजें हैं, जिसमें उन्होंने (भाजपा) नेहरू की गलती बताकर अपना पल्ला झाड़ लिया। जबकि उन्हें अपनी जिम्मेदारियां निभानी चाहिए, अतीत की बात करना बंद करना चाहिए। आज जो हो रहा है उस पर बात करें, एसआईआर क्यों किया जा रहा है इसका जवाब दें, वोट चोरी के मुद्दे पर बात करें। प्रियंका गांधी वाड्रा ने राहुल गांधी का बचाव कर कहा कि वे किसी हमले से नहीं डरते....बिल्कुल पीछे नहीं हटने वाले है।

कांग्रेस सांसद प्रियंका गांधी वाड्रा ने शपथ पत्र के मामले पर कहा, सबसे बड़ी शपथ हम लोकसभा में लेते हैं। ये जो हलफनामा मांग रहे हैं, ये सब बेकार की बात है। जैसे ही हलफनामा आएगा, वे कहना शुरु कर देंने वाले हैं कि ये 45 दिन बाद दिया था, इसलिए रदद कर रहे है। ये सब बकवास है, सच्चाई सबके सामने है, सच्चाई का जवाब दें। ये सब क्यों हुआ? 100-100 लोग जीरो पते पर क्यों हैं, इतने लोग एक पते पर कैसे हैं? पहले राहुल गांधी जो सवाल उठा रहे हैं, उसका जवाब दें।

इसके पहले कांग्रेस अध्यक्ष और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे ने कहा, हम वोट चोरी के खिलाफ हैं और जनता को संदेश दे रहे हैं कि आपके साथ अन्याय हो रहा है। हम चाहते हैं कि जनता को पता चले कि अगर कोई वोट चोरी करके सरकार में आता है, तब यह लोकतंत्र के लिए ठीक नहीं है। ये संविधान की हत्या है। चुनाव आयोग हमें डरा-धमका रहे है कि 7 दिन में जवाब दें। ये उनका हथियार है। हमारे पास भी हथियार हैं, जिन्हें हम समय आने पर इस्तेमाल करने वाले है।

हिमाचल के मंत्री विक्रमादित्य कर रहे दूसरी शादी, 22 सितंबर को चंडीगढ़ में होगा रिसेप्शन

शिमला (एजेंसी)। हिमाचल प्रदेश के पीडब्ल्यूडी मंत्री और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष प्रतिभा सिंह के बेटे विक्रमादित्य सिंह फिर से शादी करने जा रहे हैं। उनकी शादी 22 सितंबर को चंडीगढ़ में होगी। हिमाचल के पूर्व सीएम वीरभद्र सिंह के बेटे विक्रमादित्य सिंह की शादी पंजाब की अमरीन कौर से तय हुई है। अमरीन पंजाब यूनिवर्सिटी में असिस्टेंट प्रोफेसर हैं। चंडीगढ़ के सेक्टर 2 में शादी की रिसेप्शन होगा। इस शादी के कार्ड भी बंट चुके हैं। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक अमरीन कौर चंडीगढ़ निवासी सरदारनी ओपिंदर कौर एवं सरदार जोतिंदर सिंह सेखों की सुपुत्री हैं। विवाह समारोह चंडीगढ़ स्थित निवास में होगा। सुबह 10 बजे शादी के कार्यक्रम शुरू होंगे, जिसके बाद दोपहर 1 बजे लंच होगा। विक्रमादित्य सिंह का उनकी पहली पत्नी से तलाक हो चुका है। दिवंगत पूर्व सीएम वीरभद्र सिंह के सुपुत्र विक्रमादित्य सिंह की यह दूसरी शादी है। उनकी पहली शादी 8 मार्च 2019 को राजस्थान के मेवात वंश की राजकुमारी सुदर्शना सिंह के साथ हुई थी। यह विवाह उदयपुर के कानोता गांव स्थित कनोतागढ़ पैलेस में हुआ था। हालांकि, वैवाहिक संबंधों में खटास आने के बाद मामला जयपुर फैमिली कोर्ट में विचाराधीन रहा। बाद में दोनों का तलाक हो गया। मीडिया रिपोर्ट के मुताबिक इस शाही शादी समारोह में देश-प्रदेश के कई दिग्गज नेता और विशिष्ट व्यक्ति शामिल होंगे। विक्रमादित्य सिंह वर्तमान में हिमाचल प्रदेश सरकार में लोक निर्माण मंत्री हैं। विक्रमादित्य सिंह साल 2024 में लोकसभा चुनाव भी लड़ चुके हैं। उन्हें कांग्रेस ने मंडी सीट पर कंगना रनौत के खिलाफ टिकट दिया था। हालांकि उन्हें हार का सामना करना पड़ा।

पीएम मोदी ने की विपक्षी दलों से अपील, उम्मीदवार के लिए राधाकृष्णन का करें समर्थन

नई दिल्ली, (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी ने विपक्षी दलों से अपील की है कि वे उपराष्ट्रपति चुनाव में एनडीए के उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन का समर्थन करें ताकि नए राज्यसभा सभापति का चुनाव महासमिति के जरिए से हो सके। पीएम मोदी ने कहा कि राजनाथ सिंह इस संबंध में सभी दलों के नेताओं से मुलाकात कर रहे हैं। नई दिल्ली में एनडीए संसदीय दल की बैठक में मंगलवार को उन्होंने महाराष्ट्र के राज्यपाल और उपराष्ट्रपति पद के एनडीए उम्मीदवार सीपी राधाकृष्णन को सम्मानित भी किया। इस दौरान पीएम मोदी ने एनडीए सांसदों से राधाकृष्णन का औपचारिक परिचय भी करवाया।

पीएम मोदी ने कहा कि सीपी राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति पद के लिए एक उत्कृष्ट पसंद हैं। उन्होंने बिना किसी विवाद के जीवन जिया है और बहुत ही विनम्र स्वभाव के व्यक्ति हैं। संसद में एनडीए सांसदों की बैठक बुलाई गई थी। वहां राधाकृष्णन के बारे में उन्होंने सांसदों से कहा कि सीपी राधाकृष्णन ओबीसी समाज से आने वाले जमीनी नेता हैं, बेहद सहज स्वभाव के हैं और राजनीति को खेल की तरह नहीं लेते।

पीएम मोदी ने सिंधु जल समझौता के बहाने देश के पहले पीएम पंडित जवाहर लाल नेहरू पर हमला बोला और कहा कि पहले देश का बंटवारा किया फिर पानी का भी बंटवारा कर दिया और समझौते के तहत पाकिस्तान को 80 फीसदी पानी दे दिया। पीएम ने कहा कि वह फैसला किसान विरोधी था। इस बैठक में पीएम मोदी के अलावा कई केंद्रीय मंत्री समेत एनडीए के शीर्ष नेता मौजूद थे। राधाकृष्णन उपराष्ट्रपति पद के चुनाव के लिए अपना नामांकन बुधवार को दाखिल कर सकते हैं। बीजेपी की अगुवाई वाले एनडीए को लोकसभा और राज्यसभा के सांसदों वाले निर्वाचक मंडल में पूर्ण बहुमत मिला है, ऐसे में राधाकृष्णन की जीत तय मानी जा रही है। इस बीच, विपक्षी गठबंधन 'इंडिया' से संकेत मिल रहे हैं कि वह अपना उम्मीदवार उतारेगा और चुनाव लड़ेगा। बीजेपी नेता राधाकृष्णन (67) तमिलनाडु से ताल्लुक रखते हैं और महाराष्ट्र के राज्यपाल हैं।

पीएमपीएसई के अन्तर्गत उच्च जोखिम समूह गणना हेतु प्रथम कैब बैठक का आयोजन

अवधेश तिवारी । दबंग इंडिया

रायबरेली। टी0सी0आई0 फाउण्डेषन व जिला क्षय रोग विभाग के संयुक्त तत्वावधान में जनपद में चल रही लक्षित हस्तक्षेप परियोजना के अन्तर्गत जनपद के जिला चिकित्सालय रायबरेली के टेलीमेडीसिन सेन्टर में सामुदायिक सलाहकार समिति की प्रथम बैठक का आयोजन डा0 रिजवान, उप जिला क्षयरोग अधिकारी की अध्यक्षता में किया गया। बैठक में मुख्य चिकित्सा अधिकारी डा0 नवीन चन्द्रा, जिला विधिक सेवा प्राधिकरण के सचिव अनुपम शौर्य, समस्त परामर्षदाता आईसीटीसी, पीपीटीसीटी, एसटीआई, चिकित्साधिकारी एआरटी सेन्टर, नोडल अधिकारी एआरटी सेन्टर रायबरेली तथा टीसीआई फाउन्डेषन रायबरेली की

कार्यक्रम प्रबन्धक तमन्ना आफरीन, काउन्सलर, एकाउन्टेट, आउटरीच वर्कर, पीयर एजुकेटर व स्टेकहोल्डर आदि उपस्थित रहे। जनपद में उ0प्र0 राज्य एड्स नियंत्रण सोसाइटी लखनऊ के सहयोग से एच0आई0वी0/एड्स से सुरक्षा तथा बचाव हेतु लक्षित हस्तक्षेप परियोजना संचालित है। जिसके अन्तर्गत जनपद में सामुदायिक सलाहकार बोर्ड (कैब) का गठन करके उच्च जोखिम समूहों तथा उनके ग्राहकों की गणना करके जोखिम आंकलन करना है। कैब के गठन का मुख्य उद्देष्य चयनित राज्यों में भौतिक स्थल पर और नेटवर्क ऑपरेटरों से संबद्ध यौनकर्मियों के उच्च जोखिम समूह और ग्राहकों के आकार का अनुमान लगाना तथा भौतिक स्थलों पर जाने वाले और नेटवर्क संचालकों से जुड़े यौनकर्मियों के ग्राहकों की प्रोफाइल को समझना है इसके साथ ही साथ पीएमपीएसई के दौरान आने वाली समस्याओं का निस्तारण भी करना है। बैठक में पीएमपीएसई के अन्तर्गत किए जाने वाले कार्यों के बारे में सभी सदस्यों को विस्तार से बताााया गया तथा विभिन्न प्रकार के प्रारूपों के बारे में विस्तार से चर्चा की गयी। बैठक के अन्त में सभी को धन्यवाद ज्ञापित कर बैठक का समापन किया गया।

प्रवासी मजदूरों के लिए ममता बनर्जी की श्रमश्री योजना

– हर महीने मिलेंगे 5 हजार रुपए

कोलकाता (एजेंसी) पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी ने आगामी विधानसभा चुनावों से पहले प्रवासी मजदूरों के लिए श्रमश्री योजना की घोषणा की है। इस योजना के तहत, जो मजदूर दूसरे राज्यों से वापस बंगाल लौटना चाहते हैं, उन्हें 12 महीने तक या रोजगार मिलने तक 5,000 प्रति माह की आर्थिक सहायता दी जाएगी। राज्य सचिवालय में पत्रकारों से बातचीत में ममता बनर्जी ने कहा कि इस योजना को कैबिनेट से मंजूरी मिल गई है और इसका उद्देश्य प्रवासी मजदूरों का पुनर्वास करना है। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी शासित राज्यों में बंगाली मजदूरों पर योजनाबद्ध तरीके से हमले हो रहे हैं और उन्हें वहां से जबरन भगाया जा रहा है। मुख्यमंत्री ने कहा कि लगभग 22 लाख प्रवासी मजदूर और उनके परिवार ऐसे उत्पीड़न का सामना कर रहे हैं, विशेष रूप से उन राज्यों में जहां 'डबल इंजन' की सरकारें हैं। इस राजनीतिक टकराव के बीच, ममता बनर्जी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के 22 अगस्त को कोलकाता दौरे में शामिल न होने का निर्णय लिया है। पीएम मोदी कोलकाता में तीन मेट्रो प्रोजेक्ट्स का उद्घाटन करने वाले हैं, जिसके लिए केंद्रीय रेल मंत्री अश्विनी वैष्णव ने ममता को आमंत्रित किया था। हालांकि, ममता बनर्जी ने स्पष्ट कर दिया है कि वे बीजेपी नेताओं के साथ मंच साझा नहीं करेंगी। इस घोषणा और बयानबाज़ी को चुनावी रणनीति के तौर पर देखा जा रहा है, जिससे तृणमूल कांग्रेस राज्य में मजदूर वर्ग को अपने पक्ष में करने की कोशिश कर रही है।

महाराष्ट्र में बारिश के कहर पर बोले सीएम फडणवीस- नदियों का जलस्तर खतरनाक स्तर पर

–7 की मौत, मुंबई में कमर तक भरा पानी, बचाव व राहत कार्य जारी

मुंबई (एजेंसी)। बीते 5 दिनों से महाराष्ट्र में हो रही भारी बारिश की वजह से देश की आर्थिक नगरी मुंबई बेहाल हो गई है। सीएम फडवीस ने कहा कि कुछ नदियों का जलस्तर खतरनाक स्तर पर पहुंच गया है। पिछले 24 घंटों में रिकॉर्ड बारिश दर्ज की गई है। इसकी वजह से कई इलाकों में कमर भर पानी जमा हो चुका है। इससे न केवल यातायात बाधित हुई है बल्कि आम जनजीवन अस्त व्यस्त हो चुका है। स्कूल कॉलेजों में जहां छुट्टी कर दी गई है, वहीं विमानों की उड़ानों पर भी बुरा असर पड़ा है।

मौसम विभाग ने आज भी रेड अलर्ट जारी किया है। राज्य के कई हिस्सों में लगातार हो रही बारिश के कारण सात लोगों की मौत हो गई है। उन्होंने बताया कि लगातार बारिश से नांदेड़ जिले में 200 से अधिक ग्रामीण फंसे हुए हैं जिसके कारण अधिकारियों को बचाव और राहत कार्यों के लिए सेना को तैनात करना पड़ा है। राज्य सचिवालय में एक बैठक में बारिश की स्थिति की समीक्षा के बाद फडणवीस ने सोशल मीडिया मंच 'एक्स' पर पोस्ट किया, अब तक सात लोगों की जान जा चुकी है। कोंकण में कुछ नदियों का जलस्तर खतरनाक स्तर तक पहुंच गया है और जलगांव में भारी नुकसान हुआ है। उन्होंने कहा, अलमाटी बांध पर कर्नाटक सरकार के साथ लगातार समन्वय जारी है। सीएम देवेंद्र फडणवीस ने कहा कि उन्होंने मंत्रालय स्थित राज्य आपातकालीन परिचालन केंद्र में राज्य भर में वर्षा की स्थिति की समीक्षा की। उन्होंने कहा, रत्नागिरी, रायगढ़ और हिंगोली में भारी बारिश दर्ज की गई है। मौसम विभाग ने 17-21 अगस्त तक भारी बारिश की चेतावनी दी है और पूरी तरह सतर्क रहने के निर्देश दिए गए हैं।

उन्होंने बताया कि छत्रपति संभाजीनगर मंडल में 800 गांव भारी बारिश से प्रभावित हैं। विदर्भ में लगभग दो लाख हेक्टेयर से ज़्यादा फसल बर्बाद होने की खबर है। फडणवीस ने कहा, मुंबई में आठ घंटों में 170 मिलीमीटर बारिश हुई। यहां 14 जगहों पर जलभराव हुआ, लेकिन केवल दो जगहों पर यातायात बाधित हुआ। रेलवे और मेट्रो सेवाओं का परिचालन सुचारू हैं। अगले 10-12 घंटे बेहद अहम हैं। स्थानीय निकायों को अवकाश घोषित करने का अधिकार दिया गया है। सीएम फडणवीस ने इससे पहले संवाददाताओं को बताया था कि मुंबई से करीब 600 किलोमीटर दूर नांदेड़ जिले के मुखेड़ तालुका से पांच लोग लापता बताए गए हैं। उन्होंने कहा कि तालुका में स्थित महाराष्ट्र और तेलंगाना के बीच अंतर-राज्यीय सिंचाई परियोजना लेंडी बांध के जल स्तर में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है, जबकि लातूर, उदगीर और पड़ोसी कर्नाटक से बड़ी मात्रा में पानी इस क्षेत्र में छोड़ा जा रहा है।

मुंबई और केरल के वकील आ रहे हैं, संवेदनशील मुद्दों पर राजनीति कर रहे : मुख्यमंत्री सरमा

गुवाहाटी (एजेंसी)। असम के मुख्यमंत्री हिमंत बिस्वा सरमा ने हाल ही में राज्य में संवेदनशील मुद्दों पर राजनीति और बाहर से आ रहे लोगों के बारे में कुछ अहम टिप्पणियां की हैं। मुख्यमंत्री सरमा ने कहा कि कुछ अजीबो-गरीब लोग, जिसमें मुंबई और केरल के वकील शामिल हैं, असम आ रहे हैं। सीएम सरमा ने इन लोगों को कट्टरपंथी बताकर आरोप लगाया कि वे संवेदनशील मुद्दों पर राजनीति कर रहे हैं। सरमा के अनुसार, ये वहीं लोग हैं जो एनआरसी (एनआरसी) अपडेट के समय भी आए थे और उन्होंने पूरी प्रक्रिया को खराब कर दिया था।

उन्होंने दावा किया कि इन लोगों ने एक जैसे नामों का फायदा उठाकर इसतरह के लोगों के नाम झूठे तरीके से दर्ज करवाए जो सूची में शामिल होने के योग्य नहीं थे। मुख्यमंत्री सरमा ने हर्ष मंदर जैसे लोगों पर भी निशाना साधकर आरोप लगाया कि झूठे रिश्तेदारों को बनाने का काम उनके दिमाग की उपज है। सरमा ने कहा कि पिछले पांच सालों में उन्हें कई ऐसी गड़बड़ियां मिली हैं और अब वे इन मामलों को सुप्रीम कोर्ट के सामने पेश करुंगा।

उन्होंने साफ किया कि अगर ये लोग सीमा पार करते हैं, तब उन्हें गिरफ्तार किया जाएगा, क्योंकि असम सरकार किसी भी तरह की कट्टरपंथी गतिविधि या संवेदनशील मुद्दों पर राजनीति बर्दाश्त नहीं करेगी, चाहे वे कहीं से भी आए हों।

इस दौरान, मुख्यमंत्री ने गुवाहाटी मेडिकल कॉलेज अस्पताल में एक नवजात शिशु की मौत की घटना पर भी बात की। नियोनेटल आईसीयू में एक चार दिन के बच्चे की मौत हो गई थी, जिसके बाद परिवार ने अस्पताल के कर्मचारियों पर लापरवाही का आरोप लगाया। सीएम सरमा ने कहा कि यह एक लापरवाही का मामला है। उन्होंने बताया कि इस घटना की जांच के लिए एक जांच समिति गठित की गई है और दोषी पाए जाने वालों के खिलाफ सख्त कार्रवाई की जाएगी।

भविष्य की ऊर्जा ग्रीन हाइड्रोजन पर बड़ा दांव लगाने की तैयारी में जुटा भारत

–गोरखपुर देश का दूसरा ग्रीन हाइड्रोजन प्लांट शुरू

नई दिल्ली (एजेंसी)। दुनिया वर्तमान में कई तरह की 'गर्मी' झेल रही है। जहां अमेरिका-रूस-यूक्रेन के बीच बढ़ता तनाव, चीन-अमेरिका की प्रतिस्पर्धा और सबसे खतरनाक ग्लोबल वॉर्मिंग का असर चिंता का कारण बना हुआ है। धरती को सबसे ज्यादा गर्म करने वाले देशों में चीन (30प्रतिशत), अमेरिका (15प्रतिशत), भारत (7प्रतिशत), रूस (5 प्रतिशत) और जापान (4 प्रतिशत) शामिल हैं। इसके बाद ग्रीन हाइड्रोजन पूरी दुनिया के लिए 'उम्मीद की किरण' बनकर उभर रही है और भारत इस क्षेत्र में बड़ी छलांग लगाने की तैयारी कर चुका है।

इसके लिए मोदी सरकार ने कमर कस ली है। साथ ही देश में ग्रीन हाइड्रोजन का उत्पादन भी शुरु हो चुका है।

उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने गोरखपुर जिले के खानिमपुर गांव में राज्य का पहला और देश का दूसरा ग्रीन हाइड्रोजन प्लांट शुरू किया। इस प्लांट को स्वच्छ ऊर्जा की दिशा में मील का पत्थर बताकर सीएम योगी ने कहा कि अगर मानवता और सभ्यता को बचाना है, तब कार्बन उत्सर्जन को जल्द से जल्द घटाना होगा। हरित हाइड्रोजन ही भविष्य की ऊर्जा है।'

ग्रीन हाइड्रोजन अक्षय ऊर्जा (सौर और पवन) से पानी का इलेक्ट्रोलिसिस करके तैयार की जाती है। इसमें कार्बन फुटप्रिंट शून्य होता है और केवल हाइड्रोजन व ऑक्सीजन उत्पन्न होते हैं। यही वजह है कि इसे 'क्लीन फ्यूल ऑफ फ्यूचर' कहा जा रहा है।

अंतरराष्ट्रीय नवीकरणीय ऊर्जा एजेंसी (आईआरईएनए) के मुताबिक 2050 तक ग्रीन हाइड्रोजन का वैश्विक ऊर्जा मिश्रण में 12 प्रतिशत योगदान होगा। अभी कुल उत्पादन का 1 प्रतिशत से भी कम हिस्सा ग्रीन हाइड्रोजन है। इस 0.3 गीगावॉट से बढ़ाकर 5,000 गीगावॉट करना लक्ष्य है।

भारत का ग्रीन हाइड्रोजन मिशन

भारत ने 2030 तक हर साल 10 लाख टन ग्रीन हाइड्रोजन उत्पादन का लक्ष्य रखा है। अभी देश में उर्वरक, रिफाइनिंग और अमोनिया उत्पादन में करीब 60 लाख टन हाइड्रोजन की खपत होती है, जो 2050 तक 2.8 करोड़ टन तक जा सकती है। 2030 तक ग्रीन हाइड्रोजन की लागत कोयला और गैस जैसे पारंपरिक ईंधनों के बराबर होने की उम्मीद है।

आंध्र प्रदेश के पुडीमडका में दुनिया की सबसे बड़ी ग्रीन हाइड्रोजन परियोजनाओं में से एक विकसित की जा रही है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने इस परियोजना की नींव रखी थी। यह प्रोजेक्ट भारत को 2030 तक 500 गीगावॉट उत्पादन के लक्ष्य तक पहुंचाने में मदद करेगा। ग्रीन हाइड्रोजन को लेकर भारत की आक्रामक पहल बताती है कि आने वाले दशक में भारत न सिर्फ कार्बन न्यूट्रल भविष्य की ओर बढ़ेगा, बल्कि दुनिया का ऊर्जा नेतृत्व भी अपने हाथ में ले सकता है।

शार्ट न्यूज

कोंच में लेखपाल संघ की नई कार्यकारिणी गठित

चंद्रप्रकाश साहू अध्यक्ष, दिलीप पटेल मंत्री चुने गए

विनोद कुमार गौतम । दबंग इंडिया

कोंच,जालौन। उप्र लेखपाल संघ की कोंच तहसील इकाई की नवीन कार्यकारिणी का गठन कर लिया गया जिसमें चंद्रप्रकाश साहू को अध्यक्ष एवं दिलीप पटेल को सर्वसम्मति से मंत्री नियुक्त किया गया। मंगलवार को तहसील स्थित लेखपाल सभा कक्ष में संघ के जिलाध्यक्ष अनूप तिवारी की अध्यक्षता में संपन्न की गई निर्वाचन प्रक्रिया में तहसील क्षेत्र के समस्त लेखपाल मौजूद रहे। सर्वसम्मति से अध्यक्ष पद पर चंद्रप्रकाश साहू एवं मंत्री पद पर दिलीप पटेल को चुन लिया गया। शेष पदों में आशीष दीक्षित उपाध्यक्ष, अनुराग चौधरी उप मंत्री, अंकित झा ऑडिटर व विवेक कुमार कोषाध्यक्ष नियुक्त किए गए। नव नियुक्त प्राधिकारियों का साथी सदस्यों ने तिलक और फूलमाला पहनाकर स्वागत सम्मान किया। नव नियुक्त अध्यक्ष ने साथियों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि लेखपाल साथियों के मान सम्मान को हमेशा बरकरार रखा जाएगा और हर परेशानी में साथ दिया जाएगा। इस मौके पर संघ के पूर्व जिलाध्यक्ष अमित पाल, सुमित निरंजन, अनिल यादव, विजय आनंद आदि मौजूद रहे।

जिलाधिकारी की अध्यक्षता में बंगाली समुदाय के साथ बैठक हुई सम्पन्न

पीलीभीत। मंगलवार को जिलाधिकारी ज्ञानेन्द्र सिंह की अध्यक्षता में बंगाली समुदाय के साथ बैठक गांधी सभागार में सम्पन्न हुई। बैठक में ग्राम प्रधान एवं ग्राम वासियों द्वारा जिलाधिकारी को अपनी समस्याओं से अवगत कराया गया, अधिकतर शिकायतें भूमि एवं मतदाता पहचान पत्र बनाए जाने के सम्बन्ध में थी। जिलाधिकारी द्वारा सम्बन्धित अधिकारी को समस्याओं के निस्तारण करने के निर्देश दिए गए। साथ ही उन्होंने अपील करते हुए कहा कि जो भी अधिकारी/कर्मचारी गांव में फैमिली ट्री में नाम दर्ज करने हेतु जाएं तो उन्हें पूरा सहयोग दिया जाये। इस अवसर पर तहसील कलीनगर के ग्राम नगरिया खुर्द कलां के ग्राम प्रधान विवेकानंद सरकार को उनके द्वारा किए गए उत्कृष्ट कार्यों के लिए सम्मानित किया गया।

कालाबाजारी करने पर ईफको ई बाजार का लाइसेंस निलंबित, दुकानों पर यूरिया बिक्री करने का आरोप

पूरनपुर। यूरिया खाद को लेकर अभी भी किल्लत बनी हुई है। खाद की दुकानों पर किसानों की लंबी लाइन लग रहीं हैं। इससे किसान परेशान हैं। दुकानदारों ने किसानों की मजबूरी का फायदा उठाकर उनको महंगे दामों में यूरिया खाद बिक्री की। यूरिया के साथ जिंक देने की शिकायत भी अधिकारियों से की गई। इसको लेकर विभागीय अधिकारी लगातार छापामारी और जांच पड़ताल कर रहे हैं। कस्बे में मौजूद इफ़को ई बाजार की शिकायत किसान यूनियन और अन्य किसानों ने जिला कृषि अधिकारी नरेंद्र पाल से की। शिकायत में आरोप लगाया कि इफ़को ई बाजार से दुकानों पर यूरिया बिक्री की जा रही है। जिला कृषि अधिकारी ने जांच पड़ताल की जिसमें ई बाजार से अधिक यूरिया खाद बिक्री करने की बात सामने आई। जिला कृषि अधिकारी नरेंद्र पाल ने यूरिया की कालाबाजारी करने पर इफ़को ई बाजार का लाइसेंस निलंबित कर दिया है। संचालक से तीन दिन में स्पष्टीकरण देने को भी कहा गया है। निर्धारित समय में स्पष्टीकरण न देने पर लाइसेंस निरस्त करने की चेतावनी दी गई है।

आधा दर्जन वारंटी गिरफ्तार कर भेजे जेल

ललितपुर। अपराध और अपराधियों की रोकथाम के लिए चलाया जा रहे अभियान के क्रम में पुलिस ने थाना क्षेत्र के आधा दर्जन वारंटियों को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया। पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक के निर्देशन में ,अपर पुलिस अधीक्षक कालू सिंह एवं सम्बन्धित क्षेत्राधिकारीगण के निकट पर्यवेक्षण में जनपद में वाछिंत/वारण्टी की गिरफ्तारी के अभियान के क्रम में ललितपुर पुलिस द्वारा 06 वारंटी अभियुक्तगण गिरफ्तार वारण्टियों का नाम/पता/उम्र थाना पूराकला चतुर सिंह पुत्र नन्दराम नि0 खजराहा बुजुर्ग थाना बवीना जिला झांसी उम्र करीब 30 वर्ष थाना महरौनीमनोज कुमार उर्फ छोटू पुत्र राम सिंह उम्र करीब 32 वर्ष नि0 सौजना रोड कस्बा व थाना महरौनी वीरेन्द्र पुत्र लच्छू कुर्मी उम्र करीब 51 वर्ष निवासी ग्राम चढरऊ थाना महरौनी थाना सौजना राजपाल पुत्र चाली राजा उम्र करीब 32 वर्ष नि0 ग्राम टीकरा थाना सौजना रामस्वरुप नायक पुत्र ग्यासी नि0 ग्राम गुढ़ा थाना सौजना सरस्वती नायक पत्नी मनीष नायक उम्र करीब 36 वर्ष ग्राम गुढ़ा थाना सौजना ललितपुर को नियमानुसार गिरफ्तार कर, आवश्यक वैधानिक कार्यवाही की जा रही है ।

यातायात पुलिस ने चलाया अभियान,41 ई-रिक्शा का चालान 3 ई-रिक्शा सीज

ललितपुर। सड़क दुर्घटना कम करने व सुगम यातायात को लेकर यातायात पुलिस ने अभियान चलाया। इसके तहत चेकिंग अभियान चलाया गया। 41 ई-रिक्शा चलाना किया 3 ई-रिक्शा को सीज किया गया। पुलिस उपमहानिरीक्षक , झांसी परिक्षेत्र , झांसी के निर्देश के क्रम में पुलिस अधीक्षक, मो0 मुश्ताक के निर्देशन में यातायात पुलिस ललितपुर द्वारा ई-रिक्शा चेकिंग व जागरुकता अभियान चलाया गया । अभियान के दौरान चेकिंग करते हुए नियमों के बारे में किया गया जागरुक। इसी क्रम में ई-रिक्शा चालकों को नियमों के पालन हेतु जागरूक किया गया साथ ही शहर व थाना क्षेत्र के प्रमुख चौराहों पर, चालकों को निर्धारित गति सीमा में ही वाहन चलाना, नशे की हालत में वाहन न चलाना, वाहन चलाते समय मोबाइल का प्रयोग न करें, लेन ड्राइविंग का पालन करें तथा मानक से अधिक सवारी न बैठाने आदि के बारे में जागरूक किया गया। इस अभियान के तहत यातायात पुलिस द्वारा 41 ई-रिक्शा के चालान किये गए तथा 3 ई-रिक्शा को सीज किया गया।

फर्जी बैनामा कर संपत्ति पर कब्जे का प्रयास

सहारनपुर। सहारनपुर के घंटाघर के पास पठानपुरा-रामनगर इलाके में एक परिवार की पुश्तैनी संपत्ति पर फर्जी बैनामा और इकरारनामा तैयार कर कब्जाने का प्रयास किया गया। पीड़ित परिवार का आरोप है कि आरोपी हथियारों के साथ पहुंचे और परिवार को धमकाया। पूरा मामला सीसीटीवी कैमरे में कैद हो गया है। कोर्ट के आदेश पर पुलिस ने नौ नामजद समेत 21 लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कर जांच शुरू कर दी है। मामला थाना सदर बाजार क्षेत्र का है। थाना सदर बाजार क्षेत्र के पंजाब बैंक वाली गली, रामनगर पठानपुरा निवासी खलील अहमद ने तहरीर दी है कि घंटाघर के पास स्थित उनकी पुश्तैनी संपत्ति पिछले 86 वर्षों से उनके कब्जे में है। खलील के मुताबिक उनके पास वैध दस्तावेज हैं और नगर निगम व न्यायालय से भी कई आदेश उनके पक्ष में हैं।

इनरव्हील क्लब ने मेरी उड़ान कार्यक्रम के तहत तीन छात्राओं को दीं साइकिलें

विनोद कुमार गौतम । दबंग इंडिया

उरई,जालौन। राजकीय इंटर कॉलेज उरई के सभागार में इनरव्हील क्लब ऑफ उरई कल्याणी व गोल्डन कल्याणी द्वारा मेरी उड़ान कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसमें बालिका शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से साइकिल डोनेशन का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि जिला विद्यालय निरीक्षक राजकुमार पंडित व जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी चंद्रप्रकाश रहे। कार्यक्रम में ग्रामीण अंचल से आई तीन छात्राओं को साइकिलें दी गई। सीजीआर अरुणा सक्सेना ने साइकिल भेंट करने का उद्देश्य छात्राओं की शिक्षा की राह आसान हो सके और उनके सपनों को उड़ान मिल सके।

प्रेसीडेंट वंदना श्रीवास्तव ने कहा कि यह साइकिलें बच्चों के लिए केवल एक साधन नहीं बल्कि उनका आत्मविश्वास एवं साहस बनेंगी। गोल्डन कल्याणी की प्रेसीडेंट अर्चना द्विवेदी ने कहा कि जहां चाह वहां राह, राह पर होगी साइकिल तो मंजिल नहीं होगी मुश्किल। अतिथियों ने क्लब के इस पुनीत कार्य को सराहा और कहा की यह अनोखी पहल शिक्षा की उन्नति एवं बच्चों के उज्जवल भविष्य के लिए अच्छी पहल है।

कार्यक्रम से प्रसन्न होकर उन्होंने आगामी यूपी बोर्ड की दसवीं की परीक्षा में जनपद में अव्वल आने वाली एक छात्रा को स्कूटी प्रदान करने की घोषणा की। कार्यक्रम की विशिष्ट अतिथि व्यंजना सिंह ने सभी महिलाओं को सशक्त बनने के लिए प्रोत्साहित किया।

इस अवसर पर नीलम श्रीवास्तव, इंदु विवेक उदैनिया, सविता चतुर्वेदी, अपराजिता, मंजू रावत, उषा सेठ, मनीषा द्विवेदी, संगीता द्विवेदी, उषा सिंह, शांति, मीनल आदि मौजूद रहे।

यूरिया की किल्लत से बेहाल किसान, कालाबाजारी पर जिम्मेदारों की चुप्पी

अंबेडकरनगर। जनपद के किसान इन दिनों यूरिया की किल्लत से दो-चार हो रहे हैं।खेतों में फसलें खाद की प्यास में सूखने लगी हैं, लेकिन जिम्मेदार अधिकारियों के दावे सुनने लायक हैं। अधिकारी लगातार यह रट लगाए हुए हैं कि यूरिया पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध है — जबकि हकीकत इसके बिल्कुल उलट है।गांव-गांव के किसान खाद की थैलियों के लिए भटक रहे हैं। दुकानों पर लंबी-लंबी लाइनें लग रही हैं, फिर भी किसानों को मायूसी ही हाथ लग रही है। हालात यह हैं कि खुलेआम कालाबाजारी हो रही है और थोक व्यापारी मोटी रकम वसूलकर खाद बेच रहे हैं। छोटे और गरीब किसान इस दोहरी मार से टूट गए हैं। जिम्मेदार विभाग अब तक इस कालाबाजारी पर अंकुश लगाने में पूरी तरह नाकाम साबित हुआ है। किसानों का कहना है कि समय पर खाद नहीं मिली तो खेतों की फसल चौपट हो जाएगी और मेहनत पर पानी फिर जाएगा।किसानों ने जिम्मेदारों से निवेदन किया है कि जल्द ही यूरिया की पर्याप्त आपूर्ति सुनिश्चित कराई जाए।

69000 शिक्षक भर्ती अभ्यर्थियों ने डिप्टी सीएम का आवास घेरा

लखनऊ। लखनऊ में 69000 शिक्षक भर्ती के आरक्षित वर्ग के अभ्यर्थियों का प्रदर्शन लगातार दूसरे दिन जारी है। आज अभ्यर्थी उपमुख्यमंत्री केशव प्रसाद मौर्या का आवास घेरने पहुंच गए।

प्रदर्शनकारियों ने जमकर हंगामा और नारेबाजी की। कहा कि हम वोट के लिए हिंदू और नौकरी के लिए दलित हो जाते हैं। यह अन्याय मत करो। प्रदर्शन की सूचना पर पहले ही पुलिस पहुंच गई थी। अभ्यर्थियों को केशव प्रसाद मौर्य के आवास से पहले ही रोक लिया गया। इस दौरान पुलिस से नोकझोंक भी हुई। अभ्यर्थी बोले कि उन दलितों पर सरकार न्याय करे और उन्हें कीड़े-मकोड़े न समझा जाए। अभ्यर्थियों ने कहा- 69 हजार शिक्षक भर्ती में आरक्षण घोटाला किया गया। प्रदर्शन में शामिल अमित कुमार मौर्य ने कहा कि केशव प्रसाद मौर्य हमारे समाज के हैं।

हम उनके दरवाजे पर आए हैं। सुप्रीम कोर्ट में 22 से ज्यादा बार डेट लग गई है। मगर सरकार शामिल नहीं हो रही है।

कोर्ट के आदेश से लूट सहित अन्य धाराओं में रिपोर्ट दर्ज

विनोद कुमार गौतम । दबंग इंडिया

उरई । कदौरा थाना क्षेत्र के नाका गांव निवासी अनुरुद्ध ने डकैती कोर्ट में वाद दायर करते हुए बताया था कि उसकी शादी 24 जून 2020 को हमीरपुर जनपद के ग्राम जराखार निवासी सपना के साथ हुआ था शादी के बाद उसकी पत्नी को एक पुत्र हुआ था ! जिसका नाम ओम उम्र करीब 2 वर्ष थी ! उसके घर पर भतीजा राजाबाबू का आना जाना रहता था ! जब उसको भतीजा के ऊपर कुछ शक हुआ तो उसने घर पर आने से मना कर दिया लेकिन इसके बाद उसकी पत्नी ने राजा बाबू के साथ मिलकर षड्यंत्र रच कर 30 जून 2025 को राजा बाबू को घर बुला लिया और उसके घर पर राजा बाबू जबरन आ गया जब उसने इसका विरोध किया तो पत्नी के साथ मिलकर राजा बाबू ने करने की नीयत से उसको नींद की गोली खिला दी और पीड़ित युवक अपने आप को बचाने के लिए कमरे में बंद हो गया और वह गोली खाने से बेहोश हो गया एक जुलाई 2025 की सुबह उसके घर पर रखा करीब रखे 50000 हजार रुपये व मां का जेवर लूट कर बच्चों का अपहरण कर ले गए गांव के ही रहने वाले अखिलेश उसके घर आए और देखा के अनुरुद्ध बेहोश पड़ा है जब उसको पानी डाला गया तब उसको होश आया जब उसने घर में सामान को बिखरा देख वह पत्नी सपना वह लड़का को ढूंढा लेकिन कहीं नहीं मिला उसने आरोप लगाया कि उसकी पत्नी वी रामबाबू और दो अज्ञात लोगों ने उसके साथ मिलकर जान से करने का प्रयास किया और घर में रखें नगदी रुपए और जेवर बच्चों का अपहरण करके ले गए पीड़ित का आरोप है कि उसने इसके बारे में स्थानीय पुलिस को शिकायती पत्र देकर रिपोर्ट लिखवाने की मांग की थी ! लेकिन पुलिस ने रिपोर्ट नहीं लिखी थी जब जाकर न्यायालय में वाद दायर किया अधिवक्ता विनय कुमार चौरसिया द्वारा की बहस सुनने के बाद डकैती कोर्ट के न्यायाधीश ने 24 जुलाई को कदौरा पुलिस को रिपोर्ट दर्ज करने के आदेश दिए थे लेकिन पुलिस द्वारा न्यायालय के आदेश को समय सीमा के बाहर होने के बाद भी रिपोर्ट दर्ज नहीं की गई जब जाकर अधिवक्ता द्वारा पुन: न्यायालय में रिपोर्ट दर्ज करने की आख्या मांगी गई जब जाकर पुलिस ने 19 अगस्त को उक्त लोगों के खिलाफ लूट सहित अन्य धाराओं में रिपोर्ट दर्ज कर जांच पड़ताल शुरूकर दी ।

राष्ट्रीय लोक अदालत को लेकर तृतीय बैठक हुई संपन्न

विनोद कुमार गौतम । दबंग इंडिया

उरई । 13 सितंबर को होने वाली राष्ट्रीय लोक अदालत को सफल बनाने के लिए मंगलवार को राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण के दिशा-निर्देश के अनुपालन में परिवार न्यायालय, उरई के अनुश्रवण राष्ट्रीय लोक अदालत समिति की तृतीय बैठक बैठक प्रवीण कुमार पाण्डेय, अपर प्रधान न्यायाधीश, के अध्यक्षता में नवनिर्मित भवन वादकारियों के बैठने हेतु प्रतीक्षालय परामर्शदाता केन्द्र, परिवार न्यायालय,में आगामी राष्ट्रीय लोक अदालत 13 सितंबर 2025 को सफल बनाने को लेकर समपन्न हुई, बैठक में अवगत कराया गया कि राष्ट्रीय लोक अदालत में प्रीलिटीगेशन वाद वैवाहिक वाद व भरण पोषण परिवार न्यायालय का निस्तारण समझौते के आधार पर किया जाएगा तथा अधिवक्ता व वादकारी व जनता के संबंधित व्यक्तियों से अपील किया गई है ! अपने वादों को अधिक से अधिक लोक अदालत में चिन्हित कराए बैठक में उपस्थित मुसरिम अशोक कुमार वर्मा परामर्शदाता, के0के0 प्रजपाति परिवार कल्याण विशेषज्ञ प्रियंका द्विवेदी सुलेखा विद्वान अधिवक्ता विनोद प्रकाश ब्यास, सुलेखा सिह अधिवक्ता कर्म क्षेत्र अवस्थी प्रदीप दीक्षित संतोष कुमार रविकांत गौतम चमारी अंशुमान दीक्षित रिहाना मंसूरी शशि निषाद आदि उपस्थित रहे !

एसपी ने किया बार थाने का निरीक्षण

ललितपुर। एसपी ने बार थाने का औचक निरीक्षण किया। पुलिस अधीक्षक मो0 मुश्ताक द्वारा थाना बार का आकस्मिक निरीक्षण किया । निरीक्षण के दौरान थाना परिसर, कार्यालय आदि का निरीक्षण कर सम्बन्धित को आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये ।थाना कार्यालय/महिला हेल्प डेस्क के रजिस्टरों को चेक कर व्यवस्थित रखरखाव हेतु निर्देश दिये गये ।

मुकदमों से संबंधित मालो का विधिक निस्तारण एवं सही रखरखाव,शस्त्रों की नियमित साफ-सफाई रखने हेतु निर्देशित किया गया।

साइबर हेल्प डेस्क में तैनात अधि0/कर्म0गण को प्रतिदिन साइबर से सम्बन्धित पोर्टल जैसे प्रतिबिम्ब, सुदर्शन पोर्टल आदि का क्रियान्वयन करने व साइबर के अपराधों में त्वरित कार्यवाही करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश दिये गये ।

थाने में लम्बित विवेचनाओं का गुण दोष के आधार पर विधिक निस्तारण करने व थाना क्षेत्र के वांछित अभियुक्तों/वारंटियों की गिरफ्तारी, अवैध शराब/मादक पदार्थों/पशु तस्करी पर प्रभावी अंकुश लगाने तथा थाने पर आने वाले शिकायतों का शत-प्रतिशत व समयबद्ध निस्तारण करने जाने हेतु सम्बन्धित को निर्देशित किया गया ।

माफियाओं को चिन्हित कर उनके विरूद्ध गैंगस्टर एक्ट की कार्यवाही व थाना स्तर पर टॉप-10 अपराधी व ।।स की सतत निगरानी हेतु आवश्यक दिशा निर्देश दिये गये । महिला सम्बन्धी अपराधों को रोकने के लिये सूचना पर त्वरित रूप से संज्ञान लेकर तत्काल अभियोग पंजीकृत कर विधिक कार्यवाही कर उनका निस्तारण करें तथा उपरोक्त प्रकरण की सूचना पर उच्चाधिकारियों को देने हेतु निर्देशित किया गया ।

महिलाओं की सुरक्षा हेतु एन्टीरोमियो स्कॉवड व महिला बीट आरक्षियों को प्रतिदिन थाना क्षेत्र में भ्रमण हेतु आदेशित किया गया जिससे महिला सम्बंधी अपराध न हो पाए तथा शासन की जीरो टॉलरेंस नीति पर काम करें ।

फिरोजाबाद में 12वीं की छात्रा की गला रेतकर हत्या

खेत में मिला रक्तरंजित शव, प्रेम प्रसंग में हत्या की आशंका

फिरोजाबाद। फिरोजाबाद में 12 वीं की छात्रा की गला रेतकर हत्या कर दी गई। मंगलवार सुबह छात्रा का शव गांव से करीब 700 मीटर दूर खेत में खून से लथपथ हालत में पड़ा मिला। ग्रामीणों की सूचना पर पुलिस मौके पर पहुंची और शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। प्रारंभिक जांच में प्रेम प्रसंग को हत्या की वजह माना जा रहा है। मामला जसराना क्षेत्र के नगला जाट गांव का है। मृतका की पहचान नेहा (17) पुत्री इंद्रपाल के रूप में हुई। वह कक्षा 12 की छात्रा थी। सोमवार रात वह घर पर परिवार के साथ भोजन करने के बाद सोने चली गई थी। मंगलवार सुबह वह घर पर नहीं मिली। बाद में उसका शव खेत में पाया गया। सूचना पर एसपी ग्रामीण त्रिगुण विशेन, सीओ जसराना और थाना अध्यक्ष शेर सिंह जसराना पुलिस बल के साथ मौके पर पहुंचे। शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेजा गया।

सितंबर में जालौन में गूंजेगा व्यापारी सम्मेलन, बड़े नेताओं की होगी मौजूदगी

विनोद कुमार गौतम । दबंग इंडिया

उरई (जालौन)। राठ रोड स्थित मंडपम गेस्ट हाउस में मंगलवार को अखिल भारतीय उद्योग व्यापार मंडल की जिला कार्यसमिति बैठक जिलाध्यक्ष संतोष गुप्ता की अध्यक्षता में सम्पन्न हुई। बैठक में सर्वसम्मति से निर्णय लिया गया कि सितम्बर माह में संगठन के सफल एक वर्ष पूर्ण होने पर भव्य शपथ ग्रहण समारोह एवं व्यापारी सम्मेलन आयोजित किया जाएगा। कार्यक्रम में उत्तर प्रदेश सरकार के उप मुख्यमंत्री बृजेश पाठक और संगठन के राष्ट्रीय अध्यक्ष संदीप बंसल मुख्य अतिथि के रूप में शामिल होंगे। आयोजन की तिथि तय करने के लिए शीघ्र ही जनपद का प्रतिनिधिमंडल लखनऊ में उप मुख्यमंत्री से मुलाकात करेगा। बैठक में प्रदेश, क्षेत्रीय, जिला व महिला पदाधिकारी बड़ी संख्या में मौजूद रहे। इस दौरान गल्ला व्यापार संघ के नवनिर्वाचित अध्यक्ष रवि ईंटोदिया का माल्यार्पण कर स्वागत किया गया। साथ ही आधा दर्जन से अधिक व्यापारियों को संगठन से जोड़ा गया। संगठन द्वारा शीघ्र ही आजीवन सदस्यता अभियान भी चलाया जाएगा। इस दौरान अरुण त्रिपाठी, ज्ञान सिंह खागर, केदार भारद्वाज, रामबाबू कौशल, प्रदीप द्विवेदी, संजीव सिपोलिया, बबलू दुबे, संजय सुहाने, देवेंद्र सेठ, बंटू गुर्जर, दिनेश पुरवार, महेंद्र भाटिया, प्रवीण ईंटोदिया, धर्मेंद्र कुलश्रेष्ठ, रोहित गुप्ता, राजकुमार अग्रवाल, छोटे ईंटोदिया, सुधीर पांडेय, अंकित त्रिपाठी, उमेश शर्मा, निशा राजपूत, शांति गुप्ता, संध्या शिवहरे, संगीता पाठक, सोनिया अग्रवाल, ऊषा निरंजन, धर्मेंद्र पांचाल, धर्मेंद्र शर्मा, सुंदर लाल, संजय विजपुरिया, निलय गुप्ता आदि।

झांसी में दो हिस्सों में मिला फिजिक्स टीचर का शव

चाचा ने कहा- डेढ़ महीने पहले नई जॉब शुरू की थी, 30 बार किया फोन

झांसी। झांसी की पारीछा रेलवे स्टेशन के पास फिजिक्स टीचर की दो हिस्से में कटी लाश मिली है। वह पास के ही इंटर कॉलेज में पढ़ाते थे। मृतक के चाचा ने बताया- इससे पहले वह बांदा में पढ़ाया करता था, लेकिन वहां एक बच्चे को थप्पड़ मार देने पर उसे नौकरी से निकाल दिया गया था। वह झांसी में बीते डेढ़ महीने से नौकरी कर रहा था। कल जब भतीजे ने फोन नहीं उठाया तो वह लोग झांसी पहुंचे। यहां पता चला कि वह ट्रेन से कट गया है।

हमीरपुर के छानी खुर्द थाना विवार के रहने वाले शैलेश गुप्ता (35) पुत्र कमलेश कुमार गुप्ता झांसी के पारीछा में निजी शिक्षण संस्थान डीएवी इंटर कॉलेज फिजिक्स के टीचर थे। साथ ही वह टीईटी परीक्षा की तैयारी भी झांसी में रहकर ही कर रहे थे।

सोमवार को चाचा श्रवण कुमार गुप्ता ने भतीजे को फोन लगाया तो उसका फोन नहीं उठा। इसके बाद फोन बंद हो गया। परिजनों की चिंता बढ़ी तो वह हमीरपुर से रात को ही झांसी पहुंच गए। यहां पारीछा पहुंच कर उन्होंने भतीजे से संपर्क करने का प्रयास किया, लेकिन शैलेश का कुछ पता नहीं चला। मंगलवार को जब परिजनों ने उसकी फिर से तलाश की तो जानकारी हुई कि पारीछा स्टेशन के पास सोमवार की शाम को एक युवक ट्रेन से कट गया था। आज उसका शव झांसी मेडिकल कॉलेज भेजा गया है।

शैलेश के भाई और चाचा मेडिकल कॉलेज पहुंचे तो गए है। इसके बाद पुलिस ने पंचायतनामा भरवा कर शव का पोस्टमॉर्टम की प्रक्रिया शुरू कराई। टीचर में आत्महत्या की या दुर्घटना में उसकी मौत हुई, ये स्पष्ट नहीं हो पा रहा है। मृतक शैलेश के चाचा श्रवण कुमार ने बताया कि झांसी से पहले भतीजा बांदा के एक निजी कॉलेज में पढ़ाता था।

इसी साल जनवरी में उसने कॉलेज के एक स्टूडेंट को पढ़ाई के लिए थप्पड़ मार दिया था, जिसके बाद प्रबंधन ने उसे नौकरी से निकाल दिया था। नौकरी जाने के बाद शैलेश ने टीईटी की तैयारी शुरू कर दी थी, लेकिन झांसी में कॉलेज में नौकरी मिली तो वह डेढ़ महीने पहले झांसी आ गया था। यहां वह अकेले रहता था।

मलिन बस्ती पर चला नगर निगम का बुलडोजर

झांसी। झांसी के सीपरी बाजार थाना क्षेत्र के गुरु नानक खालसा इंटर कॉलेज के सामने मलिन बस्ती पर नगर निगम का बुलडोजर चल गया। यहां रहने वाले परिवारों ने यह कहकर विरोध किया कि उन्हें यहां रहते हुए 27 साल हो गए हैं, इसी पते से वोट दिया। यहीं का राशनकार्ड है लेकिन अब अचानक बेघर कर दिया गया है। जब यहां बुलडोजर चल रहा था तो एक अधेड़ अपनी झोपड़ी पर चढ़कर तिरंगा फहराने लगा कि शायद उसकी झोपड़ी बच जाए। लेकिन कार्रवाई जारी रही। मंगलवार को शाम के समय मलिन बस्ती में सबकुछ सामान्य चल रहा था। इसी दौरान नगर निगम का अतिक्रमण निरोधी दस्ता बुलडोजर लेकर यहां पहुंचा, स्थाई और अस्थाई कमरा, झोपड़ी बना कर रह रहे परिवारों से उन्हें खाली करने को कहा। परिवारों के बाहर आते ही बुलडोजर से ये सभी अतिक्रमण ध्वस्त कर दिया गया। घर टूटता देख महिला और बच्चों ने विरोध किया, खालसा स्कूल से आईटीआई की ओर जाने वाले रास्ते पर जाम लगाने की कोशिश भी की लेकिन पुलिस ने उन्हें हटा दिया। लोगों का कहना था कि वह पहले किले की तलहटी में झोपड़ी बनाकर रहते थे। जब वहां से उन्हें हटाया गया तो यहां चूना डालकर उन्हें अपना घर बनाने के लिए जमीन दी गई थी। 27 साल से वह यहीं रह रहे हैं। आजतक कोई भी यहां हटाने नहीं आया।

सूर्यकुमार की कप्तानी में एशिया कप के लिए भारतीय टीम घोषित, शुभमन होंगे उपकप्तान

रिंकू, सैमसन और हार्दिक टीम में शामिल, यशस्वी व श्रेयस को नहीं मिली जगह

मुम्बई (एजेंसी)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) चयन समिति ने मंगलवार को एशिया कप 2025 के लिए 15 सदस्यीय भारतीय टीम घोषित कर दी। अजीत अगरकर की अध्यक्षता वाली समिति ने इस टूर्नामेंट के लिए सूर्यकुमार यादव को कप्तान बनाये रखा हैं। वहीं शुभमन गिल की उपकप्तान के तौर पर वापसी हुई है जबकि श्रेयस अय्यर और यशस्वी जायसवाल को टीम में जगह नहीं मिली है। टीम में फिनिशर के तौर पर रिंकू सिंह को अवसर मिला है। वहीं विकेटकीपर के तौर पर संजू सैमसन को टीम में जगह मिली है।

यूएई के हालातों को देखते हुए स्पिनर खासे सफल रहते हैं। ऐसे स्पिन ऑलराउंडर अक्षर पटेल के अलावा कुलदीप यादव और वरुण चक्रवर्ती को टीम में शामिल किया है। तेज गेंदबाजी की कमान जसप्रीत बुमराह के पास रहेगी जबकि अर्शदीप सिंह और हर्षित राणा उनका साथ देंगे। 15 सदस्यीय टीम में तेज गेंदबाजी ऑलराउंडर हार्दिक पंड्या को भी शामिल किया गया है। सैमसन के बैकअप विकेटकीपर के तौर पर जितेश शर्मा को टीम में जगह दी गयी है।

एशिया कप यूएई में 9 से 28 सितंबर तक टी20 फॉर्मेट में खेला जाएगा। जिसमें कुल 8 टीमें भारत, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, बांग्लादेश, श्रीलंका, संयुक्त अरब अमीरात, हांगकांग और ओमान शामिल होगी। इसमें भारतीय टीम का पहला मुकाबला 10 सितंबर को यूएई से होगा। जिसके बाद 14 सितंबर को भारतीय टीम परंपरागत प्रतिद्वंदी टीम पाकिस्तान से खेलेगी जबकि 19 सितंबर को ओमान से मुकाबला होगा।

एशिया कप के लिए भारत का स्कॉड

सूर्य कुमार यादव (कप्तान), शुभमन गिल (उपकप्तान), अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा, हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, जितेश शर्मा (विकेटकीपर), जसप्रित बुमराह, अर्शदीप सिंह, वरुण चक्रवर्ती, कुलदीप यादव, संजू सैमसन (विकेटकीपर), हर्षित राणा, रिंकू सिंह ।

कार्लोस अल्काराज ने पहली बार जीता सिनसिनाटी ओपन का खिताब

सिनसिनाटी (एजेंसी)। सिनसिनाटी ओपन जीतने का स्पेन के कार्लोस अल्काराज का सपना पूरा हो गया है। मंगलवार को जानिक सिनर के खिलाफ हुए फाइनल मुकाबले में उन्हें विजेता घोषित किया गया।

विबलंडन फाइनल के बाद विश्व के नंबर एक जानिक सिनर और नंबर दो कार्लोस अल्काराज के बीच होने वाले सिनसिनाटी ओपन फाइनल पर दुनियाभर के टेनिस प्रेमियों की नजर थी। फैंस एक रोमांचक मुकाबले का इंतजार कर रहे थे। लेकिन फैंस को थोड़ी मायूसी हासिल हुई। वजह जानिक सिनर की अस्वस्थता रही।

अल्काराज और सिनर के बीच मैच निर्धारित समय पर शुरु हुआ था। शुरुआत से ही सिनर गर्मी से परेशान दिख रहे थे। पहले सेट में 0-5 से पिछड़ने के बाद उन्होंने डॉक्टर को बुलाया और गर्मी से निपटने के लिए बर्फ की मदद भी ली, लेकिन मैच को जारी नहीं रख सके। 23 मिनट के बाद वह रिटायर होने पर मजबूर हो गए। इसके बाद अल्काराज को विजेता घोषित किया गया। यह उनका पहला सिनसिनाटी ओपन खिताब था और साल का कुल छठा खिताब था।

सिनर की परेशानी का पता तब चला जब सर्विस में वह एक भी पॉइंट नहीं जीत पाए। सर्विस सिनर का मजबूत पक्ष माना जाता है। लगातार पांचवां गेम हारने के बाद सिनर ने डॉक्टर को बुलाया और जल्द ही कार्लोस अल्काराज से हाथ मिलाकर मैच समाप्ति की घोषणा कर दी।

सिनर अगर फाइनल जीत जाते तो वह रोजर फेडरर (2014-15) के बाद लगातार टाइटल जीतने वाले पहले खिलाड़ी होते।

मैच के बाद सिनर ने कहा, 'मैं आपको निराश करने के लिए माफी मांगता हूं। मैं कल से अच्छा महसूस नहीं कर रहा था। मुझे लगा कि मैं रात तक बेहतर हो जाउंगा। लेकिन, ऐसा नहीं हुआ। मैंने लड़ने की कोशिश की। लेकिन, खेल नहीं पाया। इसलिए मैं माफी मांगता हूं।'

विजेता घोषित किए जाने के बाद कार्लोस अल्काराज ने जानिक सिनर के लिए कहा, 'मैं जानता हूं कि आप इन परिस्थितियों से और बेहतर कमबैक करेंगे, उससे भी बेहतर जैसा आप हमेशा करते हो। यही असली चैंपियन करते हैं।'

हमें अगली सीरीज के लिए बुमराह के बारे में सोचने की जरूरत नहीं, पूर्व फिजियो का बड़ा बयान

स्पोर्ट्स डेस्क। भारत के प्रमुख तेज गेंदबाज जसप्रीत बुमराह को लेकर बहस थमने का नाम नही ले रही है। एंडरसन-तेंदुलकर ट्रॉफी में दो टेस्ट मैच में उनकी अनुपस्थिति की आलोचना की गई। कई लोगो ने बुमराह को अपने शरीर की बात सुनकर आराम देने के लिए सराहना की, वही कुछ ने अतिरिक्त प्रयास न करने के लिए उनकी आलोचना की।

इस पर प्रतिक्रिया देते हुए टीम इंडिया के पूर्व फिजियो जॉन ग्लोस्टर का मानना है कि बुमराह एक एथलीट की तरह जानते है कि उन्हें क्या करना है। ग्लोस्टर ने कहा, 'देखिए, मुझे पता है कि यह इस समय बहुत विवादास्पद विषय है और मैं ज्यादातर विवादास्पद विषयो पर खुशी खुशी बात करूंगा। मुझे लगता है कि आखिरकार एथलीट खुद को किसी से भी बेहतर जानता है।'

ग्लोस्टर ने आगे कहा, 'आजकल ज्यादातर एथलीट जिनके पास अच्छी स्पोर्ट्स टीमे है वे उन्ही लोगो से सलाह ले रहे है। लेकिन सहज रूप से ज्यादातर एथलीट जानते है कि क्या सही है और क्या गलत। और वह एक परिपक्व एथलीट है। वह एक चतुर व्यक्ति है जो अच्छी तरह जानते है कि वह क्या कर रहे है।'

ग्लोस्टर ने कहा कि वह नही चाहते कि बुमराह हर सीरीज खेले। उनका मानना है कि इस साल की शुरुआत में ऑस्ट्रेलिया दौरे पर पीठ की चोट के बाद 31 वर्षीय बुमराह ने शानदार वापसी की है। इस पर ग्लोस्टर ने कहा, 'और मुझे लगता है कि दस में से नौ बार परिपक्व एथलीट जिन्हें अच्छा समर्थन मिलता है, वे सही फैसले लेते है। और हमें अगली सीरीज या उसके बाद की सीरीज के लिए बुमराह के बारे में नही सोचना है। हमें अगले दो से तीन सालो तक बुमराह के बारे में सोचना होगा।'

'वह जानते है कि उनका करियर, उनके करियर की लंबाई, उनका खेल जीवन, सही सलाह और परामर्श से ही तय होगा। यह ऐसा ही होगा। और वह जानते है कि ऐसे हालात भी आएंगे जब उनको अपने लिए फैसले लेने होंगे ताकि उनका करियर सबसे अच्छा और लंबा हो।'

हरमनप्रीत की कप्तानी में एकदिवसीय विश्वकप में उतरेगी भारतीय महिला क्रिकेट टीम

मुम्बई (एजेंसी)। मुम्बई (ईएमएस)। भारतीय क्रिकेट बोर्ड (बीसीसीआई) ने एकदिवसीय विश्वकप और ऑस्ट्रेलिया दौरे के लिए महिला क्रिकेट टीम की घोषणा कर दी है।नीतू डेविड की अगुवाई वाली चयन समिति ने महिला विश्व कप के लिए टीम चयन किया। टीम की कप्तानी हरमनप्रीत कौर टीम को दी गयी है जबकि स्मृति मंधाना उपकप्तानी संभालेंगी। टीम में फिटनेस हासिल कर चुकी रेणुका सिंहकी वापसी हुई है जबकि शेफाली वर्मा को मौका नहीं मिला है। पिछले कुछ समय से लगातार अच्छा प्रदर्शन कर रही श्री चरणी को टीम में जगह मिली है।

विश्वकप कप 30 सितंबर से भारत और श्रीलंका में खेला जाएगा। फाइनल मुकाबला दो नवंबर को खेला जाएगा। इसके मुकाबले भारत और श्रीलंका के पांच शहरों में होंगे जिसमें बंगलूरू का एम चिन्नास्वामी, गुवाहाटी का एसीए स्टेडियम, इंदौर का होल्कर स्टेडियम, विशाखापत्तनम का एसीए-वीडीसीए स्टेडियम और कोलंबो का आर प्रेमादासा स्टेडियम शामिल है।

विश्वकप के लिए टीम

हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), प्रतिका रावल, हरलीन देयोल, दीप्ति शर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, रेणुका सिंह ठाकुर, अरुंधति रेड्डी, ऋचा घोष (विकेटकीपर), क्रांति गौड़, अमनजोत कौर, राधा यादव, श्री चरणी, यास्तिका भाटिया (विकेटकीपर) और स्नेह राणा।

ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज के लिए टीम

हरमनप्रीत कौर (कप्तान), स्मृति मंधाना (उपकप्तान), प्रतिका रावल, हरलीन देयोल, दीप्ति शर्मा, जेमिमा रोड्रिग्स, रेणुका सिंह ठाकुर, अरुंधति रेड्डी, ऋचा घोष (विकेटकीपर), क्रांति गौड़, सयाली सतघरे, राधा यादव, श्री चरणी, यास्तिका भाटिया (विकेटकीपर), स्नेह राणा।

शायद ही कभी भारतीय टीम का कोच बनना चाहेंगे धोनी : आकाश चोपड़ा

नई दिल्ली । पूर्व क्रिकेटर आकाश चोपड़ा का मानना है कि भारतीय टीम के पूर्व कप्तान महेंद्र सिंह धोनी शायद ही कभी कोच बने । चोपड़ा के अनुसार उन्हें नहीं लगता कि धोनी को कोचिंग में रुचि है । आकाश ने कहा, मुझे नहीं लगता कि धोनी अभी कोचिंग देना चाहेंगे क्योंकि कोचिंग एक फुल टाइम नौकरी है जिसमें आप फिर से वैसे ही व्यस्त हो जाते हैं जैसे आप अपने क्रिकेट करियर में थे । कई बार तो जिम्मेदारियां और भी बढ़ जाती हैं । वहीं आकाश ने यह भी बताया है कि अधिकतर खिलाड़ी कोचिंग से क्यों दूरी बना लेते हैं । उन्होंने कहा कि एक पेशेवर क्रिकेटर अपना पूरा जीवन सफर में, होटल में और मैदान पर ही बिता देता है । ऐसे में संन्यास के बाद वे थोड़ा स्थिर जीवन जीना चाहते हैं । खिलाड़ी सोचते हैं कि जब पूरी जिंदगी सूटकेस के साथ बिताई है तो अब क्यों दोबारा उसी जिंदगी में लौटें । इसी कारण अधिकतर खिलाड़ी केवल जैसी सीमित अवधि की लीग में ही कोचिंग करना पसंद करते हैं जहां काम कुछ महीनों का होता है । जबकि भारतीय टीम का कोच बनने पर पूरे साल भर लगभग 10 महीने टीम के साथ यात्रा करनी होती है, जिससें पूरा समय निकल जाता है । ऐसे में अब धोनी फिर से कोचिंग जैसे व्यस्त कार्यक्रम को अपनाना नहीं चाहेंगे । वे अभी चेन्नई सुपर किंग्स (सीएसके) के साथ हैं और आने वाले समय में आईपीएल से भी संन्यास ले सकते हैं । धोनी अब एक अलग जीवन जी रहे हैं जिसमें खेती, बिजनेस और परिवार के साथ समय बिताना शामिल है । ऐसे में भारतीय टीम के कोच की जिम्मेदारी उठाना शायद उनकी प्राथमिकताओं नहीं होगा । धोनी हालांकि 2021 के टी20 विश्वकप में क्रिकेट बोर्ड के अनुरोध पर भारतीय टीम के मेंटॉर बने थे ।

एशियन शूटिंग चैंपियनशिप : कपिल बैंसला ने लहराया तिरंगा, भारत को दिलाया गोल्ड

श्यामकेंट (कजाकिस्तान) । कजाकिस्तान के श्यामकेंट में जारी 16वीं एशियन शूटिंग चैंपियनशिप राइफल/पिस्टल/शॉटगन में कपिल बैंसला ने भारत का परचम लहराया है । हरियाणा के इस शूटर ने सोमवार को भारत के लिए पहला गोल्ड जीता । कपिल बैंसला ने 10 मीटर एयर पिस्टल मेंस जूनियर फाइनल में 243.0 का स्कोर बनाते हुए शीर्ष स्थान हासिल किया । वहीं, 0.6 अंक से पिछड़ने के बाद उज्बेकिस्तान के इल्खोमबेक ओबिदजोनोव दूसरे पायदान पर रहे । कर्नाटक के जोनाथन गेविन एंथनी ने 220.7 प्वाइंट्स के साथ ब्रॉन्ज मेडल अपने नाम किया । उज्बेकिस्तान के इल्खोम्बेक ने फाइनल में सबसे तेज शुरुआत की । कपिल उनका पीछा करते नजर आए । 15वें शॉट के बाद पहली बार कपिल ने इल्खोम्बेक को पीछाड़ा, लेकिन 20वें शॉट के बाद इल्खोम्बेक ने फिर बढ़त बना ली । आखिरी दो शॉट्स से पहले वह कपिल से एक अंक आगे थे । इसके बाद कपिल ने 10.8 और 10.6 का शानदार स्कोर किया, जबकि इल्खोम्बेक 23वें शॉट पर 10.4 और आखिरी शॉट पर 9.4 अंक हासिल कर सके । इल्खोम्बेक की इसी गलती का फायदा उठाते हुए कपिल ने खिताब अपने नाम कर लिया । इस फाइनल में तीन भारतीय शूटर पहुंचे थे । कपिल ने क्वालिफिकेशन में 579 प्वाइंट्स के साथ चौथा स्थान हासिल किया था, जबकि जोनाथन 582 प्वाइंट्स के साथ दूसरे स्थान पर रहे । इनके अलावा मुकेश नेलावली तीसरे पायदान पर थे । क्वालिफिकेशन में कोरियन खिलाड़ी किम डूयोन ने 582 प्वाइंट्स हासिल करते शीर्ष स्थान हासिल किया था ।

ब्रेट ली ने जडेजा की जमकर प्रशंसा की, सबसे फिट क्रिकेटर बताया

नई दिल्ली । ऑस्ट्रेलिया के पूर्व क्रिकेटर ब्रेट ली ने भारतीय क्रिकेट टीम के ऑलराउंडर रविंद्र जडेजा की जमकर प्रशंसा की है। ऑस्ट्रेलिाई ऑलराउंडर ने जडेजा को विश्व के सबसे फिट खिलाड़ियों में से एक बताया है । ली ने जडेजा के बारे में कहा, 'उन्होंने भारत की ओर से पहले ही 85 टेस्ट मैच खेले हैं, और मुझे भरोसा है कि वह 100 के आंकड़े को पार करेंगे । मेरा मानना है जो कोई भी अपने देश के लिए 100 टेस्ट खेलता है, वह मेरी राय में महान खिलाड़ी है । जडेजा भी अपनी अच्छी बल्लेबाजी, गेंदआजी और फिल्डिंग के कारण एक पूर्ण सुपरस्टार हैं । इसलिए मुझे लगता है कि वह 100 के आंकड़े को पार कर जाएंगे ।' ब्रेट ली ने आगे कहा, 'उनके पास एक बेहतरीन क्रिकेटर के लिए जरुरी सभी चीजें हैं । उनकी तकनीक सरल है । वह दौड़ते हैं और सटीक गेंदबाजी करते हैं. जब जरूरत होती है, वह सही लाइन और लंबाई में गेंदबाजी करते हैं । वह जल्दी से अपने ओवर पूरे करते हैं । वह 36 साल की उम्र में भी सबसे फिट हैं ।' इस क्रिकेटर ने इंग्लैंड के खिलाफ हाल ही में हुई एंडरसन–तेंदुलकर ट्रॉफी में भले ही अच्छी गेंदबाजी न की हो पर उन्होंनें जबरदस्त बल्लेबाजी से टीम की सहायता की । इस क्रिकेटर ने पांच मैचों की सीरीज में 516 रन बनाए, जिसमें पांच अर्धशतक और एक शतक शामिल है । वह भारतीय टीम के सबसे अच्छे खिलाड़ियों में से एक हैं । उन्होंने अपने करियर में भारतीय टीम के लिए कई शानदार पारियां खेली हैं । मैनचेस्टर टेस्ट में उनकी नाबाद पारी के कारण ही भारतीय टीम हार से बची थी ।

साउथ अफ्रीका की पहले वनडे में धामकेदार जीत, ऑस्ट्रेलिया को 98 रनों से मिली

केर्न्स (एजेंसी)। ऑस्ट्रेलिया ने साउथ अफ्रीका के खिलाफ मंगलवार को लगभग जीता हुआ मैच गंवा दिया। ऑस्ट्रेलियाने 297 के लक्ष्य का पीछा करते हुए शानदार शुरुआत की। ऑस्ट्रेलिया ने बिना कोई विकेट गंवाए, सिर्फ 7 ओवर में ही 60 रन ठोक दिए थे। लेकिन इसके बाद 29 न के भीतर ही ऑस्ट्रेलिया ने एक के बाद एक 6 विकेट गंवा दिए और वो 98रनों से मैच हार गई।

बता दें कि, तीन मैचों की वनडे सीरीज का पहला मैच ऑस्ट्रेलिया और साउथ अफ्रीका के बीच पहला वनडे खेला गया। वहीं टॉस जीतकर ऑस्ट्रेलिया ने पहले गेंदबाजी की। इस दौरान साउथ अफ्रीका के ओपनर एडन मार्करम और रायन रिकल्टन ने टीम को शानदार शुरुआत दिलाई।

मार्करम और रिकल्टन ने मिलकर पहले विकेट के लिए 92 रनों की साझेदारी की। रिकल्टन इसके बाद 33 रन बनाकर आउट हुए। मार्करम ने शानदार अर्धशतक जड़ा। मार्करम ने 9 चौकों की मदद से 81 गेंदो में 82 रन बनाए। इसके बाद कप्तान टेंबा बावुमा और मैथ्यू ब्रीत्जके ने भी अर्धशतक जड़ा।

ब्रीत्जके ने 56 गेंदों ने 7 चौकों और एक छक्के की मदद से 57 रन बनाए। वहीं कप्तान बावुमा ने 5 चौकों की मदद से 74 गेंदों में 65 रन बनाए। जिसकी बदौलत साउथ अफ्रीका ने 50 ओवरो में 8 विकेट खोकर 296 रन बनाए। ट्रेविस हेड ने ऑस्ट्रेलिया के लिए सबसे ज्यादा चार विकेट लिए।

297 रनों के लक्ष्य का पीछा करने उतरी ऑस्ट्रेलिया टीम की शुरुआत शानदार रही। पहले विकेट के लिए ट्रेविस हेड और मिचेल मार्श ने 60 रन जोड़े। जिसके बाद लग रहा था कि ऑस्ट्रेलिया ये मैच आसान से जीत सकती है। क्योंकि उसके पास मार्नस लाबुशेन, कैमरन ग्रीन, जोश इंग्लिश और एलेक्स कैरी जैसे खतरनाक बल्लेबाज बचे हुए थे।

लेकिन साउथ अफ्रीका के लेफ्ट ऑर्म स्पिनर केशव महाराज ने मैच का रुख ही पलट दिया। पहला विकेट हेड का 60 के स्कोर पर गिरा। हेड को प्रेनेलन सुब्रायन ने आउट किया। इसके बाद ऑस्ट्रेलिया ने 5 विकेट खोए। सभी विकेट केशव महाराज ने लिए। महाराज ने लाबुशेन, ग्रीन, इंग्लिश, कैरी और आरोन हार्डी का विकेट चटकाकर पंजा खोला। एक समय ऑस्ट्रेलिया का स्कोर बिना किसी विकेट के 60 रन था। वो अब 6 विकेट पर 89 रन हो गया। इसके बाद ही ऑस्ट्रेलिया ने मैच गंवा दिया। वो 198 रन ही ऑलआउट हो गए। ऑस्ट्रेलिया ये मैच 98 रनों से हार गया।

रबाडा ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ एकदिवसीय सीरीज से बाहर हुए

केर्न्स । दक्षिण अफ्रीका के तेज गेंदबाज कगिसो रबाडा चोटिल होने के कारण ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ तीन मैचों की एकदिवसीय सीरीज से बाहर हो गये हैं । रबाडा जैसे गेंदबाज का बाहर होना अफ्रीकी टीम के लिए एक बड़ा झटका माना जा रहा है । रबाडा के दाहिने टखने में सूजन है और स्कैन जांच में उनकी चोट गंभीर होना पाया गया है । क्रिकेट दक्षिण अफ्रीका ने कहा, अब रबाडा ऑस्ट्रेलिया में ही रहेंगे और दक्षिण अफ्रीकी मेडिकल स्टाफ की देखरेख में चोट से उबरकर फिटनेस हासिल करने के प्रयास करेंगे । रबाडा के बाहर होने के बाद उनकी जगह बाएं हाथ के युवा तेज गेंदबाज क्वेल मफाका को टीम में शामिल किय गया है । मफाका ने हाल में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ हुई तीन टी20 मैचों की सीरीज में अच्छा प्रदर्शन किया था । इस युवा गेंदबाज ने 9 विकेट लिए थे । इसी प्रदर्शन के आधार पर उन्हें रबाडा के विकल्प के रूप में टीम में शामिल किया गया है । वह पहले एकदिवसीय में शामिल नहीं रहेंगे । मफाका ने अब तक 2 एकदिवसीय मैचों में 5 विकेट लिए हैं । वहीं रबाडा के बाहर होन से मेहमान अफ्रीकी टीम को नुकसान होगा क्योंकि रबाडा एक मैच विजेता गेंदबाज हैं। विश्व टेस्ट चैंपियनशिप के फाइनल में भी अपनी टीम की जीत में उनकी अहम भूमिका थी । 106 एकदिवसीय में इस गेंदबाज ने अबतक 168 विकेट लिए हैं । दक्षिण अफ्रीकी टीम को ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टी20 सीरीज में 1–2 से हार का सामना करना पड़ा था, ऐसे में अब उसका लक्ष्य इस सीरीज को जीतकर लय हासिल करना रहेगा ।

ऑस्ट्रेलिया का लक्ष्य विश्व कप जीतना रहेगा : हीली

सिडनी । ऑस्ट्रेलियाई महिला क्रिकेट टीम की अनुभवी खिलाड़ी एलिसा हीली ने माना है कि उनकी टीम का लक्ष्य रिकॉर्ड आठवीं बार विश्व कप जीतना रहेगा । हीली हालांकि जानती हैं कि ये आसान नहीं होगा क्योंकि उनकी टीम को भारतीय उपमहाद्वीप में अलग हालातों के साथ ही स्पिनरों से भी जूझना होगा । महिला विश्व कप का आयोजन अगले महीने भारत और श्रीलंका में किया जा रहा है । वहीं हीली का कहना है कि उनकी टीम इस बार भी बेहतर प्रदर्शन कर अपने खिताब को बरकारार रखना चाहेगी । हीली ने हाल ही में भारत ए के खिलाफ ऑस्ट्रेलिया ए का प्रतिनिधित्व करते हुए तीन मैचों की सीरीज के अंतिम मैच में नाबाद 137 रन की आक्रामक पारी खेली भी जिससे भी उनका मनोबल विश्वकप के लिए बढ़ा हुआ है । वह हालांकि ऑस्ट्रेलिया ए को जीत नहीं दिला पायी पर जिस प्रकार से हीली ने सलामी बल्लेबाज के तौर पर उतरते हुए सबसे ज्यादा रन बनाये उससे उनके हौंसले बुलंद हैं । हीली ने सीरीज के दूसरे मैच में भी अर्धशतकीय पारी खेली थी । इस दौरान उन्होंनें अनुभवी स्पिनरों का काफी आत्मविश्वास के साथ सामना किया था । हीली ने कहा, ''भारत ए की इस की टीम में काफी स्पिनर हैं । हमें इस सीरीज का लाभ विश्व कप में मिलेगा क्योंकि तब भी वहां काफी स्पिनर रहेंगे ।''

एशिया कप 2025: क्रिकेट फैंस हुए हैरान, बाहर हुए 3 बड़े धुरंधर, बीसीसीआई पर उठे सवाल

नई दिल्ली (एजेंसी)। एशिया कप 2025 के लिए भारतीय क्रिकेट टीम का ऐलान कर दिया गया है। चीफ सेलेक्टर अजीत अगरकर और टी20 कप्तान सूर्यकुमार यादव ने उन 15 खिलाड़ियों के नामों का खुलासा किया, जो यूएई में होने वाले इस प्रतिष्ठित टूर्नामेंट में भारत का प्रतिनिधित्व करेंगे। लेकिन इस टीम में कुछ बड़े नामों की गैरमौजूदगी ने क्रिकेट प्रेमियों को हैरान कर दिया है। खासतौर पर श्रेयस अय्यर, यशस्वी जायसवाल और मोहम्मद सिराज को टीम में जगह नहीं मिली।

श्रेयस अय्यर का बाहर, बीसीसीआई पर उठे सवाल

चीफ सेलेक्टर अजीत अगरकर ने प्रेस कॉन्फ्रेंस में श्रेयस अय्यर का नाम लेकर कहा कि उनका टीम में न चुना जाना न उनकी गलती है, न सेलेक्टर्स की। उन्होंने साफ किया कि श्रेयस की टीम में जगह न बनने के पीछे कोई विवाद या असमंजस नहीं है। हालांकि, यह निर्णय फैंस के लिए एक बड़ा आश्चर्य रहा क्योंकि अय्यर का आईपीएल और चैंपियंस ट्रॉफी में प्रदर्शन अच्छा रहा था। अंतरराष्ट्रीय टी20 में श्रेयस ने 51 मैचों में 1104 रन बनाए हैं, जिनमें 8 अर्धशतक शामिल हैं।

यशस्वी जायसवाल भी स्कॉड से बाहर

टीम में शामिल न होने वाले दूसरे बड़े नाम यशस्वी जायसवाल का है। विस्फोटक बल्लेबाज के तौर पर पहचाने जाने वाले जायसवाल ने 23 टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में 164.31 की स्ट्राइक रेट से 723 रन बनाए हैं। बावजूद इसके सिलेक्टर्स ने उन्हें इस बार टीम में जगह नहीं दी।

मोहम्मद सिराज का भी चयन नहीं

इंग्लैंड दौरे पर अपनी घातक गेंदबाजी से सभी को प्रभावित करने वाले मोहम्मद सिराज को भी एशिया कप टीम में शामिल नहीं किया गया है। जसप्रीत बुमराह की गैरमौजूदगी में सिराज ने शानदार प्रदर्शन किया था, लेकिन इस बार टी20 टीम में उन्हें मौका नहीं मिला। सिराज के चयन से वंचित रहने पर सोशल मीडिया पर फैंस ने सवाल उठाए हैं। सिराज ने अपने अंतरराष्ट्रीय टी20 करियर में 16 मैचों में 14 विकेट हासिल किए हैं।

एशिया कप 2025 के लिए टीम इंडिया

सूर्यकुमार यादव (कप्तान), शुभमन गिल (उप-कप्तान), अभिषेक शर्मा, तिलक वर्मा, हार्दिक पंड्या, शिवम दुबे, अक्षर पटेल, जितेश शर्मा, जसप्रीत बुमराह, वरुण चक्रवर्ती, अर्शदीप सिंह, कुलदीप यादव, संजू सैमसन, हर्षित राणा, रिंकू सिंह

स्वियाटेक ने पाओलिनी को हराकर पहली बार जीता सिनसिनाटी ओपन का खिताब

सिनसिनाटी (संयुक्त राज्य अमेरिका)। पोलैंड की तीसरी वरीयता प्राप्त खिलाड़ी इगा स्वियाटेक ने सोमवार को जैस्मीन पाओलिनी को 7–5, 6–4 से हराकर अपना पहला सिनसिनाटी ओपन खिताब जीता। इस खिताबी जीत से अमेरिकी ओपन से पहले स्वियाटेक ने अपने प्रतिद्वंद्वी खिलाड़ियों को एक शक्तिशाली संदेश भेजा है । छह बार की ग्रैंड स्लैम विजेता स्वियाटेक ने खिताब तक पहुंचने के दौरान एक भी सेट नहीं गंवाया और फाइनल में शानदार प्रदर्शन किया । उन्होंने अपने सभी छह ब्रेक पॉइंट्स को भुनाकर अपना 11वां डब्ल्यूटीए 1000 खिताब जीता और पिछले साल के इटैलियन ओपन के बाद यह उनका पहला ख़िताब था । वह अब डब्ल्यूटीए 1000 फ़ॉर्मेट के इतिहास में दूसरी सर्वकालिक विजेता हैं । वह केवल सेरेना विलियम्स (23) से पीछे हैं । खिताबी जीत के बाद स्वियाटेक ने कहा, मैं अपनी टीम का शुक्रिया अदा करना चाहती हूं । मुझे नहीं पता कि मैंने ऐसे टूर्नामेंट क्यों जीते, जो पिछले टूर्नामेंटों जैसे थे, जहां मुझे लगा था कि मैं अच्छा खेलूंगी । मुझे एक बेहतर खिलाड़ी बनने और इन तेज सतहों पर खेलना सीखने के लिए प्रेरित करने के लिए धन्यवाद । मैं हैरान और बेहद खुश हूं । मैच में पाओलिनी ने शानदार शुरुआत की और 3–0 की बढ़त बना ली ।

दबंग इंडिया हिंदी दैनिक : स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक अनुराग गुप्ता द्वारा चन्देल स्टेशनर्स एण्ड सप्लायर्स 44, प्रगति नगर, कैनाल रोड, हरदोई से मुद्रित एवं 72/4, सदर बाजार, पाली, हरदोई - 241123 (उ.प्र.) से प्रकाशित.
संपादक अनुराग गुप्ता मो0 - 9260949922, 7398625167 Email - editor.dabangindia@gmail.com, समाचार पत्र से सम्बंधित समस्त विवादों का न्याय क्षेत्र हरदोई न्यायालय होगा. RNI No - UPHIN/2023/89254

CMYK CMYK CMYK CMYK